की ओर और पूर्वी कोना मध्य हिन्दुस्तान में ग्वालियर रियासत की ओर है। राजपूताने के उत्तर में भावलपुर रियासत और पन्जाब, पूर्व में संयुक्त प्रान्त और मध्य हिन्दुस्तान, दक्षिण में कच्छ की खाडी, गुजरात और मालवा और
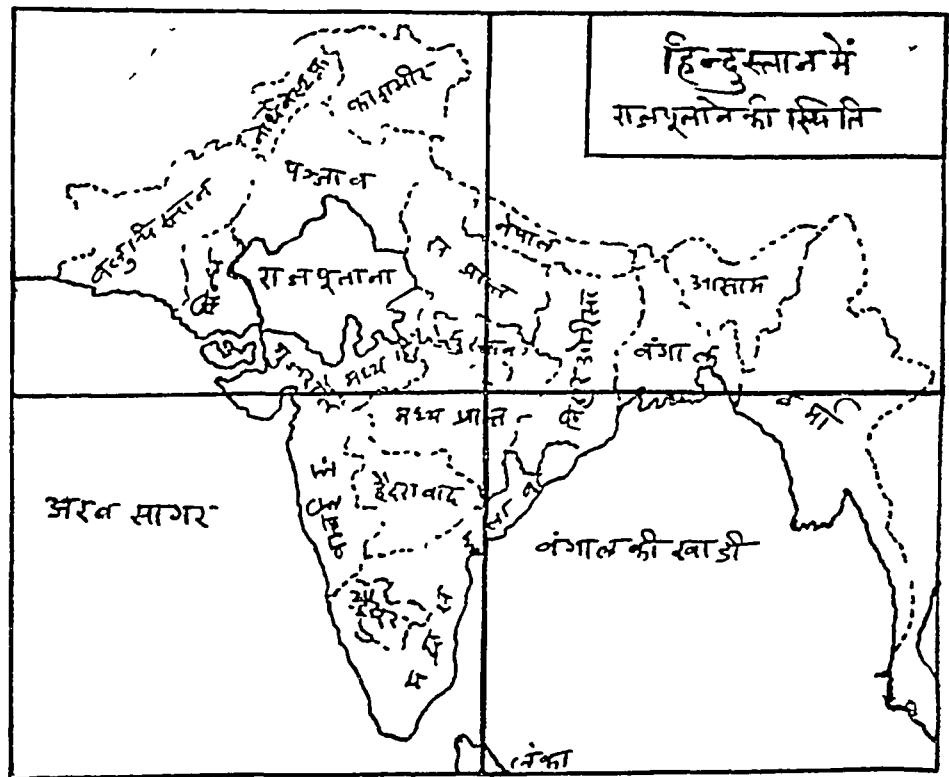
पश्चिम में सिन्ध प्रान्त हैं। पन्जाबी, आगरेवाले, गुजराती, सिन्धी, मालवी अपने पडोसी हैं। क्या तुमने कभी इन लोगों को अपने शहर मे या अन्य जगह देखा है ?

पुराने समय में यानी लगभग ८००-९०० वर्ष के पहिले राजपूत

। राजा उत्तरी हिन्दुस्तान में राज्य करते थे। उस समय राजपूताने में वहुत ही कम आवादी थी। वे आदि निवासी भील, मेने थे। अब भी हिन्दुस्तान
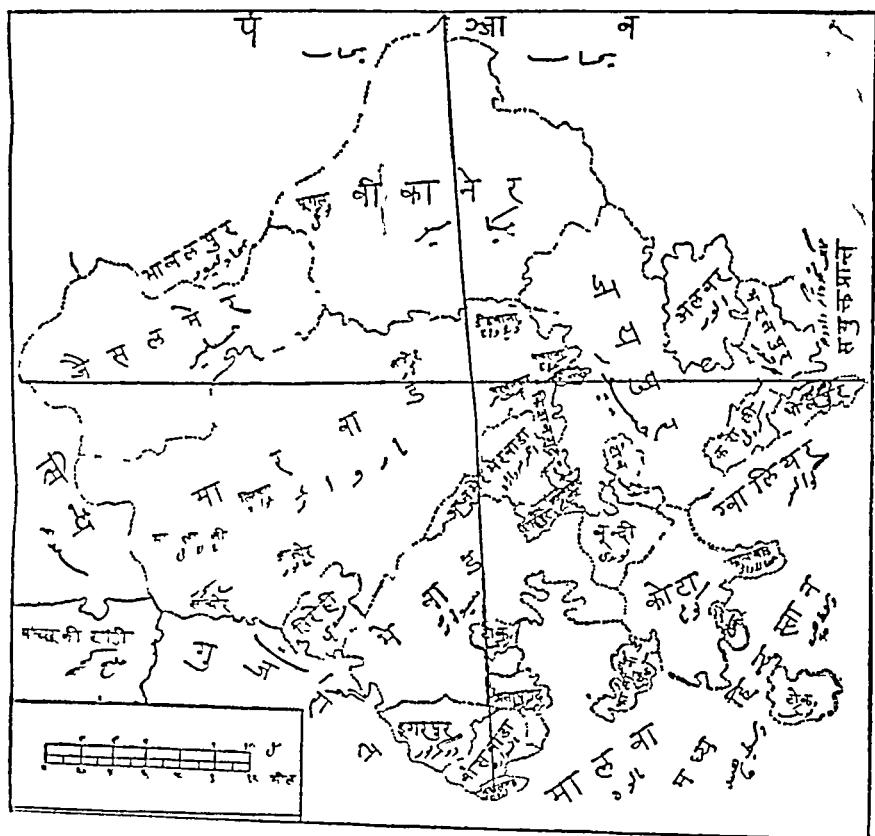
नकशा न० १

के अन्य प्रान्तो की अपेक्षा राजपूताने में वहुत कम आवादी है। जब मुसलमानो ने उत्तरी हिन्दुस्तान के राजपूत राजाओं पर हमला किया तब उनसे बचने के लिये वे राजपूत राजा इस ऊजड भूमि पर आए और उन्होंने अपने अपने राज्य और राजधानियाँ स्थापित कीं। इसलिये हिन्दुस्तान का यह भाग

राजपूताना कहलाया, राजपूताने में कई राजपूत रियासतें हैं और बीचोबीच एक छोटा हिस्सा अंगरेज़ी प्रान्त है जिसे अजमेर मेरवाडा कहते हैं।

प्रश्न

१—राजपूताना कौन से बडे देश में स्थित है और किस दिशा में ?

२—राजपूताने के पडोसी कौन से प्रान्त हैं ? अपनी कक्षा में खडे होकर हाथ के सकेत द्वारा उनकी दिशा बतलाओ।

३—तुम्हारा प्रान्त राजपूताना क्यो कहलाया ?

अभ्यास

१—नकशा नम्बर १ में पूर्वी कोने से पश्चिमी कोने तक तथा दक्षिणी कोने से उत्तरी कोने तक दो रेखाएँ खीची हुई है। नकशे में पैमाना भी दिया हुआ है। इन दोनो रेखाओ को नापो और बताओ कि राजपूताना पूर्व-पश्चिम तथा दक्षिण-उत्तर कितना लबा है।

२—यदि तुम प्रति दिन २० मील सफर करो तो राजपूताने के पश्चिमी कोने से ठीक पूर्वी कोने तक कितने दिनो में पहुँचोगे ?

उसी प्रकार दक्षिणी कोने से उत्तरी कोने तक कितने दिनो में पहुँचोगे ?

३—दूसरे अभ्यास में दी हुई यात्रा में पश्चिम से पूर्व तक तथा दक्षिण से उत्तर तक कौन कौन सी रियासतो में होकर तुम्हें जाना होगा यह नम्बर १ के नकशे में देखकर बताओ।

४ *—सिन्धी, पञ्जाबी, गुजराती, आगरेवाले वगैरह लोगो के (स्त्री, पुरुपो के) चित्र जितने तुम्हे मिलें उन्हें इकट्ठा करो और उनको गोर से देखो। उनकी पोशाक कैसी है, सिर पर ओढने की पगडी, साफा या टोपी कैसी है इत्यादि बातो पर ध्यान दो और यह बताओ कि तुम्हारी पोशाक उनकी पोशाक से किस प्रकार भिन्न है। इकट्ठे किये हुए चित्रो को अपने चित्रमय भूगोल में चिपका दो और ऊपर लिखो "हमारे पड़ोसी"।

* अध्यापक हिन्दुस्तान के अन्य प्रान्तीय लोगो के चित्र इस सिलसिले में छात्रो को बतावें और उन पर तुलनात्मक प्रश्न पूछें।

दूसरा अध्याय

राजपूताने की प्राकृतिक दशा

क्या तुम्हारे शहर के या गॉव के आस-पास सब जगह भूमि सम-चौरस है ? नहीं, वह सब जगह एक सी नहीं होगी । कहीं नीची होगी, कही ऊँची होगी, कहीं वर्षा का पानी जमा होकर तलाई बनती होगी, और आस-पास कोई टेकडी या पहाडी भी होगी । इसी प्रकार राजपूताना भी सब जगह एक सा ऊँचा-नीचा नहीं है । **भूमि को कुदरती बनावट के वर्णन को प्राकृतिक दशा कहते हैं ।**

पृष्ठ ६ पर नकशा नम्बर २ और पृष्ठ ७ पर राजपूताने का उभरा हुआ नकशा ध्यान पूर्वक देखो । तुमको सरसरी तौर से राजपूताने के तीन भाग नजर आवेंगे ।

१—बीच में एक पहाड जिसे **अरवली या आडावाला** कहते हैं ।

२—अरवली पहाड का **पश्चिमी** भाग जो अधिकतर मैदान है ।

३—अरवली पहाड का **पूर्वी** हिस्सा जो पश्चिमी भाग की तरह मैदान नहीं है किन्तु पहाडी और पथरीला है । इसमें यह एक विशेषता है कि उसमें चोटीदार पहाडियां कम हैं और उसका अधिकतर हिस्सा चबूतरे की तरह समचौरस काला है । ऐसे भाग को **पठार** कहते हैं ।

मध्य का अरवली पहाड़—अरवली पहाड दक्षिण में आबू की चोटी से लगाकर उत्तर-पूर्व की ओर लगभग देहली तक चला गया है। आबू से अजमेर तक अरवली पहाड़ ऊँचा, चौडा और अटूट है। इस पहाड की औसत ऊँचाई, लगभग ३००० फीट है। कुछ चोटियाँ ३००० फीट से अधिक ऊँची हैं जिनमें सब से ऊँची चोटी दक्षिण में आबू पहाड में है जिसे गुरुशिखर
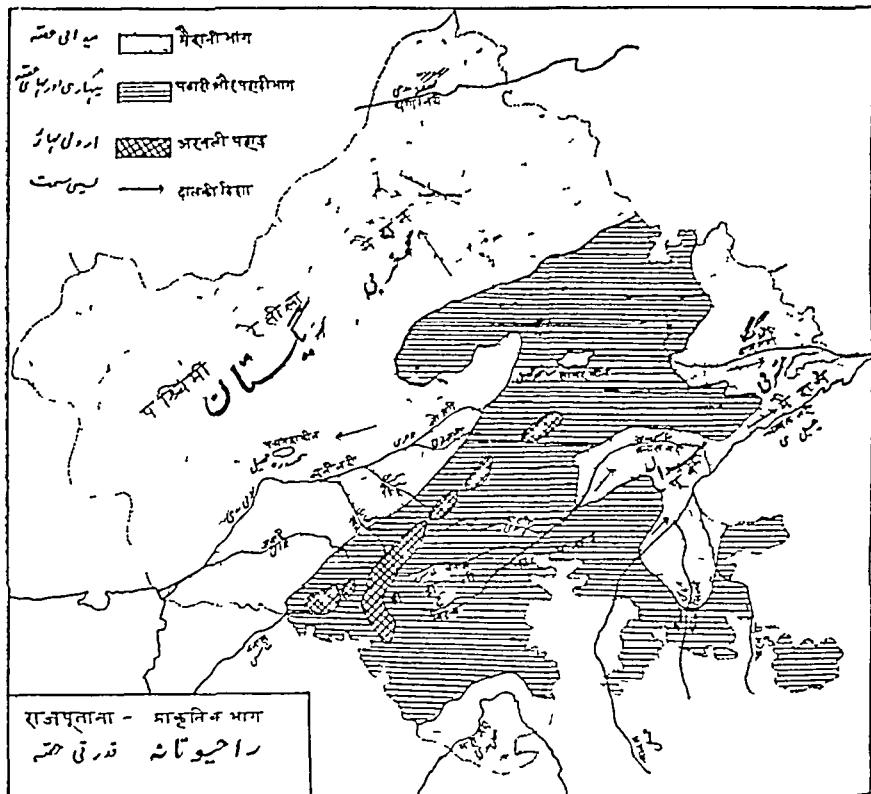
नकशा न० २

कहते हैं। वह समुद्र तट से ५६५० फीट ऊँची है। इस पहाड पर कहीं कहीं

दर्रे भी हैं जिनसे एक ओर से दूसरी ओर जा सकते हैं। इस हिस्से में वर्षा अच्छी होने के कारण नदी, नाले और झरने बहुत से हैं। पेड़ पौधों से भी हरा-भरा दिखाई देता है। वर्षा होने पर पूर्वी और पश्चिमी ढालों की नदियाँ
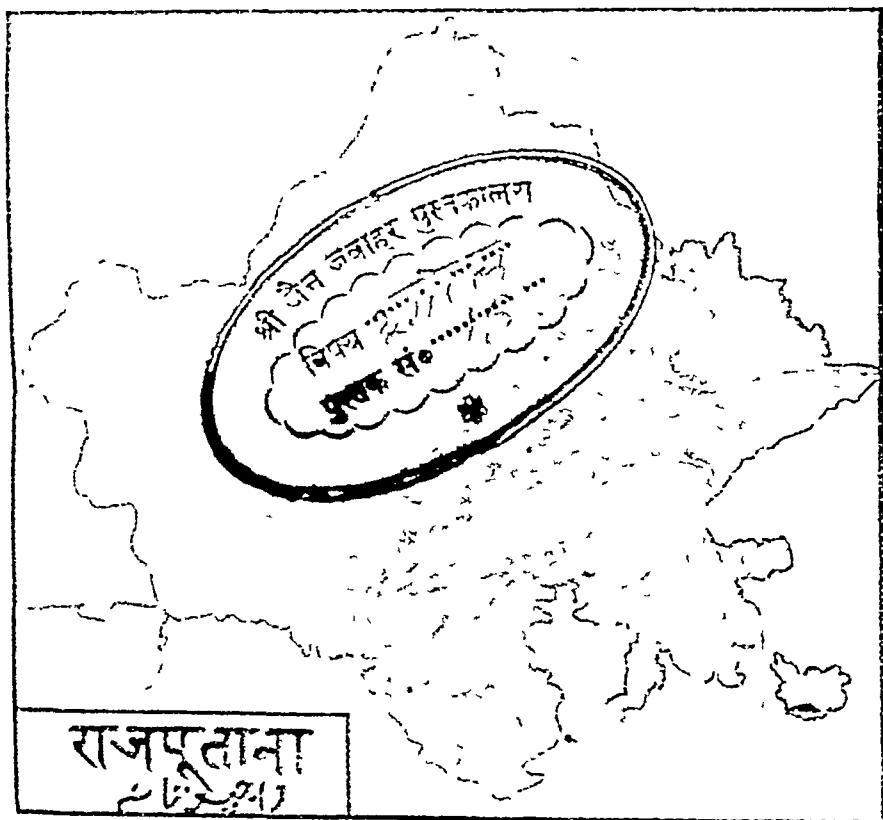
राजपूताने का उभरा हुआ नकशा

(Drawn by Kanu Ram, Class VIII, D H School)

भर जाती हैं परन्तु उनमें से बहुत सी वर्षा के बाद कुछ समय में सूख जाती

हैं। अरवली के पूर्वी ढाल की मुख्य नदी **पूर्वी बनास** है जो चम्बल नदी में जा मिलती है और जिसकी मुख्य सहायक नदियाँ **खिड़च** और **कोटरी** हैं। पश्चिमी ढाल पर **लूनी** और उसकी सहायक नदियाँ इसी पहाड़ से निकली हैं। दक्षिण की ओर **माही** और **पश्चिमी बनास** नदियाँ हैं। पश्चिमी बनास अरवली पहाड़ से ही निकलती है। लूनी, पश्चिमी बनास और माही कच्छ की खाड़ी में जा गिरती हैं।

अजमेर से उत्तर की ओर अरवली पहाड का सिलसिला कई जगह टूटा हुआ है। वह इतना ऊँचा और चौडा भी नहीं है, जितना अजमेर से दक्षिणी भाग में है। इस उत्तरी भाग में दो दो या तीन तीन मील की दूरी पर पहाडी टीले से बने हुए हैं। जिनके बीच में रेतीले मैदान आ गये हैं। इस हिस्से में वर्षा साधारण ही होती है और वह भी पूर्व की ओर। **बानगंगा** नदी पूर्व की ओर बहती हुई संयुक्त प्रान्त में जाकर यमुना नदी में जा गिरती है। पश्चिम की ओर वर्षा की कमी के कारण कोई खास नदी नही है।

पश्चिमी मैदान—यह अरवली ढाल के पश्चिम भाग से शुरू होकर पश्चिम की ओर सिन्ध तक और उत्तर की ओर भावलपुर तक चला गया है। राजपूताने का आधे से अधिक हिस्सा इस भाग में है। इस भाग मे वर्षा के अभाव के कारण मीलों तक रेत ही रेत दिखाई देती है। बीच बीच में कई जगह रेत के बड़े बड़े टीबे होते हैं जो एक जगह से दूसरी जगह हवा के ज़ोर से चले जाते हैं (नकशा नम्बर ६; पृष्ठ नं० ३५ देखो) जैसलमेर और जोधपुर के पास तीन-चार सौ फीट ऊँची पहाडियाँ भी हैं। इस भाग के पूर्वी हिस्से में लूनी और उसकी सहायक नदियाँ बहती हैं। मारवाड, बीकानेर और

जैसलमेर इस भाग की मुख्य रियासतें हैं। सिरोही और जयपुर का थोड़ा सा हिस्सा भी इस भाग में स्थित है।

अरवली पहाड़ का पूर्वी भाग—यह भाग दक्षिण-पूर्व की ओर मालवा के पठार तक तथा उत्तर-पूर्व की ओर गंगा और जमना नदियों के मैदान तक चला गया है। यह पश्चिमी भाग की तरह रेतीला मैदान नहीं है। किन्तु दक्षिण-पूर्व की ओर पथरीला और पठारी है, जिसे **हाडोती का पठार** कहते हैं। इस भाग में **चम्बल** नदी और उसकी सहायक नदियाँ बहती हैं। चम्बल नदी मालवा से निकलता है और संयुक्त प्रान्त में जाकर जमना नदी में गिरती है। चम्बल नदी की सहायक नदियों में मुख्य **बनास, काली सिन्ध** और **पार्वती** हैं। **काली सिन्ध** और **पार्वती** मालवा से निकल कर चम्बल नदी में दाहिने किनारे पर मिलती हैं और **बनास** अरवली पहाड़ के पूर्वी ढाल से निकल कर चम्बल में बाएँ किनारे जा मिलती है। इस दक्षिणी-पूर्वी भाग में झालावाड, बूँदी, कोटा रियासतें स्थित हैं और टोंक रियासत का भी कुछ हिस्सा इस भाग में पडता है। हाडोती पठार का उत्तरी पूर्व भाग गंगा और जमना के मैदान की तरह समचौरस नहीं है किन्तु जगह जगह पहाडी है। उत्तर की ओर पहाड और पहाडियाँ कम होती जाती हैं और आगे चल कर यह गंगा और जमना के मैदान से मिल गया है। इस भाग में बहने वाली मुख्य नदियाँ **चम्बल, बनास** और **बानगंगा** हैं। इन नदियों के बहाव से तुम मालूम कर सकते हो कि जमीन का ढाल किस दिशा में है।

झीलें—राजपूताने में मीठे पानी की कोई प्राकृतिक (कुदरती)

हैं। अरवली के पूर्वी ढाल की मुख्य नदी **पूर्वी बनास** है जो चम्बल नदी में जा मिलती है और जिसकी मुख्य सहायक नदियाँ **बिडंच** और **कोठरी** हैं। पश्चिमी ढाल पर **लूनी** और उसकी सहायक नदियाँ इसी पहाड से निकली हैं। दक्षिण की ओर **माही** और **पश्चिमी बनास** नदियाँ हैं। पश्चिमी बनास अरवली पहाड़ से ही निकलती है। लूनी, पश्चिमी बनास और माही कच्छ की खाडी में जा गिरती हैं।

अजमेर से उत्तर की ओर अरवली पहाड का सिलसिला कई जगह टूटा हुआ है। वह इतना ऊँचा और चौड़ा भी नहीं है, जितना अजमेर से दक्षिणी भाग में है। इस उत्तरी भाग में दो दो या तीन तीन मील की दूरी पर पहाडी टीले से बने हुए हैं। जिनके बीच में रेतीले मैदान आ गये हैं। इस हिस्से में वर्षा साधारण ही होती है और वह भी पूर्व की ओर। **बानगंगा** नदी पूर्व की ओर बहती हुई संयुक्त प्रान्त में जाकर यमुना नदी में जा गिरती है। पश्चिम की ओर वर्षा की कमी के कारण कोई खास नदी नहीं है।

पश्चिमी मैदान—यह अरवली ढाल के पश्चिम भाग से शुरू होकर पश्चिम की ओर सिन्ध तक और उत्तर की ओर भावलपुर तक चला गया है। राजपूताने का आधे से अधिक हिस्सा इस भाग में है। इस भाग मे वर्षा के अभाव के कारण मीलों तक रेत ही रेत दिखाई देती है। बीच बीच में कई जगह रेत के बड़े बड़े टीबे होते हैं जो एक जगह से दूसरी जगह हवा के ज़ोर से चले जाते हैं (नकशा नम्बर ६, पृष्ठ नं० ३५ देखो) जैसलमेर और जोधपुर के पास तीन-चार सौ फीट ऊँची पहाड़ियाँ भी हैं। इस भाग के पूर्वी हिस्से में लूनी और उसकी सहायक नदियाँ बहती हैं। मारवाड, बीकानेर और

जैसलमेर इस भाग की मुख्य रियासतें हैं। सिरोही और जयपुर का थोडा सा हिस्सा भी इस भाग में स्थित है।

अरवली पहाड़ का पूर्वी भाग—यह भाग दक्षिण-पूर्व की ओर मालवा के पठार तक तथा उत्तर-पूर्व की ओर गंगा और जमना नदियों के मैदान तक चला गया है। यह पश्चिमी भाग की तरह रेतीला मैदान नहीं है। किन्तु दक्षिण-पूर्व की ओर पथरीला और पठारी है, जिसे **हाडोती का पठार** कहते हैं। इस भाग मे **चम्बल** नदी और उसकी सहायक नदियाँ बहती हैं। चम्बल नदी मालवा से निकलता है और संयुक्त प्रान्त में जाकर जमना नदी में गिरती है। चम्बल नदी की सहायक नदियों में मुख्य **बनास, काली सिन्ध** और **पार्वती** है। **काली सिन्ध** और **पार्वती** मालवा से निकल कर चम्बल नदी में दाहिने किनारे पर मिलती हैं और **बनास** अरवली पहाड़ के पूर्वी ढाल से निकल कर चम्बल में बाएँ किनारे जा मिलती है। इस दक्षिणी-पूर्वी भाग में झालावाड़, बूँदी, कोटा रियासतें स्थित हैं और टोंक रियासत का भी कुछ हिस्सा इस भाग में पडता है। हाडोती पठार का उत्तरी पूर्व भाग गंगा और जमना के मैदान की तरह समचौरस नहीं है किन्तु जगह जगह पहाडी है। उत्तर की ओर पहाड और पहाडियाँ कम होती जाती हैं और आगे चल कर यह गंगा और जमना के मैदान से मिल गया है। इस भाग में बहने वाली मुख्य नदियाँ **चम्बल, बनास** और **बानगंगा** हैं। इन नदियों के बहाव से तुम मालूम कर सकते हो कि जमीन का ढाल किस दिशा में है।

झीलें—राजपूताने में मीठे पानी की कोई प्राकृतिक (कुदरती)

वडी झील नहीं है परन्तु कृत्रिम (बनाई हुई) कई हैं जिनमें वर्षा ऋतु में पानी पीने के लिये अथवा खेती के लिये इकट्ठा हो जाता है। कृत्रिम झीलों में मेवाड का जयसमन्द उल्लेख करने के योग्य है जो दो पहाडों के बीच में एक बड़ा बन्ध बाँध कर मनुष्य का बनाया हुआ बहुत बडा तालाब है। इतना बडा कृत्रिम तालाब केवल राजपूताने में ही नही किन्तु दुनिया भर में
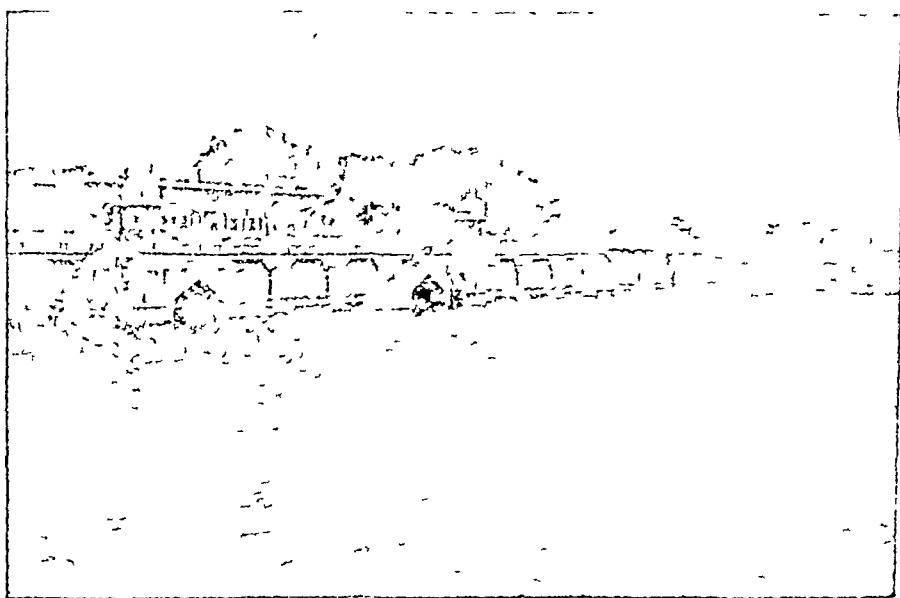
बाल समद, जोधपुर

(Photo by the courtesy of M C Soni)

यह एक वडी कृत्रिम झील है जहाँ से शहर मे नलो द्वारा पानी लाया गया है। झील के बाध पर एक महल बना हुआ है।

कहीं अन्य जगह नहीं है। क्या तुम्हारे गाँव में या शहर मे कोई कृत्रिम झील है?

प्राकृतिक खारे पानी की झीलों में सब से बडी साँभर झील है जो पूरी भर जाने पर लगभग २० मील लम्बी और ५-६ मील चौडी होती है। वह कही भी ४-५ फीट से अधिक गहरी नही है। इस झील से प्रति वर्ष कई मन निमक निकाला जाता है। जोधपुर (मारवाड) और जयपुर रियासतों की सीमा पर यह स्थित है।

प्रश्न

१—राजपूताने के कितने प्राकृतिक भाग बना सकते हो? प्रत्येक भाग का थोडा वर्णन दो।

२—राजपूताने की सबसे बडी नदी कौन सी है? वह कहाँ से निकली है, किस जगह गिरती है और उसमें मिलने वाली मुख्य नदियाँ कौन सी है? साथ में नदी का चित्र भी बनाओ।

३—राजपूताने की (अ) कौन सी नदियाँ नदियों में और (ब) कौन सी समुद्र में गिरती है?

४—राजपूताने के पूर्वी भाग की अपेक्षा पश्चिमी भाग मे नदियाँ कम क्यो है?

५—भरतपुर, अलवर, डुंगरपुर, टोक और करोली रियासते कौन से प्राकृतिक भाग में स्थित है? पृष्ठ ३, नकशा न० १ देख कर उत्तर दो।

अभ्यास

१—नम्बर २ का पतला नकशा लेकर नम्बर १ के नकशे पर बराबर जमा दो, और बताओ कि चम्बल नदी और उसकी सहायक नदियाँ किन किन रियासतो में होकर गुजरती है।

२—दो नम्बर के नकशे को देखो। क्या कोई उसमें ऐसी भी नदी है कि जो किसी समुद्र या नदी में न गिरती हुई भूमि में ही गुप्त हो जाती है? उसका नाम पढो और बताओ कि वह कौन सी रियासत में है। (१ नम्बर के पतले नकशे से काम लो)। क्या तुम कह सकते हो कि वह जमीन में ही क्यो गुप्त हो जाती है?

३* --अपने स्कूल या खेल के मैदान में राजपूताने का खाका खींचो और उसमें पत्थर और रेत की सहायता से प्राकृतिक भाग बना दो। मुख्य नदियों के लिये एक लकड़ी से रेखाएँ खींच दो। (खाके की उत्तर-दक्षिण दिशा ठीक उत्तर-दक्षिण में हो।)

४†* --जिस दिन वर्षा हो जाय अपने स्कूल के आस पास या दूर चले जाओ और निम्नलिखित बातें गौर से देखो--

(अ) पानी एक जगह से दूसरी जगह कैसे बहता है और नदियाँ किस प्रकार बनती हैं।

(ब) पानी भूमि को किस प्रकार काटता है।

(क) पानी रेत और मिट्टी को ले जा कर उनको किस प्रकार जमा करता है।

(ड) गड्ढों में पानी किस प्रकार जमा हो जाता है और झीलें कैसे बनती हैं।

---

* पूरी क्लास को ले जाकर अध्यापक ये अभ्यास करावें।

† नं० ४ में अध्यापक छात्रों से पूछें कि राजपूताने की नदियाँ भी ऐसा ही काम करती होंगी या नहीं।

तीसरा अध्याय

जलवायु—१ (सर्दी-गर्मी)

हम देखते हैं कि साल में कई दिन हम ऊनी गरम कपडे पहिनते हैं, रात को लिहाफ ओढ कर कमरे में सोते हैं। कई दिन बरामदे में अथवा खुली हवा में छतों पर सोते हैं, सूती और पतले कपडे पहिनते हैं। दोपहर के बदले सुबह मदरसे पढने जाते हैं। कभी बादल हो जाते हैं, कभी वर्षा होती है। कभी ठंडी हवा चलती है, कभी गरम, कभी तेज और कभी हलकी। इससे यह ज्ञात होता है कि **हवा हमेशा एकसी गर्म ठंडी, तर और तेज नहीं होती**

हम यह भी देखते हैं कि लोग शिमला, मन्सूरी आदि ठंडा जगह जाकर रहते हैं जब कि हमारे यहाँ कडी गर्मी पड़ती है। और यह भी सुनते हैं कि हमारे शहर या गॉव के नजदीक किसी एक दूसरे गॉव या शहर में बडी जोरों की वर्षा हुई जब कि हम वर्षा के लिये तरस रहे थे। इससे दूसरी यह बात सिद्ध होती है कि **एक ही समय या ऋतु में सब जगह हवा एक सी गर्म, ठंडी या तर नहीं होती।** कहीं ज्यादा गर्मी, कहीं कम और कहीं ठंड पडती है। कहीं ज्यादा वर्षा, कहीं कम और कहीं बिलकुल ही नहीं होती। **जब हम किसी स्थान की सालभर की सर्दी, गर्मी तथा वर्षा (तरी) का वर्णन करते हैं तब उसे वहाँ का जलवायु कहते**

हैं। जिस देश में सालभर में अधिक दिनों तक गर्मी रहे और वर्षा नहीं हो, तो वहाँ का जलवायु गर्म और सूखा कहलाता है। जलवायु सालभर के गर्मी-सर्दी तथा वर्षा पर निर्भर रहता है।

पहिले हम सर्दी गर्मी का विचार करें। हवा सूर्य के कारण गर्म हो जाती है। दिन में हवा गर्म हो जाती है और रात पड़े वह ठंडी होने लगती है। तुम जानते हो कि रोज सवेरे सूर्य पूर्व की ओर निकलता है और आसमान में चढ़कर शाम पड़े पश्चिम की ओर छिप जाता है। ज्यों ज्यों सूर्य आसमान में चढ़ता जाता है त्यों त्यों हवा की गर्मी बढ़ती जाती है और जब सूर्य ढलने लगता है, हवा भी ठंडी होने लगती है। क्या तुमने कभी यह भी देखा है कि सूर्य हमेशा नियत समय पर और पूर्व की ओर नियत स्थान पर नहीं निकलता और शाम को नियत समय पर और नियत स्थान पर नहीं छिपता ? होली के बाद सूर्य रोज थोडा थोडा जल्द निकलता है और शाम को थोडी थोडी देर में छिपता है। जिन दिनों में सूर्य जल्दी निकल कर देर में छिपता है, दिन का समय (दिनमान) बडा होता है और रात छोटी होती है। अर्थात् दिन के २४ घंटों में से १२ घंटों से बडा दिन और १२ घंटो से छोटी रात होती है। २१ जून को सालभर में सब से बडा दिन और सब से छोटी रात होती है। इसके विपरीत सितम्बर महीने के बाद दिन छोटा होता जाता है और रात बडी होती जाती है। २३ दिसम्बर को सब से छोटा दिन और सब से बडी रात होती है।

मार्च से लगाकर सितम्बर तक दिन का समय रात की अपेक्षा बडा

होता है और उस समय सूर्य की किरणें भी अधिक सीधी और तेज होती हैं। सितम्बर से मार्च तक रात का समय दिन से बड़ा होता है और सूर्य की किरणें भी इतनी सीधी और तेज़ नहीं होतीं जितनी मार्च से सितम्बर तक होती हैं। ऐसी दशा में तुम कह सकते हो कि साल के कौन से महीनो में गर्मी की ऋतु होगी और कौन से महीनों में सर्दी की। **हवा की सर्दी-गर्मी दिन के छोटे बड़े होने पर तथा सूर्य की किरणों पर निर्भर होती है।**

दूसरी बात यह है कि जगह जितनी ऊँची होती है उतनी अधिक वह ठंडी होती है, यही कारण है कि आबू पहाड आसपास के मैदान की अपेक्षा अधिक ठंडा है।

हवा की गर्मी जमीन की दशा पर भी निर्भर होती है। रेतीली जमीन दिन मे शीघ्र ही गर्म हो जाती है और हवा को जल्दी गरम कर देती है। और रात पडे रेत जल्दी ठंडी हो जाती है और हवा को भी ठंडी कर देती है। इसी कारण रेतीले मुल्को मे दिन में कडी गर्मी और रात में ठंडक हो जाती है यहाँ तक कि सर्दी की ऋतु में कभी कभी पाला पड जाता है और सूर्य के निकलने पर पिघल जाता है। **दिनरात की लम्बाई, सूर्य की किरणें, जगह की ऊँचाई और जमीन की दशा पर हवा की सर्दी-गर्मी निर्भर होती है।**

अब हम देखें कि राजपूताने में सर्दी-गर्मी का मौसिम किस प्रकार का होता है।

'**गर्मी की ऋतु**—यह लगभग होली के बाद शुरू होती है और करीब

करीब दशहरा दिवाली तक रहता है। इन दिनों में सारे राजपूताने में खूब गर्मी पडती है क्योंकि सब जगह दिन बारह घंटों से अधिक बडा होता है और सूर्य की किरणें भी अधिक सीधी और तेज पडती हैं। परन्तु पूर्व की अपेक्षा पश्चिम की ओर और उत्तरी-पश्चिमी भाग में बहुत कडी गर्मी पडती है। मुल्क रेतीला होने के कारण दिन निकलते ही हवा गर्म होने लगती है और लूएँ चलना शुरू होती हैं। मरुस्थल में कभी कभी रेत के बडे बडे तूफान आते हैं। जिसे **आँधी** या **अंधड़** कहते हैं। रात के समय रेत जल्द ठंडी हो जाती है और उसी के साथ साथ हवा भी काफी ठंडी हो जाती है। यही कारण है कि रेगिस्तान में गर्मियों के दिनों में रातें ठण्डी होती हैं। गर्मी की ऋतु में अरवली पहाड मैदान की अपेक्षा अधिक ठंडा रहता है इसलिये रईस यहाँ गर्मी के दिनों में आकर रहते हैं। राजपूताने के कई राजपूत राजाओं की कोठियाँ आबू पहाड पर बनी हुई हैं। हाडोती का पठार और उसके उत्तर में आया हुआ मैदान और पहाडी हिस्सा इतना गर्म नहीं होता जितना पश्चिमी मरुस्थली मैदान होता है। क्या तुम इसका कारण बता सकते हो?

सर्दी की ऋतु—यह दिवाली से लगाकर होली तक रहती है। इन दिनों में रात बड़ी और दिन छोटा होता है। सूर्य की किरणें भी इतनी सीधी और तेज नहीं होतीं जितनी गर्मियों में। सारे राजपूताने में इस समय ठंड पडती है। पश्चिमी रेतीला मैदान दिन के समय काफी गर्म हो जाता है परन्तु रात मे इतना ठंडा हो जाता है कि कभी कभी पानी जम जाता है। अरवली पहाड भी इन दिनों में बहुत ठंडा हो जाता है। अरवली पहाड का पूर्वी हिस्सा इतना ठंडा नही रहता जितना कि पश्चिमी रेतीला हिस्सा रहता है।

गर्मी-सर्दी के विचार से हम राजपूताने के तीन हिस्से कर सकते हैं—

(१) अरवली पहाड़ जो ऊँचाई के कारण अधिकतर ठंडा रहता है।
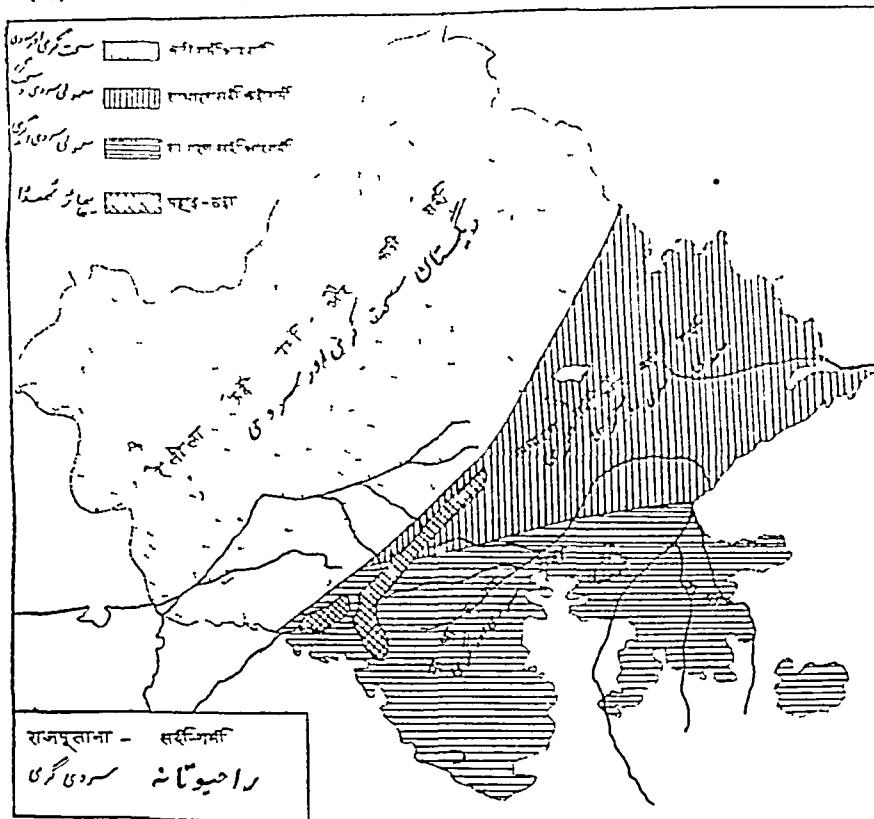
नकशा नं० ३

(२) अरवली पहाड का पश्चिमी हिस्सा जो रेतीला होने के कारण गर्मी की ऋतु मे बहुत गर्म और सर्दी की ऋतु में बहुत ठंडा होता है।

(३) अरवली पहाड का पूर्वी हिस्सा जो न तो गर्मी में इतना गर्म, न सर्दी में इतना ठंडा जितना पश्चिमी भाग रहता है। परन्तु उत्तर की ओर गर्मी कडी पडती है।

अब तुम्हें यह बताना चाहते हैं कि वायु की सर्दी-गर्मी किस प्रकार नापी जाती है। यदि किसी ठंडे देश में रहने वाला मनुष्य साधारण गर्म देश में चला जाय तो वह उस देश को गर्म बतावेगा और यदि उसी समय बहुत गर्म देश वाला मनुष्य भी उसी जगह चला जाय जहाँ ठंडे देश वाला गया था, तो वह दूसरा मनुष्य उस देश को ठंडा बतावेगा। **एक ही जगह एक ही समय पर ठंडी और गर्म दोनों नहीं हो सकती।** यदि हवा की उष्णता की माप मनुष्य के अनुभव तथा अनुमान पर रहे तो वह सही नहीं हो सकती। इस कठिनाई को दूर करने के लिये एक **उष्णता मापक यंत्र** बनाया गया है जिसे **थर्मामीटर** कहते हैं। यह यंत्र हमेशा ठीक माप बताता है।
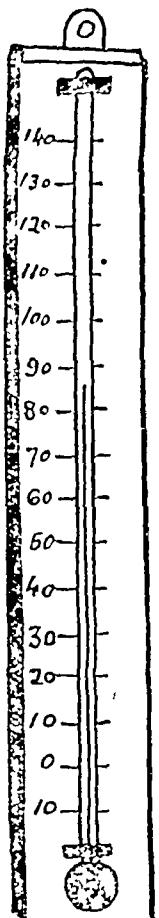
थर्मामीटर एक काँच की बंद नली होती है जिसके एक सिरे पर बुंडी सी बनी हुई होती है। इस बुंडी में तथा नली में पारा भरा रहता है। गर्मी से यह पारा चढ़ने लगता है और ठंडक से वह उतरने लगता है। नली में निशान बने रहते हैं जिससे पारा किस निशान तक पहुँचा यह हम मालूम कर सकते हैं। जब कमरे में पारा ११० अंश तक यानी ११० नम्बर के निशान तक या उससे ऊँचा चला जाय तो हवा बहुत गर्म कहलाती है। यदि पारा ५०-६० अंश तक हो तो हवा सर्द कहलाती है। चित्र में पारा किस निशान तक चढ़ा हुआ दिखाई देता है? वह हवा की कौन सी दशा बताता है?

थर्मामीटर

नीचे दिये हुए नकशे मे देखो। राजपूताने के ८ मुख्य शहरों की साल भर की सर्दी-गर्मी बतलाई हुई है। उदाहरण के लिये जोधपुर लो। जनवरी से लगाकर दिसम्बर तक क्रमशः १२ महीनों के लिये १२ छोटे छोटे थर्मामीटर बनाए हुए है। सब से ठंडा और सब से गर्म महीनों के लिये थर्मामीटर कुछ मोटे बतलाए हुए हैं। नकशे में देखने से साफ विदित होता
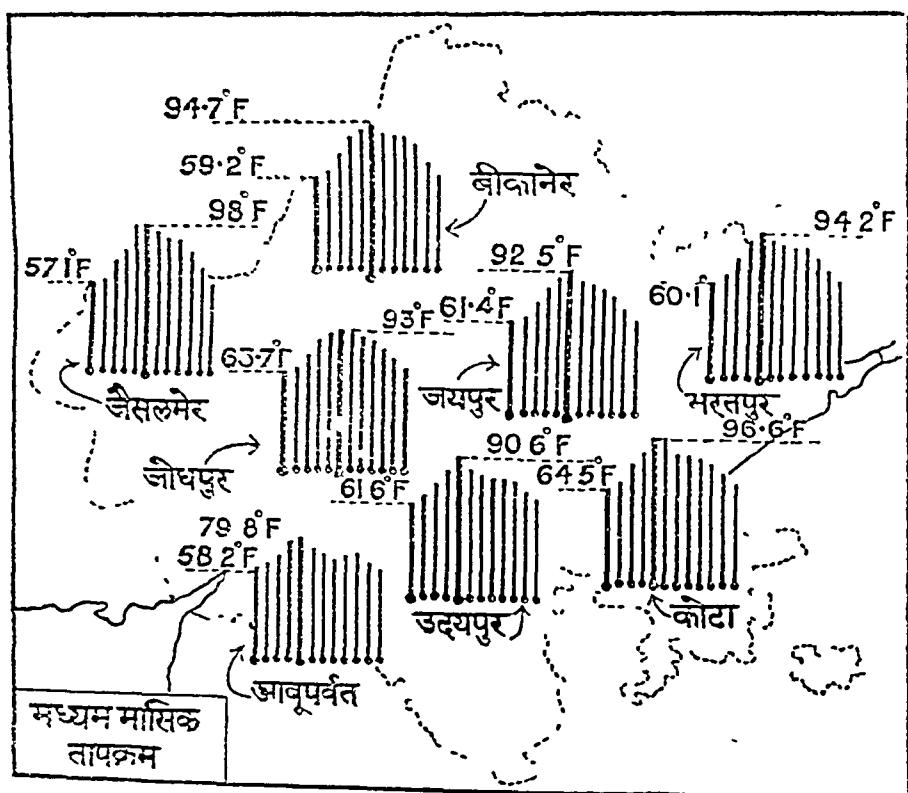
देखो तापक्रम सर्वत्र लगभग एकसा ही मालूम होता है।

है कि पहिला महीना सब से ठंडा है और छाठा महीना सब से गर्म है

यानी जनवरी का महीना सबसे ठंडा और जून का महीना सब से गर्म होता है। इसी प्रकार तुम देख सकते हो कि किस शहर में कौनसा महीना सबसे ठंडा होता है और कौनसा सबसे गर्म। जोधपुर में जून के महीने में तापक्रम ९३ बतलाया हुआ है। इसका मतलब यह नहीं कि सारे महीने भर रात और दिन हवा का तापक्रम ९३° बना रहे। किन्तु उसका अर्थ यह है कि साधारणतः सारे महीने भर के लिये दिन और रात के तापक्रम का मध्यम ९३° है। जून के महीने में जोधपुर में प्रायः दिन के समय हवा का तापक्रम १०५ के आस पास होता है और रात के समय ८१° के आस पास होता है। १०५° और ८१° का मध्यम ($\frac{१०५+८१}{२}$)=९३° होता है। इसी प्रकार नकशे में सारे महीनों के लिये मध्यम तापक्रम बतलाये हुये हैं। जिस समय मध्यम तापक्रम ९०° अथवा उससे अधिक होता है उस समय दिन में कड़ी गर्मी मालूम होती है।

प्रश्न

१—जलवायु किसे कहते हैं? गर्म और तर जलवायु से तुम क्या समझते हो?

२—किसी जगह साल भर के लिये हवा एक सी गर्म या ठंडी क्यों नहीं रहती?

३—एक ही ऋतु में सब जगह एक सी गर्मी या सर्दी क्यों नहीं होती?

४—गर्मियों में लोग पहाड़ी शहरों में जाकर क्यों रहते हैं?

५—कौन से महीनों में दिन बड़े और रातें छोटी होती हैं?

६—सबसे बड़ा दिन कब होता है और सब से बड़ी रात कब होती है?

७—सर्दी की ऋतु कौन से महीनों में होती है। उन दिनों में दिनमान छोटा होता है या बड़ा?

८—गर्मी-सर्दी के विचार से राजपूताने के कितने भाग हो सकते हैं? नक्शा खींच कर उनको बताओ और प्रत्येक भाग की सर्दी-गर्मी का कुछ वर्णन करो।

अभ्यास

१—नम्बर ३ का पतला नक्शा नम्बर १ के नक्शे पर बराबर रख दो और निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दो—

(अ) गर्मियो के दिनो में कोटा अधिक गरम होता है या अलवर?

(ब) सर्दियो के दिनो में मेवाड अधिक गर्म होता है या मारवाड?

२—एक बडे कागज पर नीचे बताया हुआ चार्ट बनाओ और उसमें प्रति सातवें दिन लिखी हुई बातें दर्ज करो—

तारीख	सूर्य निकलने का समय	सूर्य छिपने का समय	दिनमान	नियत समय पर कमरे की उष्णता

३—राजपूताने के मध्यम मासिक तापक्रम के नक्शे में देखकर बतलाओ कि कौन से शहरो में जून का महीना सब महीनो में सब से गर्म होता है और कौन से शहरो में मई का।

क्या तुम बतला सकते हो कि इन सब शहरो में सब से गर्म महीना एक ही क्यो नहीं है।

* अध्यापक हर एक लडके से ऐसा चार्ट बनवावें और देखें कि लडके पूछी हुई बातें ठीक दर्ज करते हैं या नहीं। एक ही समय पर प्रति दिन कमरे की उष्णता लडको से वारी वारी पढवावें। इस काम के लिये लडको को हफ्ते के अलग अलग दिन नियत (मुकर्रर) कर दें। दो तीन महीने के बाद दिनमान और हवा की गर्मी—इनमें सम्बन्ध प्रत्यक्ष समझावें।

चौथा अध्याय

जलवायु—२ (जलवृष्टि)

तुम्हारे दवात में स्याही थी, आज वह सूख गई, स्याही में से पानी कहाँ चला गया ? हवा स्याही में से पानी पी गई। क्या हवा पानी पीता है ? हां। जिस प्रकार हम जब प्यासे होते हैं, पानी पीते है उसी प्रकार जब हवा प्यासी होती है वह पानी पी लेती है अर्थात् सोख लेती है। हमारे में और हवा में यह एक फरक है कि हवा किसी जगह का भी पानी पी लेती है चाहे वह अच्छी जगह का हो या गन्दी : जैसे नदी में से, नाले में से, मोरी में से, गीले कपड़े में से और तुम्हारी स्याही में से। क्या तुम भी इन सब जगहों का पानी पीओगे ?

हवा जब पानी पीती है या सोखती है तुम नही देख सकते। परन्तु यदि तुम हवा में से पानी बाहर निकालना चाहो तो हवा को ठंडी कर दो। हवा में से पानी बाहर निकल आवेगा। एक पानी का गिलास लेकर उसमें बरफ के टुकड़े रख दो। बाहर से गिलास को कपडे से पोंछ दो। कुछ देर के बाद गिलास की बाहर की बाजू धुँधली सी दिखाई देगी और फिर पानी की बूँदें भी नज़र आवेंगी। यह पानी कहाँ से आया ? क्या हवा गिलास में से फट कर बाहर निकला ? नही। वह हवा में से आकर गिलास पर जमा हो

गया ! बरफ के कारण गिलास ठंडी हो गई, उससे लगी हुई बाहर की हवा भी ठंडी हो गई और हवा के ठंडे होने के कारण पानी को अदृश्य रूप में रखने की हवा की शक्ति कम हो गई जिससे हवा में से पानी निकल कर गिलास पर बूँदों के रूप में जमा हो गया। इससे यह बात सिद्ध हुई कि **गरम हवा अधिक पानी भाप रूप में ग्रहण कर सकती है, और ठंडी हवा कम ग्रहण कर सकती है।** यदि हवा में पहिले ही से बहुत सा पानी भाप रूप में हो यानी हवा पहिले से तर हो, तो वह पानी कम सोखेगी। यही कारण है कि वर्षा के दिनों में जब हवा में तरी अधिक होती है हमारे कपडे बहुत देर में सूखते हैं। गर्मियों में तेज़ धूप के कारण हवा बहुत गर्म हो जाती है और उससे उसकी पानी सोखने की शक्ति भी बहुत बढ जाती है।

समुद्रों पर की हवा हमेशा जलभरी रहती है और जब ऐसी जलभरी हवा बहती हुई किसी देश में आवे तो वह वर्षा तब ही बरसावेगी जब कि वह ठंडी हो जाय। यदि कोई पहाड जलभरी हवाओं के रास्ते में हो तो वह हवा पहाड से रुक जाती है और ऊँचे को उठती है। ऊँची उठने से वह ठंडी हो जाती है, ठंडी होने के कारण जितना पानी उसके साथ भाप रूप में था उतना उसमें नहीं रह सकता, कुछ पानी छोटी छोटी बूँदों के रूप में बाहर निकल आता है जिसे **बादल** कहते हैं। जब ये छोटी छोटी बूँदें एक दूसरे से मिल कर बड़ी हो जाती हैं वे भारी होने के कारण आसमान में ठहर नहीं सकतीं और वर्षा रूप में ज़मीन पर पडने लगती हैं। किसी देश में वर्षा होने के लिये पहिली बात यह होनी चाहिये कि **समुद्र से जलभरी हवाएँ**

उस देश में आएँ और दूसरी यह है कि ये जलभरी हवाएँ ठंडी हो जायं। स्थल की ओर से समुद्र की ओर वहने वाली हवा जलभरी नहीं होती और इस कारण वह पानी नही बरसाती।

अब हम राजपूताने में वर्षा का विचार करें। तुमने यह पढ़ा है कि राजपूताना गर्मियों के दिनों में खूब गर्म हो जाता है। इस समय यानी लगभग जून, जुलाई में राजपूताने की ओर दक्षिणी-पश्चिमी समुद्र से जलभरी हवाएँ आती हैं। राजपूताना गर्म देश होने के कारण वह जलभरी हवा भी गर्म हो जाती है और इस कारण उससे वर्षा होने की आशा कम रहती है। परन्तु जब वह अरवली पहाड़ तथा उसके दक्षिण-पूर्व पठारी हिस्से पर आती है तब वहाँ वह ऊपर को उठती है और पानी बरसाती है जैसे कि पहिले बता चुके हैं। अरवली पहाड पर और दक्षिणी-पूर्वी पठार पर इन दिनों में अच्छी वर्षा हो जाती है। अरवली पहाड और पूर्वी पठार के उत्तर की ओर वर्षा साधारण होती है परन्तु अरवली के पश्चिमी भाग में इस हवा से वर्षा बहुत कम मिलती है यहाँ तक कि राजपूताने का पश्चिमी और पश्चिमोत्तर का भाग वर्षा के अभाव के कारण सूखा होता है।

गर्मियों के दिनों में जिस प्रकार दक्षिणी-पश्चिमी समुद्र से जलभरी हवाएँ उठ कर राजपूताने में आकर कुछ पानी बरसाती है, उसी प्रकार उन्हीं दिनों में पूर्वी समुद्र से भी जलभरी हवाएँ आकर राजपूताने के पूर्वी हिस्से मे कभी-कभी पानी बरसा देती हैं। परन्तु यह पूर्वी हवाएँ बहुत दूर से कई देशों में होती हुई और पानी बरसाती हुई आती हैं इस कारण राजपूताने में इन हवाओं से वर्षा थोड़ी मिलती है। और वह भी अधिकतर पूर्वी हिस्से में होती है।

राजपूताना ज्यादातर एक सूखा मुल्क है। जो थोड़ी बहुत वर्षा उस-में होती है वह गर्मियों के दिनों में जुलाई से लगा कर सितम्बर तक होती है। वर्षा के विचार से हम राजपूताने के चार भाग कर सकते हैं:—
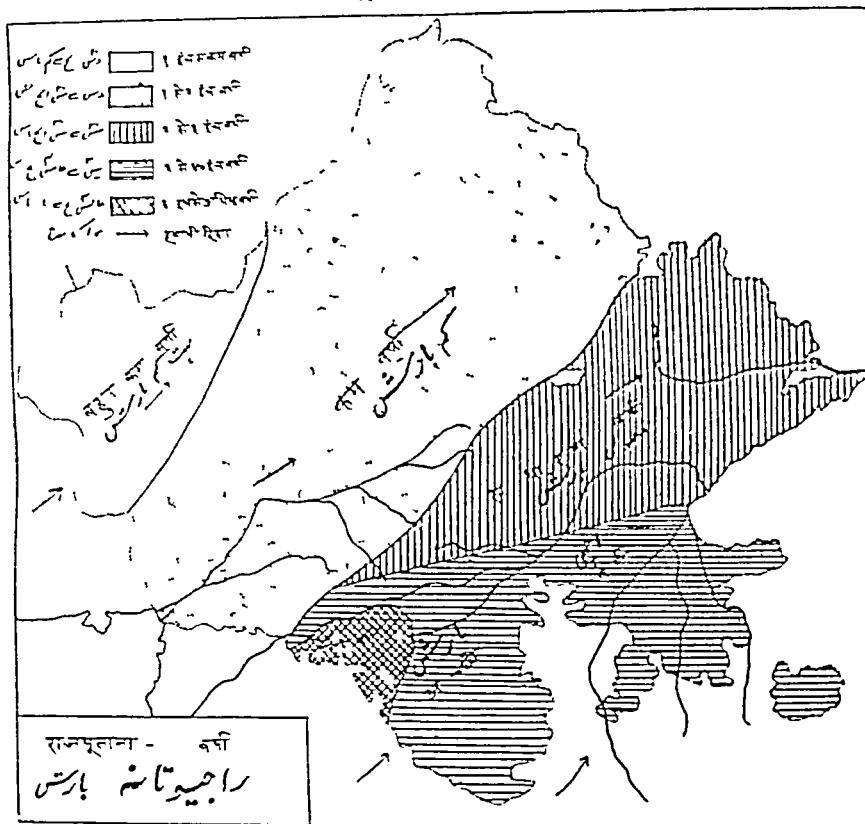
नकशा न० ४

१—अरवली पहाड का दक्षिण भाग और दक्षिणी-पूर्वी पठार जहाँ वर्षा अच्छी होती है।

२—अरवली के उत्तर-पूर्व में आया हुआ हिस्सा जहाँ वर्षा साधारण होती है।

३——अरवली पहाड के पास का पश्चिमी हिस्सा जहाँ वर्षा कम होती है।

४——राजपूताने का पश्चिमी और पश्चिमोत्तरी हिस्सा जहाँ वर्षा लगभग होती ही नहीं।
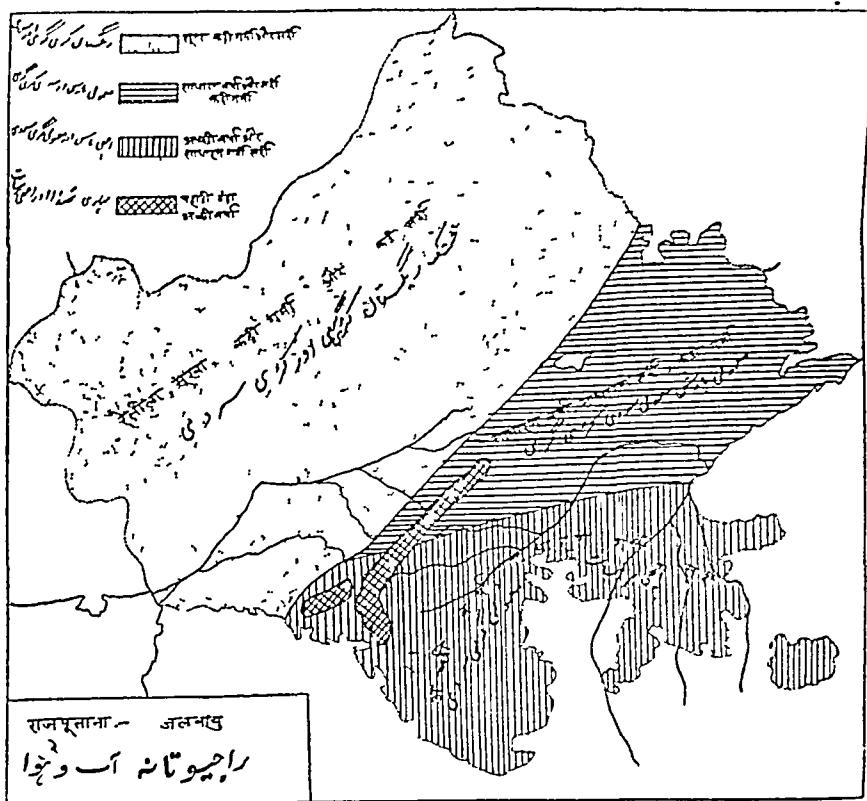
नकशा न० ५

अब यह बताते हैं कि वर्षा कैसे नापी जाती है। जब वर्षा होती है तब उसमें से थोडा पानी ज़मीन सोख लेती है, थोडा पानी भाप बन कर हवा में उड जाता है और बाकी बचा हुआ पानी ज़मीन पर बहने लगता है। हम

यह सुनते हैं कि वर्षा १ इंच हुई परन्तु जानते नहीं कि १ इंच वर्षा का क्या मतलब है। १ इंच वर्षा से हम यह समझते हैं कि ज़मीन समतल हो कर यदि वर्षा का पानी न सोखे, भाप बनकर हवा में न उड़े और जिस जगह बरसे वहीं रहे, बहे नहीं तो ज़मीन पर १ इंच मोटी पानी की पडत बन जायगी। वर्षा नापने के यंत्र को **'रेनगेज'** अथवा **वर्षा मापक यंत्र** कहते हैं। दिये हुए चित्र को देखो। बाहर एक टीन का बर्तन है जिसमें एक कीप लगी हुई है। टीन के भीतर एक बोतल रक्खी हुई है जिसमें वर्षा का पानी कीप के द्वारा जमा हो जाता है। साथ में एक कॉच का गिलास होता है जिसमें निशान बने होते हैं। बोतल में एकट्ठा हुआ पानी इस कॉच के गिलास में डालकर नाप लेते हैं। चित्र में दिये हुए कॉच की गिलास में ५० निशान बने हुए हैं। एक निशान एक इंच का १०० वॉ हिस्सा बताता है। ५० नम्बर के निशान तक **पानी** भरने से आधा इंच अथवा **५० सेन्ट** पानी कहलाता है। रेनगेज खुली जगह रक्खा जाता है ताकि उसमें वर्षा का पानी इकट्ठा हो जाय। दिन भर में वर्षा का जो पानी बोतल में इकट्ठा हो जाय उसे नाप लेते हैं। महीने के सब दिनों की वर्षा जोडने से **महीने की वर्षा** मालूम होती है। १२ महीनों की वर्षा जोडने से **साल भर की वर्षा** मालूम होती है।
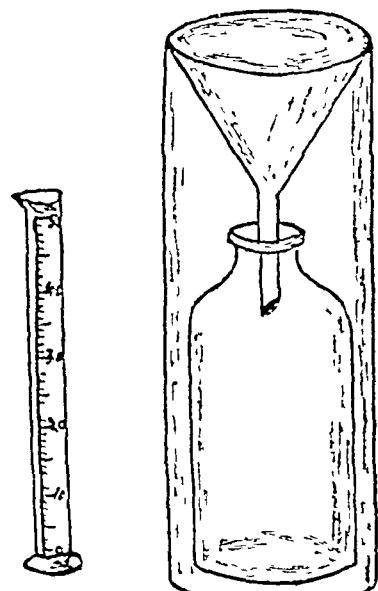
रेनगेज

राजपूताना के कुछ प्रसिद्ध स्थानों

नाम शहर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
जोधपुर	१४ सेन्ट	२० सेन्ट	९ सेन्ट	१५ सेन्ट	४५ सेन्ट	१ इ० ४५ सें०
जयपुर	४७ सें०	२९ सें०	३७ सें०	१७ सें०	५८ सें०	२ इ० ३० सें०
उदयपुर	११ सें०	१४ सें०	१० सें०	१६ सें०	१ इ० १४ सें०	३ इ० ३० सें०
कोटा	२७ सें०	२९ सें०	१२ सें०	३३ सें०	५९ सें०	२ इ० ९४ सें०
आबूपर्वत	२७ सें०	३१ सें०	१५ सें०	८ सें०	९७ सें०	५ इ० ५९ सें०
बीकानेर	३८ सें०	२४ सें०	१८ सें०	१४ सें०	८४ सें०	१ इ० ६५ सें०
भरतपुर[1]	५० सें०	३२ सें०	२५ सें०	१५ सें०	६० सें०	२ इ० ८० सें०
जैसलमेर[1]	४२ सें०	२६ सें०	२० सें०	१५ सें०	१२ सें०	२५ सें०

[1] इन दोनो स्थानो के लिये प्रमाणित विवरण के अभाव के कारण अक (Figures)

की मासिक तथा वार्षिक वर्षा

जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वार्षिक वर्षा
३इं० ६९सें०	४इं० ४०सें०	२इं० ४६सें०	३६सें०	११सें०	१२सें०	१३इं० ६२सें०
८इं० २सें०	७इं० ९३सें०	३इं० ४१सें०	३२सें०	१४सें०	२१सें०	२४इं० २१सें०
७इं० २५सें०	६इं० ९२सें०	३इं० ८६सें०	६६सें०	६सें०	८सें०	२३इं० ७८सें०
९इं० ५०सें०	८इं० ८५सें०	४इं० ४१सें०	५६सें०	११सें०	२६सें०	२८इं० २३सें०
२२इं० ५सें०	२१इं० ५१सें०	९इं० ५८सें०	१इं० ४६सें०	२८सें०	२४सें०	६२इं० ४९सें०
३इं० २९सें०	३इं० १४सें०	१इं० ८सें०	९ सें०	६सें०	१८सें०	११इं० २७सें०
९इं० ६२सें०	७इं० १०सें०	४इं० ३५सें०	३५ सें०	५ सें०	२५सें०	२६इं० ३४सें०
२इं० ५सें०	२इं० १०सें०	३२ सें०	८ सें०	१०सें०	१६सें०	६इं० २१सें०

अन्दाज से दिये गये हैं ।

पिछले पृष्ठ पर राजपूताना के कुछ मुख्य शहरों की वार्षिक तथा मासिक वर्षा दी हुई है। उदाहरण के लिये उदयपुर लो। आखिरी खाने में देखो उदयपुर की वार्षिक वर्षा २३ इंच और ७८ सेंट बतलाई हुई है। इससे यह मतलब नहीं है कि प्रतिवर्ष उदयपुर में वर्षा २३ इंच और ७८ सेंट ही हो जाय। १०-१२ साल की वार्षिक वर्षा नापकर उसकी औसत २३ इंच ७८ सेंट
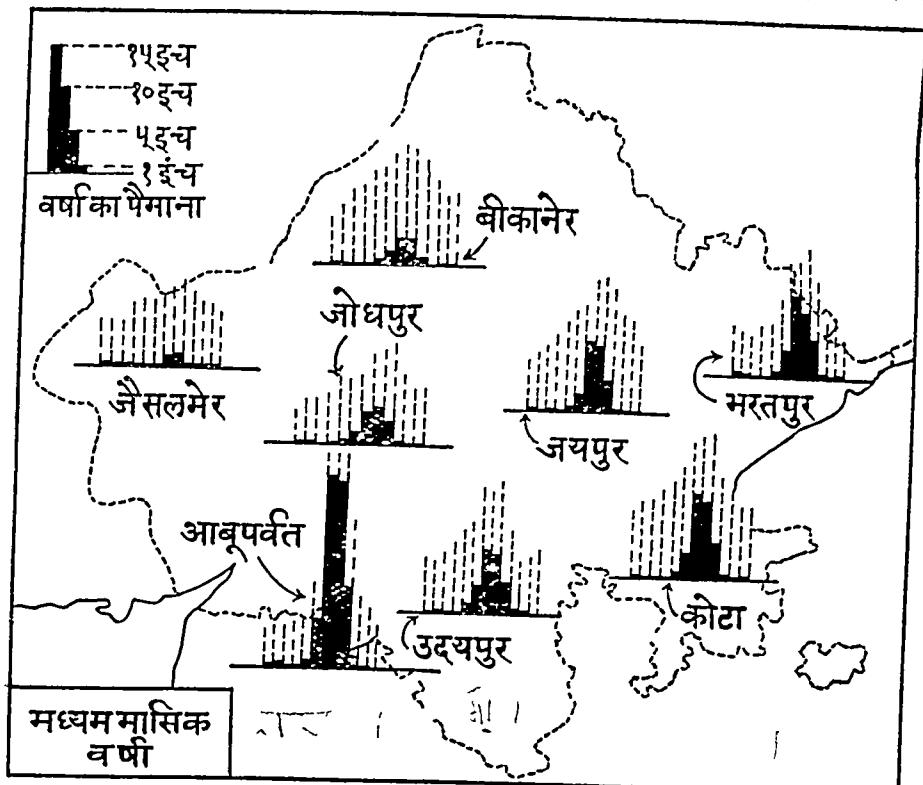
देखो, राजपूताना में अधिकतर वर्षा ४ महीनो में ही होती है।

आती है। जब हम कहते हैं कि उदयपुर में वार्षिक वर्षा २३ इंच ७८ सेंट है तो उसका यह मतलब है कि उदयपुर में वार्षिक वर्षा लगभग २४ इंच

; है। कभी वह उससे अधिक हो जाय और कभी कम। इसी प्रकार मासिक
र्षा भी दिये हुए अंकों के लगभग ही होती है। देखो कुल २३ इंच ७८ सेंट
ार्षिक वर्षा में २१ इंच और ३३ सेंट जून, जुलाई, अगस्त और सितम्बर
न चार महीनों में ही हो जाती है। शेष बची हुई लगभग ढाई इंच वर्षा ८
हीनों में हो जाती है जो होना न होने के बराबर ही है।

पृष्ठ ३० पर दिये हुए नकशे में पृष्ठ २८-२९ पर तालिका में दी हुई वर्षा
चित्र रूप में बतलाई हुई है। हर एक स्थान पर १२ महीनों के लिये १२
ख़ाने बना दिये गए हैं। जैसे पहिला खाना जनवरी का, दूसरा फरवरी का
इत्यादि। देखो पहिले ५ खानों में तथा आखिरी ३ खानों में वर्षा बहुत कम
बतलाई हुई है। बीच के केवल चार खानों में वह अधिक बतलाई गई है जो
नकशे में दिये हुए पैमाने के अनुसार पृ० २८-२९ पर तालिका में दी हुई वर्षा
के बराबर है। पृ० ३० पर दिया हुवा नकशा तालिका का दूसरा रूप है जिसे
देखने से बहुत सी बातें एक दम नजर आ जाती हैं। नकशे में देखकर निम्न-
लिखित प्रश्नों के उत्तर दो और अपना जवाब तालिका के साथ मिलाओ:—

(१) जुलाई के महीने में किस जगह सबसे अधिक वर्षा होती है और
कितनी ?

(२) जून के महीनों में किन किन जगह वर्षा साधारण ३ इंच के लगभग
होती है। क्या उस वर्षा का असर उन स्थानों के तापक्रम पर होता है ?

(३) राजपूताना में कौन से महीने लगभग सूखे बीतते हैं ?

(४) कौन से शहर में वार्षिक वर्षा सबसे कम होती है और कौन
सी जगह वह सबसे अधिक होती है ?

प्रश्न

१—ठंड के दिनों में प्रातःकाल के समय हमारे मुँह से भाप निकलती हुई क्यों दिखाई देती है ?

२—बादल किसे कहते हैं और वे कैसे बनते हैं ?

३—वर्षा कैसे होती है ? वर्षा होने के लिये किन किन बातों की आवश्यकता होती है ?

४—राजपूताने में कौन सी हवाओं से वर्षा होती है और वह कौन से महीनों में होती है ?

५—राजपूताने के कौन से हिस्से में वर्षा अच्छी होती है और किस हिस्से में बिलकुल नहीं होती ?

६—यदि अरवली पहाड़ राजपूताने में से उठा दिया जाय तो राजपूताने की वर्षा पर उसका क्या प्रभाव होगा ?

७—चार नम्बर के पतले नक्शे को १ नम्बर के नकशे पर रख दो और कारण देते हुए उत्तर लिखो—

(अ) अलवर में अधिक वर्षा होती है या जैसल्मेर में ?

(ब) अजमेर-मेरवाड़े में अधिक वर्षा होती है या कोटे में ?

८—वर्षा कैसे नापी जाती है ? एक इंच वर्षा से क्या मतलब समझते हो ?

अभ्यास

१—जैसा चित्र में बताया है वैसा ही मान लो तुम्हारे पास रेनगेज है। तुम्हारे गाँव या शहर में वर्षा होने पर यदि बोतल में इकट्ठा हुआ पानी तीन गिलास और २५ नम्बर के निशान तक भरे तो बताओ वर्षा कितने इंच या सेन्ट हुई।

२*—जब तुम्हारे गाँव में या शहर में वर्षा हो तब उसे रेनगेज के द्वारा नापो और वर्षा के समय किस दिशा से हवा चल रही थी यह भी नीचे बनाए चार्ट में दर्ज करो।

तारीख	वर्षा इंच और सेन्ट में	हवा की दिशा

*अध्यापक छात्रों से बारी बारी वर्षा नपवावें और ऊपर बनाया हुआ चार्ट अपनी क्लास में लगवा कर उसको भरवावें। योग्य समय पर चार्ट के ज़रिये हवा की दिशा और वर्षा का सम्बन्ध अपनी क्लास को समझावें जिस से मालूम हो जायगा कि कौन सी हवाओं से अधिक वर्षा अपने शहर में या गाँव में होती है। इसी चार्ट से मासिक और वार्षिक वर्षा भी मालूम करें।

पाँचवाँ अध्याय

पेड़-पौधे

जिस प्रकार मनुष्य विना अन्न और पानी के जी नहीं सकता उसी प्रकार पेड-पौधे भी विना खाद्य (Food) और पानी के जी नहीं सकते। क्या तुम जानते हो कि पेड-पौधों का खाद्य कहाँ होता है और वे कैसे खाते और पीते हैं ? पेड-पौधो का खाद्य मिट्टी मे मिला हुआ रहता है। जिस ज़मीन में यह खाद्य कम होता है या चुक जाता है उसमें खात देना पडता है। खात में भी पेड-पौधों का खाद्य होता है। जिस भूमि में पेड-पौधो के लिये खाद्य अच्छा होता है उसे उपजाऊ भूमि कहते हैं। सब जगह भूमि एक ही प्रकार की नहीं होती। कही पथरीली, कही ककरीली, कही रेतीली, कही भुरभुरी, कहीं काली चिकनी इत्यादि होती है। नदियों के किनारे ज़्यादातर चिकनी और उपजाऊ मिट्टी होती है। पेड-पौधे खाद्य और पानी अपनी जडों के द्वारा लेते हैं। ज़मीन में पानी डालने से पेडों का खाद्य पानी मे घुल जाता है और पेड उसे लेते हैं। यदि पेडों को पानी न मिले तो ज़मीन कितनी ही अच्छी क्यों नहीं हो वहाँ पेड-पौधे पनप नहीं सकते। इससे यह बात सबूत हुई कि **पेड़-पौधों के पैदा होने के लिए तथा पनपने के लिये उपजाऊ ज़मीन तथा पानी की आवश्यकता होती है।**

जिस प्रकार विना खाद्य और पानी के पेड-पौधे जी नहीं सकते उसी प्रकार विना धूप और गर्मी के भी पेड-पौधे जी नहीं सकते। जिन मुल्कों में हमेशा वहुत ठंड पडती है और वर्फ पडती है उन मुल्कों में कुछ भी पैदा नहीं हो सकता। सौभाग्य से राजपूताना ऐसा ठंडा और वर्फीला देश नहीं है। वह गर्म देश है। पेड़-पौधों के लिये गर्मी अच्छी है परन्तु दुर्भाग्य से पानी की कमी है। राजपूताने में सव जगह भूमि एकसी नहीं है और जल-वायु भी एकसा नहीं है, इस कारण प्राकृतिक पेड-पौधे भी सव जगह एकसे दिखाई नहीं देते जिस जगह अच्छी वर्षा होती है वहाँ अधिकतर जंगल पैदा होते हैं। जिस जगह वर्षा साधारण होती है वहाँ घास अच्छी और अधिक होती है और जंगल कम होते हैं। राजपूताने के जंगलों में यह एक विशेषता होती है कि शुष्क ऋतु में उनके पत्ते झड जाया करते हैं। जिस जगह वर्षा की कमी होती है उस जगह वडी घास की ऐवज में छोटी घास होती है और पेड भी छोटे, काँटेदार और छोटे पत्तों वाले होते हैं जैसे वबूल, खेजडी, वेर इत्यादि। अगर वर्षा की वहुत ही कमी हो तो घास भी अच्छी नहीं होती और आँक के तरह मोटे पत्ते वाले अथवा काँटेदार विना पत्तों की छोटी छोटी झाड़ियाँ होती हैं जैसे थोर, केर इत्यादि।

अव यह देखें कि राजपूताने में प्राकृतिक पेड-पौधे किस प्रकार के होते हैं। अरवली पहाड़ के दक्षिण में और दक्षिण-पूर्व में जहाँ अच्छी वर्षा होती है अधिकतर अच्छे जंगल हैं जिसमें कई प्रकार के वडे पेड मिलते हैं जैसे वड, शीशम, जामुन, आम इत्यादि। अरवली पहाड़ के पूर्वोत्तर जहाँ वर्षा साधारण है जंगल कम हैं परन्तु घास अधिक होती है।

अरवली पहाड़ के पश्चिमी ओर वर्षा की कमी के कारण छोटी घास होती है और पेड छोटे, काँटेदार और छोटे पत्तों वाले होते हैं जैसे ववूल, खेजडी इत्यादि। ज्यों ज्यों हम पश्चिम और पश्चिमोत्तर की ओर वढते हैं वर्षा
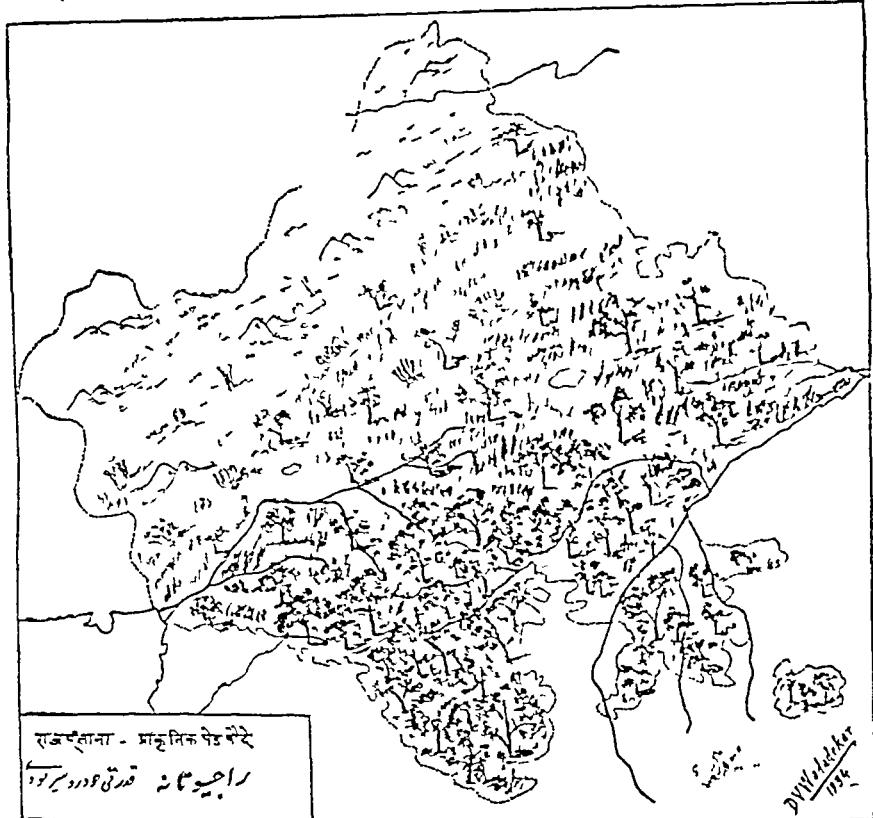
नकशा नं० ६

कम होती जाती है और इस कारण घास भी कम दिखाई देती है। जगह जगह छोटी छोटी विना पत्तों की कटीली झाडियाँ नज़र आती हैं और विलकुल पश्चिम और पश्चिमोत्तर को ओर वह भी नहीं दिखाई देतीं। नं० ६ का पतला नकशा नं० ४ पर रख दो और देखो यह वात ठीक है या नहीं।

प्रश्न

१—पेड-पौधो के पैदा होने के लिये किन किन बातो की आवश्यकता होती है ? यदि उनमें से एक की भी कमी हो तो उसका प्रभाव पेड-पौधो पर किस प्रकार पडेगा ?

२—घास किस प्रकार के जलवायु में पैदा होती है ? राजपूताने में किन किन जगह अच्छी घास पैदा होती है ?

३—जामुन, वड, पीपल, इमली के पेड कैसे होते है ? राजपूताने के कौनसे हिस्से में वे अधिकतर मिलते है और क्यो ?

४—बबूल, खेजडी, रोहिडा, नीम, शीशम, आम इनके पेड राजपूताने के कौन से भाग में पैदा होते है ? उनके लिये किस प्रकार की जलवायु की आवश्यकता होती है ?

५—राजपूताने के पश्चिम भाग में किस प्रकार के पेड-पौधे होते है ?

अभ्यास

१—तुम्हारे गाँव में या शहर में कौन कौन से पेड़ है ? साल भर उनको देखते रहो और निम्नलिखित बातें दर्ज करो :—

(अ) उनके पत्ते कभी झड़ते है या नहीं ? यदि झड़ते हो तो किन दिनो में ?

(ब) फूलने और फलने का समय।

(क) फूल या फल मनुष्य के काम आते है या नही ? यदि आते हो तो किस प्रकार ?

२—नं० १ का पतला नकशा नं० ६ के नकशे पर बराबर रख दो और बताओ कि :—

(अ) कौन सी रियासतो में जंगल अच्छे होते है ?

(ब) कौन सी रियासतो में थोडे पेड और बहुत घास होती है ?

(क) किन किन रियासतो में काँटेदार छोटे पेड और छोटी घास होती है ?

(ख) कौन सी रियासतो में रेत के टीबे नजर आते है ?

छठवाँ अध्याय

पैदावार

गत अध्याय में यह बताया जा चुका है कि किस प्रकार के प्राकृतिक पेड़-पौधे राजपूताने में पैदा होते हैं। यदि कोई मनुष्य राजपूताने में न बसे और जंगल, घास आदि जो प्रकृति से पैदा होते हैं उन्हें न काटे तो राजपूताने में ऐसा दृश्य दिखाई देगा कि जैसा गत अध्याय और नकशा नम्बर ६ में बता चुके हैं। पहिले पहिल जब राजपूताने मे मनुष्य रहने लगे तब उन्होंने कई जगह के जंगल काटे, ज़मीन साफ की और खेती करके अपना गुज़र चलाना शुरू किया। अब भी राजपूताने में हिन्दुस्तान के और प्रान्तों की अपेक्षा अधिक जंगल है। खेती उसी जगह अच्छी होती है जहाँ भूमि उपजाऊ हो और वर्षा अच्छी हो।

पहिली बात यह है कि राजपूताने में सब जगह भूमि एकसी समतल और उपजाऊ नही है। नदियों की घाटियों में वह अधिक उपजाऊ है। इस कारण इन्ही घाटियों में सब से अच्छी पैदावार होती है दूसरी बात यह है कि राजपूताने मे वर्षा केवल गर्मियों में लगभग जून-जुलाई से सितम्बर तक के महीनों में ही होती है। सालभर में ८ महीने सूखे बीतते हैं। इस दशा में शुष्क मौसम मे खेती केवल उसी जगह होती है जहाँ कुओं से, नदियों से तालाबों से अथवा नहरों से ज़मीन सीचने का कुछ प्रबन्ध हो।

राजपूताने के पश्चिमी ओर वर्षा की कमी के कारण कुएँ बहुत ही थोड़े हैं और वे भी कहीं कहीं दो सौ हाथ से अधिक गहरे हैं। कहीं कहीं ५-६ गाँवों के बीच में एक ही कुआँ होता है। ऐसे कुओं से सिंचाई नहीं हो सकती। अरवली पहाड़ के दक्षिणी और पूर्वी भाग में कुएँ बहुत हैं और वे इतने गहरे भी नहीं हैं इस कारण उनसे सिंचाई अच्छी होती है। इसके अतिरिक्त इस दक्षिणी पूर्वी भाग में कई तालाब भी हैं जिनसे भी सिंचाई अच्छी होती है।
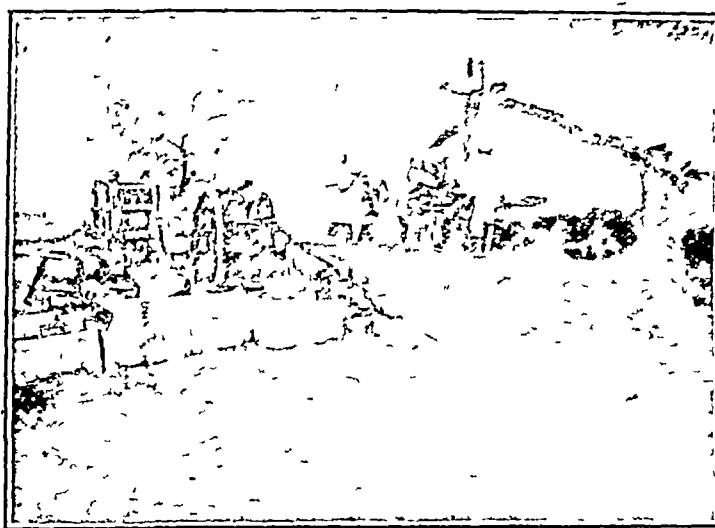
राजपूताने में अरठ से सिंचाई
(Photo by the author)
[देखो कुआँ पास में होने पर भी पेड़ों का अभाव सा ही है]

राजपूताने की मुख्य नदियाँ अरवली के पूर्वी हिस्से में हैं परन्तु वे सब

चम्बल नदी को छोडकर शुष्क ऋतु में लगभग सूख जाती हैं। और ज़मीन समतल भी नहीं है इस कारण नदियों से नहर निकाली नहीं जा सकती।
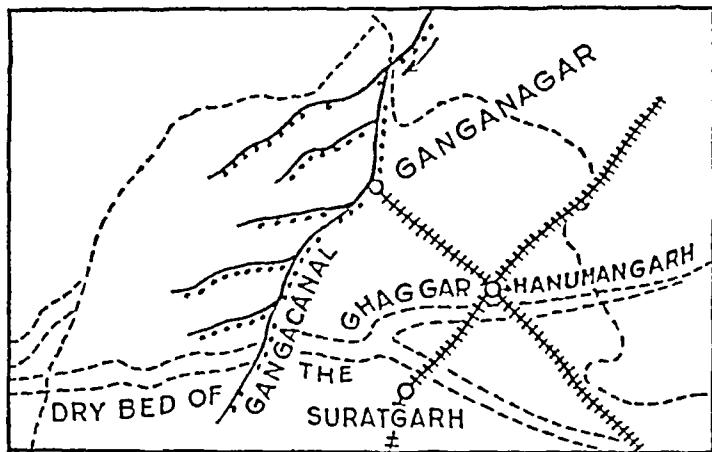
गगा नहर

परन्तु नदियों में बाँध बाँधकर तालावों सा बना देते हैं जिनसे सिंचाई अच्छी होती है। थोडा ही समय हुआ पंजाब के सतलज नदी में से एक नहर (जिसे गंगा नहर कहते हैं) निकाल कर बीकानेर रियासत के उत्तरी भाग में लाई गई है जिससे आजकल वहाँ खेती का अच्छा प्रबन्ध हो गया है और इस कारण वहाँ की आबादी भी बढ़ गई है। नहर की तली और दीवारें सीमेन्ट लगाकर पक्की बनाई गई हैं जिससे रेतीली भूमि पानी को सोख न ले।

राजपूताने में खेती दो प्रकार की होती है। एक **ख़रीफ़** की खेती जिसे सियालु भी कहते हैं और दूसरी **रवी** की खेती जिसे उनालु कहते हैं।

खरीफ की खेती गर्मियों में वर्षा पड़ने पर होती है और ठंड के पहिले कट जाती है। खरीफ़ की खेती की मुख्य पैदावार **मक्का, कपास, ज्वार,**

बाजरा, तिल, अलसी, मूँग, मोठ आदि हैं। यह पैदावार राजपूताने में सब जगह एकसी नहीं होती क्योंकि इनके लिये कम अधिक पानी तथा भिन्न भिन्न प्रकार के भूमि की आवश्यकता होती है।
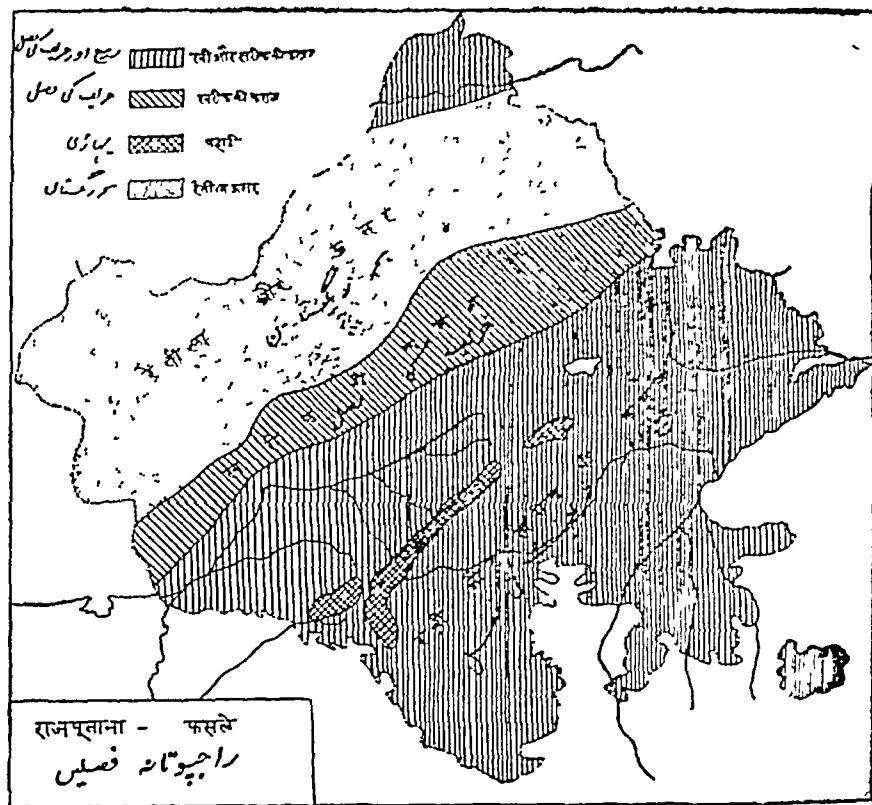
नकशा न० ७

मक्का—यह गर्मियों में पानी पड़ने पर बोई जाती है। करीब तीन महीनों में इसकी खेती तैयार हो जाती है। इसके लिये उपजाऊ भूमि तथा अधिक पानी की आवश्यकता होती है इस कारण राजपूताने के मध्य और पूर्वी

हिस्से में इसकी अच्छी पैदावार होती है। क्या तुम जानते हो कि मक्का किस काम आती है ?

कपास—इसे भी मक्का की भाँति अधिक पानी की और उपजाऊ भूमि की ज़रूरत होती है। जब वह पकने लगती है तब उसे कड़ी धूप चाहिए। मुलायम और उपजाऊ भूमि पर वह अच्छी पैदा होती है। इसकी खेती चार महीनों में तैयार हो जाती है। ठंड के शुरू में कपास उतारना शुरू कर देते हैं। पूर्वी और मध्य राजपूताने में इसकी खेती अच्छी होती है।

कपास की डाल

ज्वार, बाजरा, तिल, मूँग और मोठ—ये सब साधारण वर्षा और साधारण ज़मीन में पैदा होते हैं। गर्मी में पहिला पानी पड़ते ही उनकी बुआई हो जाती है। तीन महीनों में उनकी खेती तैयार हो जाती है। पश्चिमी भाग छोड़कर राजपूताने में सर्वत्र ही ये पैदा होते हैं। बाजरी अधिकतर अरवली पहाड़ के पश्चिम में और ज्वार पूर्व में पैदा करते हैं। राजपूताने में सब अनाजों में ज्वार और बाजरी सब से अधिक पैदा होती हैं।

गन्ना—यह भी एक खरीफ की खेती है। राजपूताने के सब पैदावारों में इसे सब से अच्छी उपजाऊ भूमि और अधिक पानी की ज़रूरत होती है। यह लगभग दस महीनों में तैयार होता है। इसे फाल्गुन-चैत्र में बोते हैं और कार्तिक के बाद काटना शुरू कर देते हैं। इसे कोल्हू में पेर कर रस

निकाला जाता है जिससे गुड और शक्कर बनती हैं। हिन्दुस्तान के और प्रान्तों की अपेक्षा इसकी खेती राजपूताने में बहुत थोडी होती है। दक्षिणी-पूर्वी राजपूताने में जहाँ वर्षा अच्छी होती है यह पैदा होता है।

गेहूँ का खेत
(Photo by the Author)

खेत मे खडा हुआ आदमी गाँव का रहने वाला है परन्तु शहर मे नौकरी करता है। देखो, शहर वासियो का असर उसकी पोशाक पर कैसे हुआ है।

यह खेत पृ० ३८ पर दिये हुये कुएँ की सिंचाई से ही तैयार किया गया है।

रबी की खेती—खरीफ की खेती की अपेक्षा रबी की खेती के लिये कम गर्मी की आवश्यकता होती है। इसलिये वह राजपूताने में ठंड की ऋतु में

पैदा होती है क्योंकि राजपूताने में केवल गर्मियों में वर्षा होती है। इस कारण रबी की खेती सिर्फ उन्हीं जगह होती है जहाँ शुष्क ऋतु में कुओं से, तालाबों से अथवा नहरों से सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध है। रबी की खेती अरवली के पूर्वी भाग में अच्छी होती है। अरवली के पश्चिमी भाग में सिर्फ बनास नदी की घाटी में, लूनी नदी की घाटी मे और उत्तर की ओर घग्गर
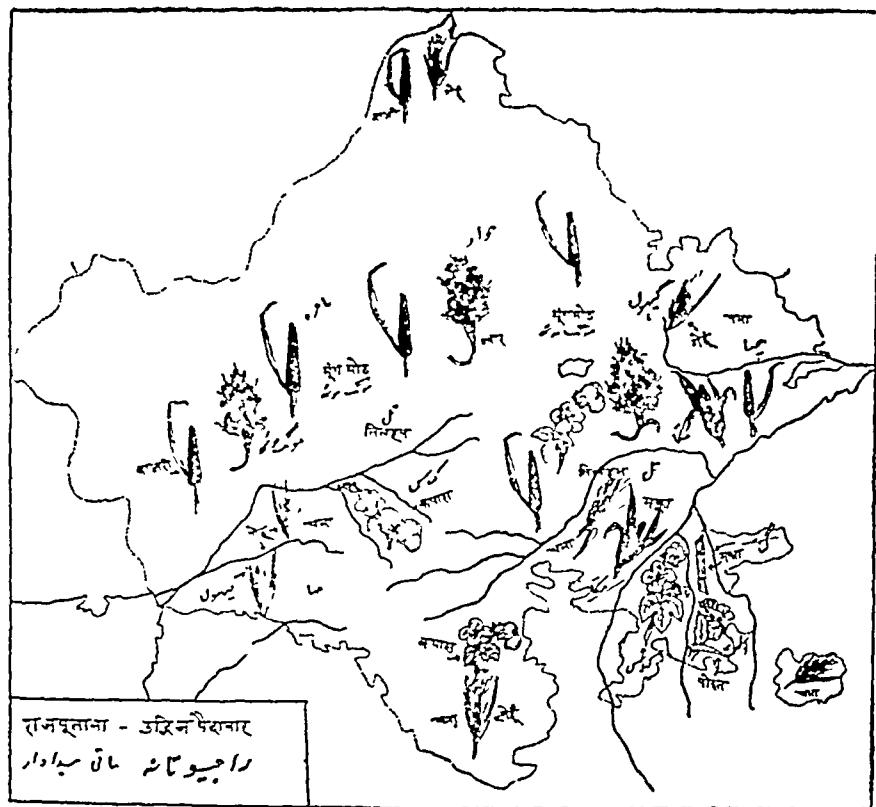
नकशा नं० ८

नदी के बेसिन में जहाँ गंगा नहर से सिंचाई होती है वहाँ रबी की खेती होती

है। घग्गर नदी राजपूताने के उत्तरी भाग की एक सूखी नदी है। पञ्जाब में पानी बरसने पर पानी की एक धारा राजपूताने में आकर बीकानेर रियासत के मरुस्थल में गुप्त हो जाती है। परन्तु प्रतिवर्ष पानी के साथ मिट्टी के आने से बीकानेर रियासत का यह भाग उपजाऊ हो गया है।

रबी की खेती में मुख्य पैदावार **गेहूँ, जौ, चना, जीरा, मिरची, सरसों** आदि हैं।

गेहूँ—इसके लिये साधारण भूमि और समय समय पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। अनाज बनने तथा पकने के समय उसे मध्यम श्रेणी की धूप और साधारण गर्मी की ज़रूरत होती है। यह जाड़ा शुरू होते ही बोया जाता है। चार महीनों में खेत कटने के लिये तैयार हो जाता है। गेहूँ फागुन-चैत में काट लिया जाता है। इसकी पैदावार अरवली के पूर्वी हिस्से में और लूनी नदी और पश्चिमी बनास नदी के बेसिन में अच्छी होती है।

जौ, जीरा, मिर्च, चना आदि के लिये साधारण भूमि और थोडा पानी चाहिये। ये राजपूताने में लगभग सर्वत्र ही पैदा होते हैं परन्तु पश्चिमी भाग में इनकी उपज बहुत ही कम होती है।

अफ़ीम—पोस्त के फल के जमा किये दूध से अफ़ीम बनाई जाती है। यह एक मादक वस्तु है। फल के सूखने पर उसमें से सफ़ेद-सफेद बारीक बीज निकलते हैं जिसे खस-खस कहते हैं। अफीम की पैदावार और बिक्री का सारा प्रबन्ध गवर्नमेंट-सरकार

अफीम की डाल, पत्ते, फूल और बोंडी

के अधिकार में है। अधिकतर यह दक्षिणी-पूर्वी राजपूताने में पैदा की जाती है जहाँ भूमि उपजाऊ है और सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध है।

रवी और खरीफ की खेती के अतिरिक्त राजपूताने में साग, तरकारियाँ और फल भी कई प्रकार के पैदा होते हैं। इनके लिये अच्छी भूमि और सिंचाई की आवश्यकता होती है। ये अधिकतर बागों में पैदा की जाती हैं जहाँ हमेशा देख-भाल करनी पडती है। हिन्दुस्तान के अन्य प्रान्तों की अपेक्षा यहाँ तरकारियाँ तथा फल बहुत कम पैदा होते हैं। फलों में बीकानेर के मतीरे, टोंक के खरबूजे और जोधपुर के अनार प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न

१—रवी की खेती से तुम क्या समझते हो? उसके लिये किस प्रकार के जल-वायु की जरूरत होती है? वह राजपूताने के कौन से हिस्से में अच्छी पदा होती है? उसकी मुख्य पैदावार क्या है?

२—गर्मी की ऋतु में वर्षा होने पर कौन सी पैदावार राजपूताने में बोई जाती है? उनके नाम लिखो और बताओ कौन सी पैदावार राजपूताने में किस जगह होती है और क्यो?

३—राजपूताने का मुख्य अन्न कौन सा है? वह यहाँ अधिक कहाँ पैदा होता है?

४—यदि तुम पश्चिम से पूर्व तक राजपूताने के मध्य में हो कर सितम्बर के महीने में यात्रा करो तो तुम्हें कौन कौन अनाज खेतो में खड़े मिलेंगे? उनकी कटाई कब होगी?

५—लूनी नदी से मारवाड को क्या लाभ है?

६—यदि सतलज नदी में से गंगा नहर नही निकाली जाती तो बीकानेर रियासत की पैदावार तथा आबादी पर क्या प्रभाव पडता?

७—राजपूताने का कौन सा भाग अधिक उपजाऊ है और वहाँ क्या-क्या पैदा होता है ?

८—तिलहन (तिल, सरसो, अलसी), कपास, गन्ना—ये हमारे किन-किन काम आते हैं ? उनमें से प्रत्येक कौन सी फसल की पैदावार है ? रबी की या खरीफ की ?

९—सिचाई से तुम क्या समझते हो ? राजपूताने में सिंचाई किन-किन प्रकारो से होती है ?

अभ्यास

१—जो जो तरकारियाँ और फल तुम्हारे गाँव के या शहर के बाजार में बिकने आते है उनका एक ब्योरा बनाओ जैसे बताया है।

नाम तरकारी या फल	मिलने का समय

२—जमीन सीचने के लिये पानी जितने प्रकार से कुओ से निकाला जाता है उनके चित्र इकट्ठा करो अथवा बनाओ। उनको अपने चित्रमय भूगोल में चिपका दो और ऊपर लिखो "हमारे देश के कुओ से पानी सीचने के साधन"।

३—जो पैदावार तुम्हारे देश में होती है उसके सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रकार के जितने चित्र तुम्हें मिलें उनको इकट्ठा करो अथवा खीचो और उन्हें अपने चित्रमय भूगोल में लगा कर लिखो "हमारे देश की पैदावार और उसके सम्बन्ध में काम।"

सातवाँ अध्याय

पशु

पुराने समय में जब राजपूताने में आबादी थोडी थी और जंगल बहुत थे उस समय जंगली जानवर भी बहुत थे। परन्तु आज कल जंगल के कम होने से और आबादी के बढने से जंगली जानवर भी कम हो गए हैं।

जानवर दो प्रकार के होते हैं एक हिंसक (मॉस खा कर रहने वाले) और दूसरे अहिंसक (घास, पत्ते आदि पर रहने वाले)। हिंमक जंगली जानवरों में शेर, चीते, रीछ, सुअर, भेडिये आदि राजपूताने में बहुत हैं। वे पहाडी हिस्सों के जंगल में पाए जाते हैं जहाँ मनुष्य की बस्ती कम होती है। जंगल में घास भी काफी होने के कारण घास खा कर रहने वाले जंगली जानवर जैसे हिरन, सांभर, खरगोश आदि बहुत होते हैं। इन्हीं की अथवा गॉव के मवेशियों की या भेड बकरों की शिकार ये हिंसक पशु करते हैं। जहाँ जंगल बहुत होते हैं वहाँ हिंसक पशु भी अधिक होते हैं। जहाँ घास अधिक होती है वहाँ घास पर चरने वाले पशु बहुत पाए जाते हैं। हिरन, खरगोश, लोमडी, गीदड आदि जानवर राजपूताने में करीब करीब सर्वत्र ही मिलते हैं।

कई जानवर मनुष्य ने अपने बुद्धि-बल से अपने उपयोग के लिये पालतू बनाए हैं। जिनमें से मुख्य गाय, बैल, भैंस, घोड़ा, गधा, भेड, बकरी

और ऊंट हैं । अब देखें कि ये पालतू पशु मनुष्य के किस काम आते हैं और वे राजपूताने में अधिकतर कहाँ पाए जाते हैं ।
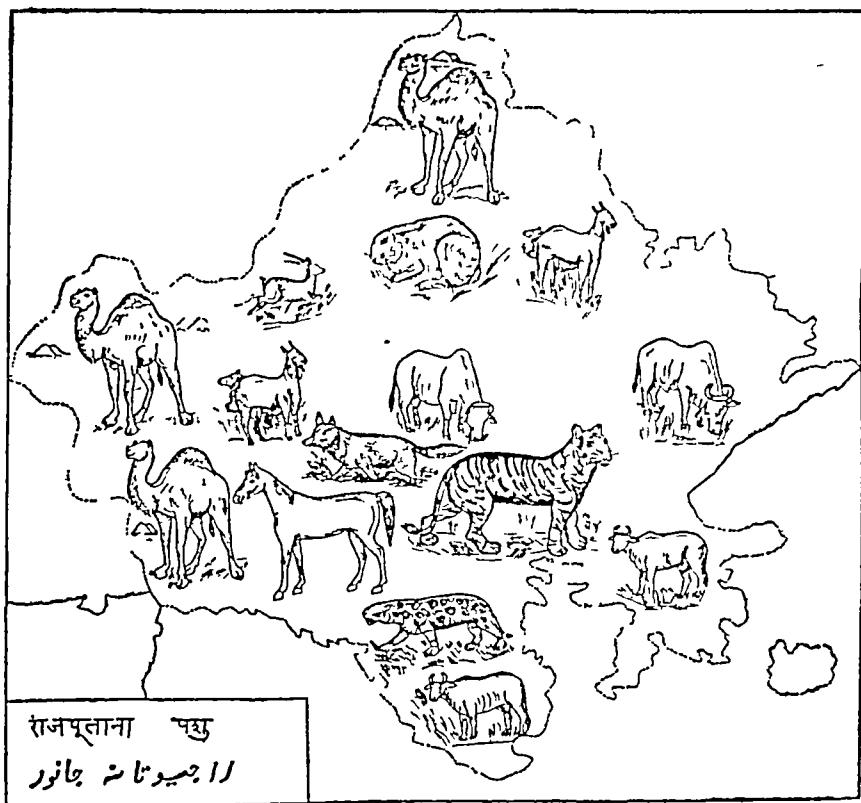
नकशा न० ६

बैल—तुमने बैल अवश्य देखा होगा । शायद ही कोई ऐसा दिन होगा कि तुम घर से बाहर निकलो और बैल तुम्हारे नज़र न आए । बैल मनुष्य के बहुत ही काम का पशु है । वह हल चलाता है, गाडी खींचता है, पीठ पर अनाज या माल ढोता है और चरस से पानी खींचता है । यदि किसान के

पास बैल न हो तो उसका कितना सारा काम रुक जाय। उसकी खाल, सींग, हड्डियाँ भी मनुष्य के काम आती हैं। बैल राजपूताने में करीब करीब सर्वत्र मिलता है। मध्य और पूर्वी राजपूताने में उसकी संख्या अधिक है।

नागौर के बैल
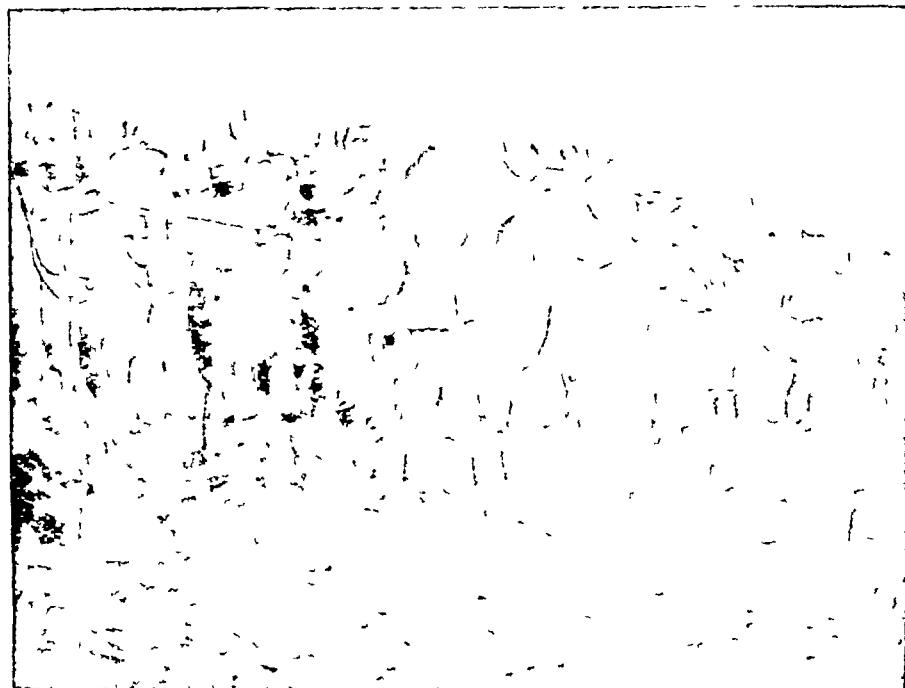
परवतसर के पशुमेले का एक दृश्य

(Photo by the courtesy of V H Thattey)

क्या तुम बता सकते हो क्यों? मारवाड में नागौर परगने के बैल बहुत प्रसिद्ध हैं। वे बडे कद के, सुडौल और मज़बूत होते हैं। हिन्दुस्तान में यहाँ के बैल दूर-दूर शहरों तक भेजे जाते हैं।

गाय—गाय कितनी उपयोगी है यह तुम खूब जानते हो। गाय भी बैल की तरह राजपूताने में करीब करीब सर्वत्र ही पाली जाती है। मारवाड़ के **मालानी, साँचोर** और बीकानेर के **पूँगल** की गायें प्रसिद्ध हैं।

भैंस—यह भी लगभग सर्वत्र पाली जाती है परन्तु राजपूताने में इतनी भैंसें नहीं हैं जितनी कि गायें हैं। भैंस मनुष्य के क्या काम आती हैं ?

घोड़ा—घोड़ा सवारी के और गाड़ी खींचने के काम आता है। घोड़े पर माल भी लादा जाता है। राजपूताने में गाय बैलों की अपेक्षा घोड़े बहुत थोड़े हैं। मारवाड़ के **मालानी** और **जालोर** के घोडे प्रसिद्ध हैं।

गधा—गधा माल ढोने के काम आता है। यह राजपूताने में सर्वत्र ही मिलता है। गधा पालने में खर्च बहुत कम आंता है। जहाँ दूसरे किसी जानवर के चरने के लिये कुछ न होगा वहाँ गधा चरता दिखाई देता है।

भेड़-बकरी—भेड़-बकरी सूखे प्रान्त के जानवर हैं। उनके लिये शुष्क (सूखी) हवा, काँटेदार झाड़ियों के सूखे पत्ते और छोटी घास बड़ी लाभदायक होती है। इस कारण भेड़-बकरियाँ राजपूताने के पश्चिमी हिस्सों में **मारवाड़** और **बीकानेर** में बहुत पाली जाती हैं। राजपूताना गर्म देश होने के कारण भेड़ की अपेक्षा बकरियाँ अधिक होती हैं और भेड़ की ऊन भी इतनी मुलायम और अच्छी नहीं होती जैसी सर्द मुल्कों में होती है। भेड़-बकरियों का दूध पीते हैं और उनकी ऊन या बाल काट कर कम्बल, लोइयाँ और गरम कपड़े बनाते हैं। मांस के लिये प्रति दिन राजपूताने में कई भेड़-बकरे कटते हैं। बहुत सी भेड़-बकरियाँ दूसरे देशों में भी भेजी जाती हैं। इनकी खाल और हड्डियाँ भी काम आती हैं।

ऊँट—यह एक रेगिस्तान का मुख्य पशु है। जिस प्रकार बिना जहाज़ के पानी में सफर नहीं कर सकते उसी प्रकार बिना ऊँट के मरुस्थल में यात्रा करना बहुत कठिन है। इसी कारण ऊँट 'रेगिस्तान का जहाज़' कहलाता है।

ऊँट

इस चित्र मे ऊँट क्या कर रहे है ?

(Photo by the Author)

ऊँट की जन्म-भूमि और जीवन-भूमि रेगिस्तान ही है। ऊँट की बनावट भी सर्व प्रकार से रेगिस्तान के लायक है। उसके चौडे और गद्देदार पाँव रेत में नहीं धँसते इस कारण वह रेत में खूब चल सकता है। अच्छा ऊँट एक रात

में करीब करीब सौ-सवासौ मील की दौड लगा सकता है। पुराने समय में जब रेल नहीं चली थी एक जगह से दूसरी जगह खबरें सांडणी (मादा ऊँट) सवारों के हाथ भेजी जाती थीं। ऊँट का मुँह अन्दर से कडा होता है इस कारण वह काँटेदार झाड़ियों की पत्तियाँ खा कर रहता है। वह कई दिनों तक बिना पानी और खुराक के रह सकता है। ऐसी दशा में उसकी थुई कम पड़ जाती है और खुराक मिलने पर वह फिर बड़ी हो जाती है। उसकी गर्दन और नाक ऐसी होती है कि आँधी आने पर वह अपनी गर्दन को ज़मीन पर सपाट रख देता है और अपनी नाक बन्द कर लेता है जिससे नाक में रेत घुसने न पाए।

ऊँट सवारी के काम आता है, अपनी पीठ पर माल ढोता है, गाडी खींचता है, हल चलाता है, गहरे कुओं से पानी खींचता है। उसका दूध पीने के तथा दवाई के काम आता है। उसके बालों के कम्बल और नमदे अच्छे बनते हैं। खाल के बड़े बडे कुप्पे बनाए जाते हैं। पश्चिमी राजपूताने में जहाँ मरुस्थल है यह बहुत पाया जाता है। **जैसलमेर** और **बीकानेर** के ऊँट बहुत प्रसिद्ध होते हैं।

गाय, बैल, घोड़े और ऊँट के खरीदने तथा बेचने के लिये राजपूताने में साल भर में कई मेले लग जाते हैं जहाँ दूर-दूर के देशों से मनुष्य इन जानवरों को खरीदने आते हैं। *अजमेर के पास **पुष्कर**, मारवाड में तिल-

*इन शहरो के लिये तथा इस अध्याय में आई हुई अन्य जगहो के लिये नकशा न० १ और १२ देखो।

वाडा और पर्वतसर, बीकानेर, धोलपुर, अलवर और भरतपुर के पशु-मेले प्रसिद्ध हैं ।

जालोर का घोडा

१९३४ साल मे परवतसर के पशुमेले मे आया हुआ सब से उमदा घोडा
(Photo by the courtesy of V H Thattey)

प्रश्न

१—कौन सा पालतू जानवर किसान के बहुत उपयोगी है और किस प्रकार? वह राजपूताने में कहाँ कहाँ पाया जाता है?

२—ऊँट रेगिस्तान का मुख्य जानवर क्यो है? वह रेगिस्तान का जहाज़ क्यो कहलाया?

३—भेड़-बकरियों से मनुष्य को क्या लाभ होता है और वे राजपूताने में अधिकतर कहाँ पाई जाती हैं ?

४—'गाय और उसका उपयोग' इस विषय पर एक छोटा सा लेख लिखो। अंत में यह लिखो कि राजपूताने में अच्छी नस्ल की गायें कहाँ होती हैं।

५—कौन कौन जंगली हिंसक जानवर राजपूताने में मिलते हैं और कहाँ? उनमें से तुमने कौन से देखे हैं ?

६—राजपूताने में अधिकतर कौन से जानवरों का शिकार होता है ? उस शिकार का क्या किया जाता है ?

अभ्यास

'हमारे देश के जानवर और उनका उपयोग' इस विषय में तुम्हें जितने चित्र मिलें उनको इकट्ठा करो और अपने चित्रमय भूगोल में चिपका दो।

आठवाँ अध्याय

खनिज पदार्थ

मनुष्य को जितनी वस्तुओं की ज़रूरत होती है उनमें से कई वह खेती करके पैदा कर लेता है, कई जानवरों से उसे मिल जाती हैं और कई ज़मीन खोद कर निकाली जाती है। जो पदार्थ ज़मीन खोद कर निकाला जाता है उसे **धातु** अथवा **खनिज पदार्थ** कहते हैं और जिस जगह से निकाला जाता है उसे **खान** कहते हैं। मकान बनाने का पत्थर, बरतन, लोहे का सामान, चाँदी सोने के जेवर ये सब कहाँ से आते हैं ? ज़मीन की सतह के नीचे से खोद कर उन्हे निकालना पडता है। जैसी हम वस्तुएँ बनी हुई तैयार देखते हैं वैसी वे ज़मीन में नही मिलतीं, परंतु मिट्टी कंकर में मिली हुई ठोस रूप मे होती है। पत्थर को बाहर निकाल कर घडना पडता है और अन्य धातुओं को आग में गला कर साफ करना पडता है। फिर कहीं वे काम आती है।

राजपूताने में खनिज पदार्थ बहुत हैं परन्तु वे सब निकाले नहीं जाते क्योंकि बाहर से सस्ते दामो मे बहुत सी धातुएँ अपने यहाँ आती हैं जैसे लोहे का सामान, बरतन बनाने के लिये ताँबे, पीतल की पतली मोटी चद्दरें इत्यादि। अपने यहाँ वे ही खनिज पदार्थ अधिक निकाले जाते हैं कि जो अन्य देशों में कम पाये जाते हैं या बाहर से आकर महँगे पडते हैं।

राजपूताना पहाड़ी और पथरीला होने के कारण यहाँ कई प्रकार का पत्थर बहुतायत से पाया जाता है। उनमें **मारवाड़, बीकानेर** का लाल पीले रंग का इमारती पत्थर, मारवाड़ में **मकराने** का संगमरमर, (चिकना
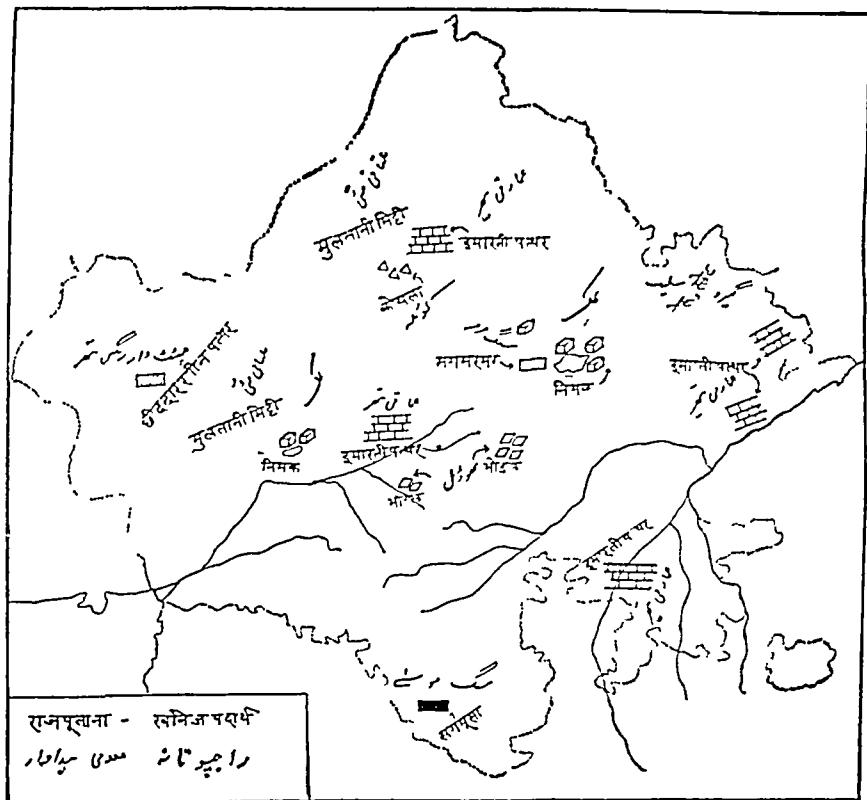
नकशा न० १०

सफेद पत्थर) **जैसलमेर** का छींटदार रंगीन पत्थर, **डूँगरपुर** का संगमूसा (चिकना काला पत्थर) बहुत प्रसिद्ध हैं। रियासत बूँदी में एक प्रकार का पत्थर निकलता है जिसको पीस कर सीमेन्ट (Cement) बनाया जाता है।

आजकल मकान, नल, पुल वगैरः बनाने में सीमेन्ट काम में बहुत लाया जाता है।
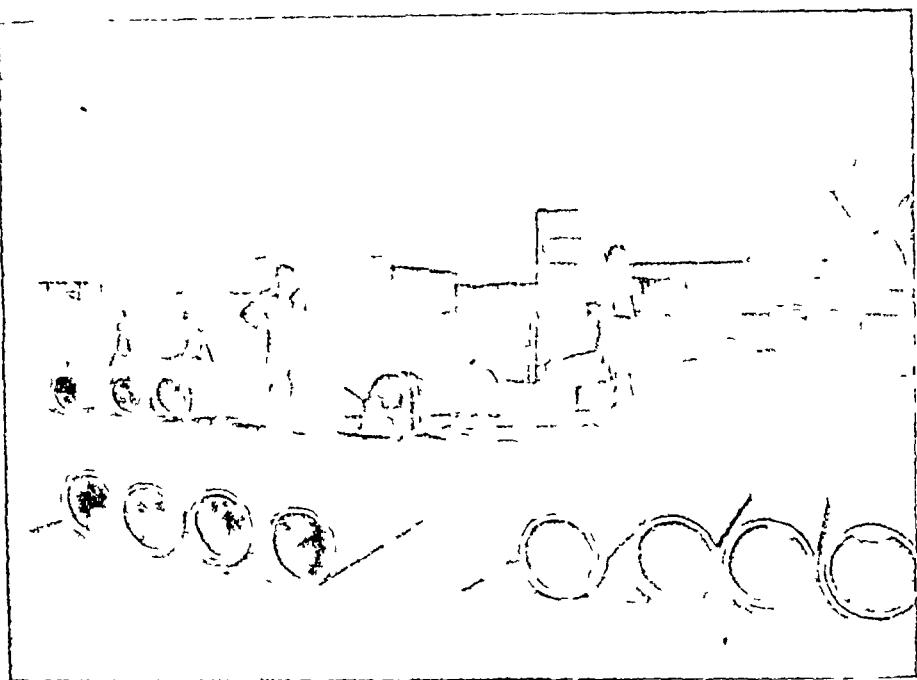
जोधपुर में सीमेंट के नल बनाने का कारखाना। इसमें बूँदी का सीमेन्ट काम में लाया जाता है

(Photo by the Authoı by kınd permıssıon of the Indıan Hume Pıpe Company Ltd)

बीकानेर में पत्थर के कोयले की बहुत खानें हैं जो वहाँ से बाहर भी भेजा जाता है। अजमेर-मेरवाड़ा और मारवाड़ में भोडल की बहुत सी खानें हैं जहाँ से वह बाहर भेजी जाती है बीकानेर और मारवाड़ में मुल्तानी

मिट्टी की खानें हैं और अलवर रियासत में गेरू और स्लेट की खानें है।

राजपूताने मे निमक की खानें नहीं हैं परन्तु यहाँ खारे पानी का बहुत सी झीलें हैं जिनसे निमक बनाया जाता है। सब झीलों में साँभर झील
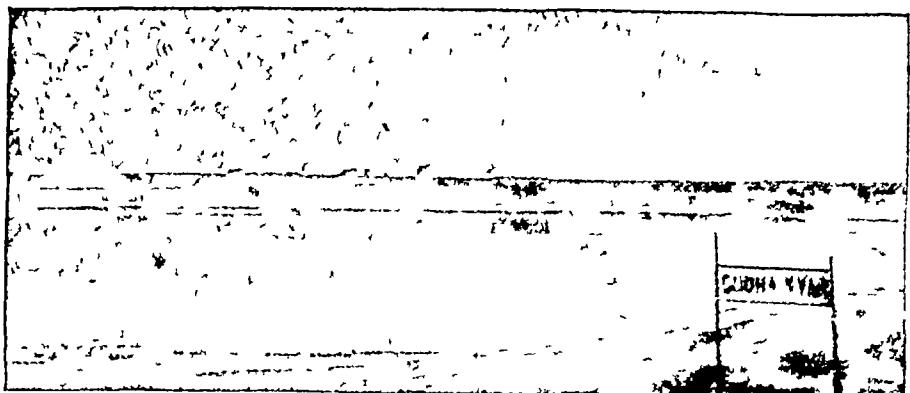
साँभर झील का एक दृश्य

(Photo by the Author)

(देखो, बाई तरफ बहुत दूर एक पुल-सा दिखाई देता है। वह पुल नहीं है। किन्तु निमक के टीले है और उनपर रेल पडी हुई है। टीलो मे से निमक निकाल निकाल कर छोटे छोटे डिब्बो मे भर दिया जाता है और स्टेशन पर भेज दिया जाता है। सामने क्यार मे झील का पानी भरा रक्खा है जो सूखने पर निमक बन जावेगा।)

सबसे बड़ी और प्रसिद्ध है। उसका कुछ हिस्सा मारवाड (जोधपुर) में और कुछ जयपुर रियासत में है। साँभर को छोडकर मारवाड में पचभद्रा और डीडवाणा की झीलों में भी निमक बनाया जाता है। निमक बनाने का सब प्रबन्ध भारत सरकार के अधीन है। जोधपुर और जयपुर रियासतों को प्रति-वर्ष कई मन निमक और कई लाख रुपये भारत सरकार से मिलते है।

प्रश्न

१--राजपूताने मे कोन सा खनिज पदार्थ सबसे अधिक निकलता है और किस जगह ?

२--राजपूताने में बहुत से खनिज पदार्थ होने पर भी वहाँ उनकी खानें क्यो नही हैं ?

३--निमक कैसे बनता है और राजपूताने में वह किस किस जगह बनाया जाता है ?

४--गेरू, मुलतानी मिट्टी, स्लेट, भोडल, सगमूसा और सगमरमर की खानें राजपूताने में कहाँ है ?

५--न० १ का पतला नकशा १० नम्बर के नकशे पर बराबर रख दो और बताओ कि मारवाड में तथा बीकानेर में कौन से खनिज पदार्थ निकलते हैं ।

नौवाँ अध्याय

आबादी और मुख्य व्यवसाय

राजपूताने मे पहिले आजकल की अपेक्षा बहुत कम आबादी थी। परन्तु राजपूत राजाओं के यहाँ आने पर और अपने राज्य कायम करने पर आबादी धीरे-धीरे बढ़ने लगी। प्रति दसवर्ष **मनुष्य-गणना** (Census) हुआ करती है। किस जगह घनी आबादी है, कहाँ बिरली है, पुरुष कितने, स्त्रियाँ कितनी, लोगों के पेशे कौन से, धर्म कौन सा इत्यादि अनेक बातें इस मनुष्य-गणना से हमें ज्ञात होती हैं। गत मनुष्य-गणना सन् १९३१ मे हुई थी।

जितने मनुष्य सारे राजपूताने में रहते हैं यदि वे सब देश भर में सर्वत्र एक से फैल जायँ तो प्रति वर्गमील ९० मनुष्य पड़ें। परन्तु हम जानते है कि आबादी सर्वत्र एक सी नहीं है। कही बडे-बड़े नगर हैं जहाँ जन-संख्या बहुत है, कहीं बड़े-बड़े गाँव हैं और वे पास-पास बसे हुए हैं, कही दूर-दूर छोटे-छोटे गाँव बसे हुए हैं और कहीं मीलों तक मनुष्य नज़र नही आता। मनुष्य की पहली आवश्यकता अपना गुज़र है और वह उसी जगह रहना पसंद करेगा जहाँ कुछ व्यवसाय करके उसका गुज़र चले और वह सुरक्षित रहे।

राजपूताना उपजाऊ देश नही है। उसका आधे से अधिक हिस्सा रेगिस्तान है फिर भी राजपूताने में प्रति सैकडा लगभग ८० मनुष्य खेती

करके और पशु पाल कर अपना पेट पालते है। शेष २० मनुष्य दस्तकारी, व्यापार, नौकरी तथा अन्य व्यवसाय करके अपना निर्वाह चलाते हैं।

जो लोग खेती करते हैं या पशु पालते हैं वे किसी एक मुख्य स्थान पर सब के सब आबादी बनाकर नहीं रहते। वे अपने खेतों के अथवा चरागाहों के समीप घास-फूस की तथा मिट्टी, पत्थर आदि की छोटी-छोटी झोंपड़ियाँ बनाकर रहते हैं जिसे गॉव कहते हैं। गाँव में रहने से उनको अपने खेतों की तथा पशुओं की देख-भाल करने में बडा सुभीता रहता है। राजपूताने के अधिकतर लोगों के खेती करने और पशु पालने में ही लगे रहने के कारण आबादी शहरों की अपेक्षा गॉवों में बिखरी रहती है।

तुम जानते हो कि राजपूताने में भूमि सर्वत्र एकसी नहीं है; कही पहाडी, कहीं कंकरीली, कही रेतीली और कहीं चिकनी और उपजाऊ है। दूसरी बात यह है कि वर्षा सर्वत्र एक सी नहीं है, कहीं अच्छी, कही कम और कहीं बिलकुल ही नहीं होती। ऐसी दशा में खेती सर्वत्र एक सी ही नहीं होती। जहॉ भूमि सम-चौरस और उपजाऊ है और वर्षा भी ठीक होती है या सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध है ऐसी जगह आबादी घनी होती है और वहॉ गॉव भी बडे-बडे और पास-पास होते हैं। परन्तु जहॉ भूमि अच्छी होने पर भी वर्षा की कमी है और सिंचाई का कुछ भी साधन नहीं है ऐसी जगह खेती नहीं हो सकती है। केवल थोडी बहुत घास पैदा हो जाती है जिस पर गाय, भेड, बकरी आदि पशु पालकर मनुष्य अपना गुज़ारा चला लेते हैं। ऐसी जगह गॉव छोटे छोटे और दूर दूर होते हैं। पहाड़ी मुल्कों में वर्षा अच्छी होने पर भी खेती के अभाव के कारण आबादी बहुत थोड़ी होती है।

राजपूताने की आबादी का नकशा देखो। अरवली पहाड के पूर्वी हिस्से में सब से अधिक आबादी है और उसमें अजमेर-मेरवाडा और उत्तरी-पूर्वी कोने में अलवर, भरतपुर और धोलपुर रियासतों में सबसे घनी आबादी है।
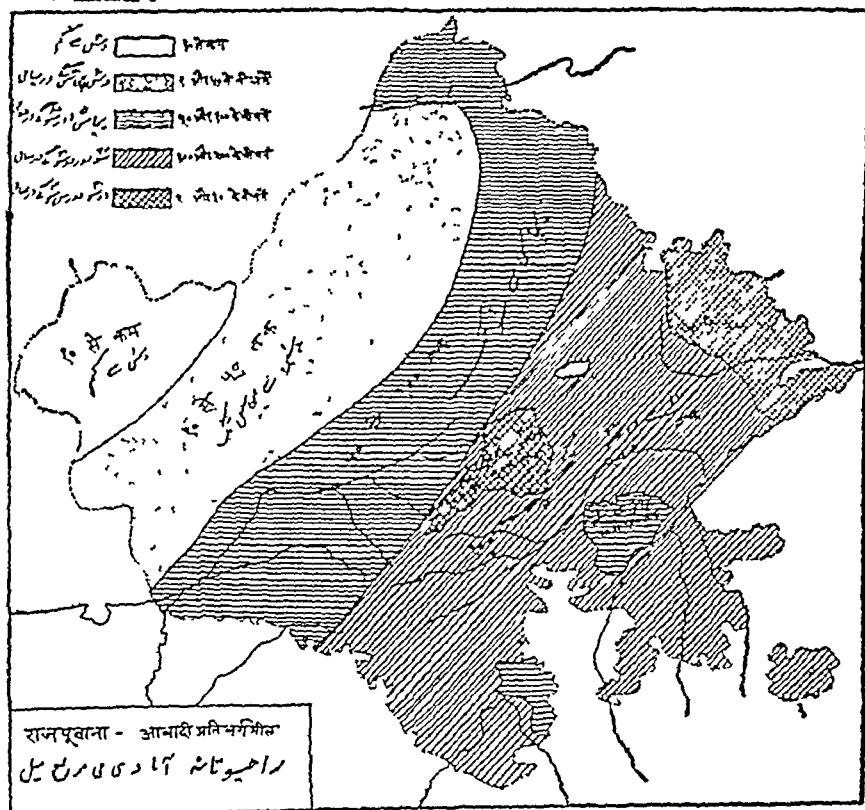
नकशा न० ११

अरवली पहाड़ के दक्षिणी पूर्वी भाग मे वर्षा अच्छी होती है फिर भी वहाँ भूमि पठारी और पथरीली होने के कारण आबादी उत्तर पूर्व की अपेक्षा कम है। बूँदी-प्रतापगढ़ रियासतों में आबादी बहुत थोडी है। क्या तुम बता सकते हो क्यों ?

अरवली पहाड के पश्चिमी ओर वर्षा की कमी के कारण और सिंचाई का प्रबन्ध कम होने के कारण आबादी पूर्वी भाग की अपेक्षा कम है। परन्तु वहाँ लूनी नदी और उसकी सहायक नदियों की घाटियों में जहाँ बाँध बाँध कर सिंचाई का थोडा प्रबन्ध किया गया है और बीकानेर रियासत के उत्तरी भाग में जहाँ घग्गर नदी का बेसिन है और जहाँ गंगा नहर से सिंचाई होती है वहाँ आबादी थोडी बहुत ठीक है। ज्यों ज्यों हम पश्चिम की ओर बढते हैं
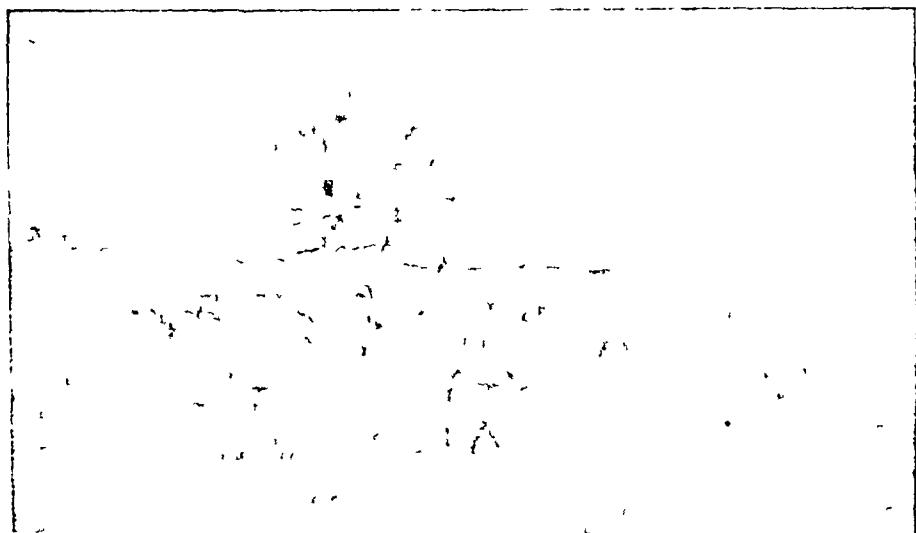
पश्चिमी राजपूताना में एक सर्वसाधारण दृश्य

(Photo by the authoı)

वर्षा और पैदावार कम होती जाती है। परन्तु कई जगह घास अच्छी पैदा हो जाती है। इस हिस्से में लोग अधिकतर गाय, भेड, बकरी पालकर अपना निर्वाह करते हैं। पूर्व की ओर जहाँ थोडी बहुत घास होती है गाय-बैल अधिक

पाले जाते है और पश्चिम की ओर जहाँ छोटी-छोटी घास होती है और हवा सूखी है वहाँ भेड़-बकरियों के झुंड के झुंड चरते दिखाई देते हैं। यदि किसी साल जो थोडी बहुत वर्षा वहाँ होती है वह भी न हो तो यह देश सूखा पड़ जाता है और फिर घास भी पैदा नहीं होती। इस दशा में यहाँ के जाट, गूजर आदि अपने मवेशियों को लेकर, मालवा, संयुक्तप्रान्त, गुजरात आदि प्रान्तों में चले जाते हैं और दूसरी साल वर्षा के होने पर लौट आते हैं। बिलकुल पश्चिमी ओर लोग ऊँट अधिक पालते हैं। क्या तुम बता सकते हो क्यों ?

प्रश्न

१—किन-किन बातो पर किसी एक देश की आबादी निर्भर होती है ?

२—पश्चिमी राजपूताने में आबादी अधिक है या पूर्वी ? और क्यो ?

३—पूर्वी राजपूताने में आबादी दक्षिण की ओर अधिक है या उत्तर की ओर और क्यो ?

४—शहरो में गाँवो की अपेक्षा आबादी अधिक क्यो होती है ?

५—एक गाँव में चित्रकार और लुहार दोनो जाकर रहें तो बताओ किसका गुजारा ठीक चलेगा और क्यो ?

६—राजपूताने के निवासी अधिकतर अपना निर्वाह किस प्रकार करते है ?

७—राजपूताने के कौन से भाग में लोग मवेशी पालते है और क्यो ?

८—मनुष्य-गणना से तुम क्या समझते हो ? अब मनुष्य-गणना कब होगी ? उससे हमें क्या लाभ होता है ?

दसवाँ अध्याय

अन्य व्यवसाय और व्यापार

गत अध्याय में तुम्हें यह बता दिया कि राजपूताने के अधिकतर लोग खेती करके और पशु पालकर अपना निर्वाह चलाते हैं और वे अधिकतर गाँवों में रहते हैं। गाँवों में किसानों के अतिरिक्त लुहार, बढ़ई, कुम्हार आदि भी रहते हैं जिनसे किसानों की साधारण आवश्यकताएँ दूर हो जाती हैं। किसान घी, ऊन और फसल तैयार होने पर अपने साल भर के खर्चे के लिये अनाज निकाल कर बाद बचे हुए को अपने पास के बाज़ारों में बेच देता है या गाँव के बनिये को दे देता है और उसके बदले कपड़ा, बरतन, औज़ार, तेल, दियासलाई आदि अनेक आवश्यक वस्तुएँ खरीद लेता है। वस्तुओं की ऐसी बिक्री-खरीद को **व्यापार** कहते हैं। कई मनुष्य व्यापार करके अपना जीवन चलाते हैं। पश्चिमोत्तर राजपूताने में मरुस्थल होने के कारण खेती-बारी अच्छी नहीं हो सकती और वहाँ जीवन चलाने का कोई अन्य साधन नहीं है इस कारण कई लोग बड़े शहरों में जाकर व्यापारी बन गए हैं, वे बाहर मारवाड़ी के नाम से प्रसिद्ध हैं।

व्यापार के अतिरिक्त राजपूताने के कई लोग जंगलों की पैदावार लकड़ी, गोंद आदि इकट्ठा करके, कई खानों में काम करके, कई सरकारी या रिया-

सतों की नौकरी करके, कई दस्तकारी और मिलों या कारखानों में मशीनों की सहायता से तरह तरह की वस्तुएँ बना कर या अन्य पेशा करके अपना गुज़र करते हैं। प्रायः प्रत्येक बड़े शहर में लुहार, सुनार, बढ़ई, रंगरेज़ आदि कई अन्य पेशे करने वाले मनुष्य रहते हैं जो वस्तुएँ बनाकर लोगों की ज़रूरतें पूरी कर देते हैं।

हमारे देश में जितने नगर या शहर हैं उनमें से कई पुराने समय में राजाओं की बसाई हुई राजधानियाँ थीं। भाँति भाँति के कुशल कारीगर इन राजधानियों में आकर राजाश्रय लिया करते थे। वे धातुओं के बरतन, लकड़ी और पत्थर की नक्काशी, हाँथीदाँत पर चित्रकारी और बेल बूटे तथा सजावट की कई वस्तुएँ बनाया करते थे। आजकल राजाश्रय बहुत ही कम हो गया है फिर भी कई रियासतों में पुरानी कारीगरी अब भी कायम है और वहाँ की बनी हुई वस्तुएँ दूर-दूर देशों में भेजी जाती हैं।

राजपूताने में होने वाली मुख्य दस्तकारियाँ निम्नलिखित हैं—

सूती कपड़े की बुनाई—लगभग सब गाँवों में मोटा सूती कपड़ा बुना जाता है परन्तु कोटे के महीन सूती दुपट्टे, मलमल और डोरिये बहुत अच्छे होते हैं। आजकल कारखानों में या मिलों में मशीन द्वारा कपड़ा बुना जाता है। **ब्यावर, कोटा** और **किशनगढ़** में कपास के कारखाने बहुत हैं जहाँ कई प्रकार का महीन, मोटा सूती कपड़ा बनता है।

ऊनी कपड़े की बुनाई—तुमने पढ़ा है कि राजपूताने में विशेष कर बीकानेर, मारवाड़ आदि पश्चिमी रियासतों में लोग भेड़ बहुत पालते हैं। भेड़ों से ऊन निकाल कर, उसे कातकर मोटा कपड़ा बनाया जाता है।

मारवाड़ के कम्बल, बीकानेर की लोइयाँ, नमदे, गलीचे और जयपुर और **टोंक** के नमदे प्रसिद्ध हैं। आजकल बहुत सारी ऊन बाहर के देशों में भेजी जाती है।

कपड़ों की रंगाई और छपाई—रँगाई और छपाई करीब करीब सब शहरों में होती है परन्तु मारवाड में **पीपाड़** और **पाली** की, मेवाड में **चित्तौड़** की, जैपुर में **सांगानेर** की और कोटा में बारां की छपाई बहुत अच्छी होती है। **जोधपुर** और **कोटे** की चूँदड़ी की बंदिश और रँगाई बहुत प्रसिद्ध है।
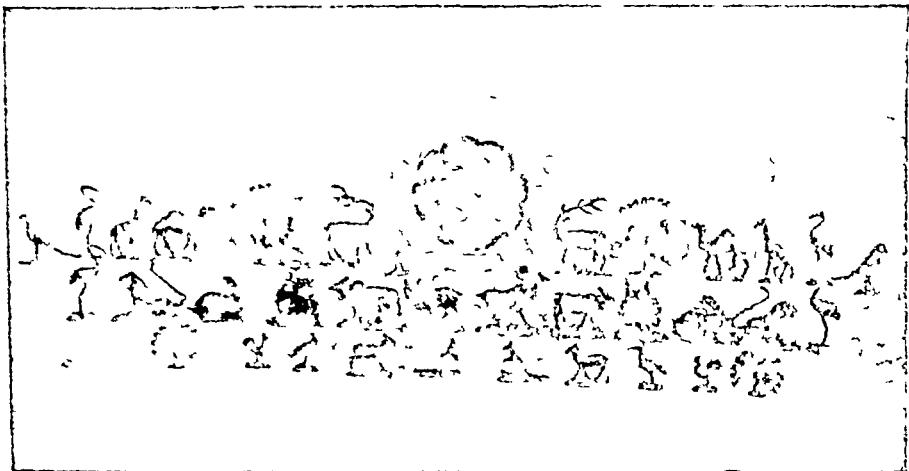
जयपुर में बने हुए पीतल के खिलौने

देखो, बीच में एक थाल रक्खी हुई है जिसपर मीने का काम किया हुआ है।

(Photo by the Author)

ताँबे-पीतल के बरतन और खिलौने—ताँबे-पीतल के बरतन

लगभग सब शहरों में आवश्यकतानुसार बनाए जाते हैं परन्तु **जयपुर** के बने हुए पीतल के छोटे बड़े बरतन और खिलौने बहुत प्रसिद्ध होते हैं और वे दूर-दूर देशों में भेजे जाते हैं।

पत्थर की चीजें—पत्थर के काम करने वाले कारीगर सब शहरों में मिलते हैं परन्तु **डूंगरपूर** में काले पत्थर की, **मकराने** में संगमरमर की, **करोली** में लाल पत्थर की, **जेसलमेर** में छींटदार रंगीन पत्थर की वस्तुएँ बड़ी अच्छी बनती हैं। **जयपुर** में संगमरमर की मूर्तियाँ अच्छी बनती हैं।

हाथीदाँत की चूड़ियाँ और वस्तुएँ—राजपूताने में विशेष कर पश्चिम की ओर हाथीदाँत की चूडियाँ पहिनने का रिवाज है। इस कारण कई जगह हाथीदाँत की चूड़ियाँ बहुत बनाई जाती हैं और बचे हुए दाँत में से छोटे-छोटे खिलौने बनाए जाते हैं। मारवाड़ में **मेड़ता, बीकानेर, अलवर** और **भरतपुर** में हाथीदाँत का काम अच्छा होता है।

इस अध्याय में तुमने यह पढा है कि कई मनुष्य व्यापार करके अपना गुज़र चलाते हैं। व्यापारी अधिकतर शहरों में रहते हैं जहाँ वे अपने देश में न बनने वाला माल दूसरे मुल्कों से मँगा लेते हैं और अपने देश मे ज़रूरत से अधिक पैदा होने वाला माल बाहर भेजते हैं। शहरों में माल लाने और ले जाने का बडा सुभीता रहता है इसी कारण शहरों में व्यापार बहुत चलता है। राजपूताने में से **रूई, तिलहन, मवेशी, भेड़-बकरियाँ, ऊँट, घी, ऊन, चमड़ा, हड्डियाँ, ऊनी कपड़े, कम्बल, लोइयाँ, रंगीन छपे कपड़े, इमारती पत्थर, संगमरमर, संगमूसा, भोडल, निमक** इत्यादि बाहर भेजे जाते हैं। और उनके बदले **गेहूँ, चावल, शक्कर,**

महीन सूती, रेशमी और ऊनी कपड़े, मिट्टी का तेल, दियासलाई, काग़ज़, औजार, तॉबे, पीतल और लोहे का सामान इत्यादि कई वस्तुएँ वाहर से मॅगाई जाती हैं। अपने यहॉ वाहर से इतनी वस्तुएँ आती हैं कि उन सबको एक ही साथ गिनाना वडा कठिन है।

प्रश्न

१—व्यापार किसे कहते हैं? ज्यादातर व्यापार किस जगह होता है और क्यो?

२—तुम्हारे गॉव या शहर में ऐसे कौन से व्यापार हैं कि जो

(अ) उसी गॉव या शहर में ही चल सकें।

(व) जो अन्य शहरो में भी चल सकें।

(क) जो अन्य गॉवो में चल सकें।

३—अपने कमरे की जॉच करो और वताओ—

(अ) कौन सी वस्तुएँ तुम्हारे गॉव या शहर में वनी हुई हैं?

(व) कौन सी वस्तुएँ राजपूताने में वनी हुई हैं?

(क) कौन सी वस्तुएँ वाहर से मॅगवाई हुई हैं?

अभ्यास

१—जितने प्रकार के व्यवसाय के चित्र तुम्हें मिलें उनको इकट्ठा करो और अपने चित्रमय भूगोल में चिपका दो, और लिखो "हमारे देश के व्यवसाय"।

२× —तुम्हारे देश में जितने प्रकार का कपडा तैयार होता है उनके टुकडे इकट्ठा करो और अपने चित्रमय भूगोल में चिपका दो और लिखो "हमारे देश में होने वाले कपडे।"

× दर्जी के यहॉ तुम्हें कई प्रकार के कपडो के टुकडे मिलेंगे जो अपने देश में वने हुए हैं।

ग्यारहवाँ अध्याय

आने-जाने के साधन तथा मार्ग

साधन—पुराने समय में वर्तमान समय की सी आराम देनेवाली और तेज़ चलनेवाली सवारियाँ नही थी। परन्तु उस समय से ही मनुष्य ने अपने बुद्धि-बल से कई जानवर पालतू बनाकर अपने काम लिये हैं। सौदागर लोग उन दिनों मे ऊँट, बैल, घोड़ों पर तथा गाड़ियों में माल लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाया करते थे। जिस जगह रेल बनी नही है वहाँ वही पुरानी सवारियाँ अब भी काम आती हैं* इन सवारियों मे बहुत समय लगता है, खर्चा अधिक पड़ता है और रास्ते में चोर डाकुओं से लुट जाने का भी बहुत डर रहता है। आजकल पाश्चात्य देशों की वैज्ञानिक सहायता के कारण एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिये आराम देनेवाले और सुगमता से शीघ्र पहुँचानेवाले कई साधन उपलब्ध हैं जैसे मोटर गाड़ियाँ, बाईसिकलें, रेलगाड़ियाँ इत्यादि। रेलगाडी में देश के एक कोने से दूसरे कोने तक सैकडों मील की यात्रा थोड़े समय में, कम खर्च में और बहुत आराम के साथ हो सकती है। रास्ते में चोर-डाकुओं का कुछ भी भय नहीं रहता है। रेल के

* तुम्हारे चित्रमय भूगोल में तुमने 'पशु और उनके उपयोग' इस विषय पर कई चित्र इकट्ठे किये होगे।

बदौलत अकाल के समय दूसरे देशो से अनाज मँगवाकर बहुत सी प्राणहानि भी बच सकती है ।
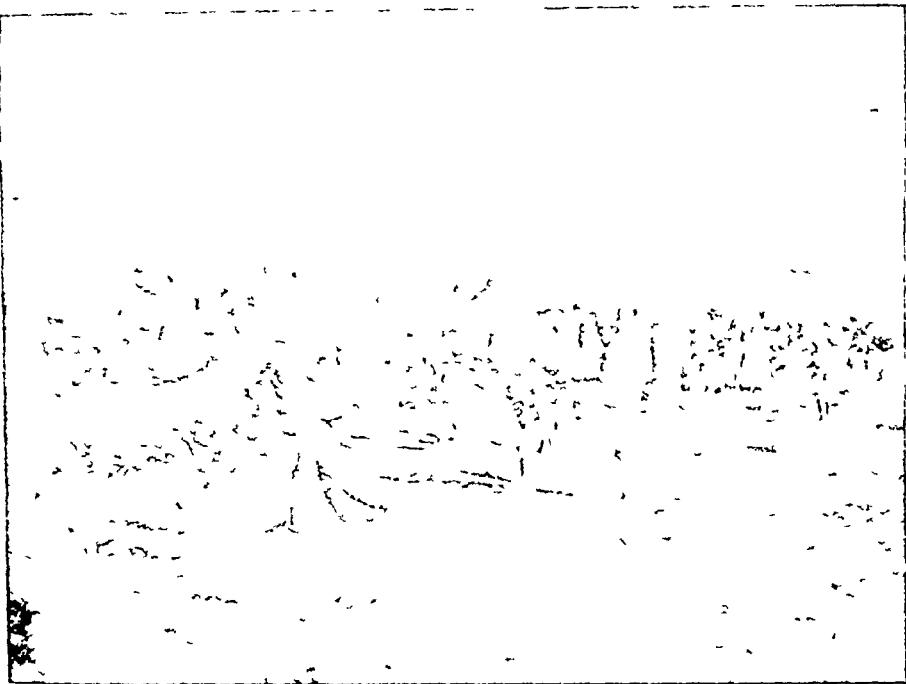
(Photo by the courtesy of K Prem Singh)

देखो, यह चित्र मध्य राजपूताना मे एक बरात का है । जिस जगह रेलमार्ग नही है वहाँ अभीतक पुराने ढग से ही आवागमन होता है ।

केवल स्थल पर ही नही परन्तु हवा में भी पक्षियों की भाँति उडने के साधन मनुष्य ने बनाए हैं जिन्हें हवाई जहाज़ कहते हैं । हवाई जहाज़ों द्वारा हजारों मील की यात्रा बहुत ही सुगमता से और अल्प समय में हो सकती है ।

मार्ग—पुराने समय में राजपूताने में पक्की सड़कें बहुत कम थीं । एक

गॉव से दूसरे गाँव में अधिकतर पगडण्डियों से अथवा कच्ची सडकों से ऊँटों पर, बैलों पर या गाडियों में माल लाया और ले जाया करते थे। राजपूताने में पहिले पहल आगरे से भरतपुर, अजमेर होती हुई गुजरात काठियावाड की ओर पक्की सड़क बनाई गई। आजकल जहॉ भूमि समतल है और जहॉ लोगों का अधिक आना जाना होता है वहॉ पक्की सडकें बनाई गई हैं। दिन दिन और भी बनती जा रही हैं। इन्ही पक्की सडकों पर मोटर लारी से मुसाफिर सफर करते हैं और माल भी ढोया जाता है। राजपूताने में हिंदुस्तान के और प्रान्तों की तरह सर्वत्र मोटर का चलन दिन दिन बढ रहा है।

रेलमार्ग—रेलमार्ग बनाने में खर्चा बहुत पड़ता है। समतल भागों में जहॉ पैदावार अच्छी होती है और आबादी भी ठीक है प्रायः रेलमार्ग अधिक होते हैं। परन्तु पहाड़ी प्रदेश में, कम उपजाऊ भूमि में और विरली आबादी वाले हिस्सों में रेलमार्ग बहुत थोडे होते हैं। राजपूताने के कई बडे बडे शहर रेलमार्ग द्वारा एक दूसरे से तथा सीमान्त शहरों से संलग्न हैं। फिर भी हिन्दुस्तान के और प्रान्तों की अपेक्षा राजपूताने में रेलमार्ग थोड़े हैं। वे दिन दिन आवश्यकतानुसार बढ रहे हैं। राजपूताने के मुख्य रेलमार्ग अगले अध्याय में बताए हैं। रेलमार्ग के पतले नकशे को आबादी के नकशे पर रख दो और देखो कि आबादी और रेलमार्ग के बीच में कितना निकट सम्बन्ध है।

हवाईमार्ग—प्रति हफ्ते **इंग्लैंड** से हिन्दुस्तान में **कराची** को हवाई जहाज़ ६½ हज़ार मील की यात्रा करके सात दिन में डाक और मुसाफिर लाता है। और फिर वहॉ से उड कर **जोधपुर** होता हुआ **देहली** और आगे **कलकत्ते** की ओर जाता है। उसी प्रकार फिर **जोधपुर, कराची** होता हुआ

लौट जाता है। यूरप से हिन्दुस्तान में होता हुआ दूसरा अधिक सीधा पूर्वी हवाई मार्ग कराची से जोधपुर, नसीराबाद, इलाहाबाद, कलकत्ता होता हुआ है। इस दूसरे मार्ग से डच (हौलेण्ड देश के) और फ्रेंच हवाई जहाज़ हिन्दुस्तान में होकर गुज़रते हैं।

प्रश्न

१—पुराने समय में यात्रा किस प्रकार हुआ करती थी? आजकल किस प्रकार होती है? यात्रा के लिये वह समय अच्छा था या वर्तमान और क्यो?

२—गमनागमन का कौन सा साधन तुम्हें अच्छा लगता है और क्यो?

अभ्यास

जितने प्रकार की सवारियाँ तुम्हारे देश में है उनके चित्र खीचो अथवा इकट्ठा करो और उन्हें अपने चित्रमय भूगोल में चिपका दो और लिखो—
'हमारे देश के आवागमन के साधन'।

बारहवाँ अध्याय

मुख्य रेल-मार्ग, यात्रा और शहर

राजपूताने की मुख्य रेल बम्बई बड़ौदा ऐन्ड सेन्ट्रल इन्डिया रेलवे है। यह बी० बी० ऐन्ड सी० आई० रेलवे के संक्षिप्त नाम से प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त जोधपुर रेलवे और बीकानेर स्टेट रेलवे हैं जिनके संक्षिप्त नाम क्रमशः जे० रेलवे और बी० एस्० रेलवे हैं। चलो, हम इन रेल-मार्गों से यात्रा करें।

यात्रा पहिली—बी० बी० ऐन्ड सी० आई० रेलवे में बम्बई से देहली और आगरे तक—हम बम्बई से चल कर गुजरात में होते हुए राजपूताने में पहिले-पहल सिरोही राज्य मे घुसते हैं। इस लाइन पर आने वाला राजपूताने में पहला बडा स्टेशन **आबू रोड** है जहाँ कई मोटर-गाडियाँ **आबू पहाड़** पर जाने के लिये तैयार खडी दिखाई देती हैं। आबू पहाड आबू रोड से १८ मील दूर है। ऊँचाई के कारण वह गर्मियों में ठंडा रहता है। वहाँ कई राजा महाराजाओं की कोठियाँ बनी हुई हैं। नक्कीतलाव अचलगढ, डेलवाडा जैन मंदिर आदि यहाँ के देखने योग्य स्थान हैं। देलवाड़ा मंदिर सफेद पत्थर का बहुत खूबसूरत बना हुआ है जिसमें कई प्रकार के फूल-पत्ते और नक्काशी का काम किया हुआ है। प्रति वर्ष सैकड़ों लोग इसे देखने आते

। आबू रोड से रवाना होकर मारवाड़ जंकशन आए। यहाँ जोधपुर,
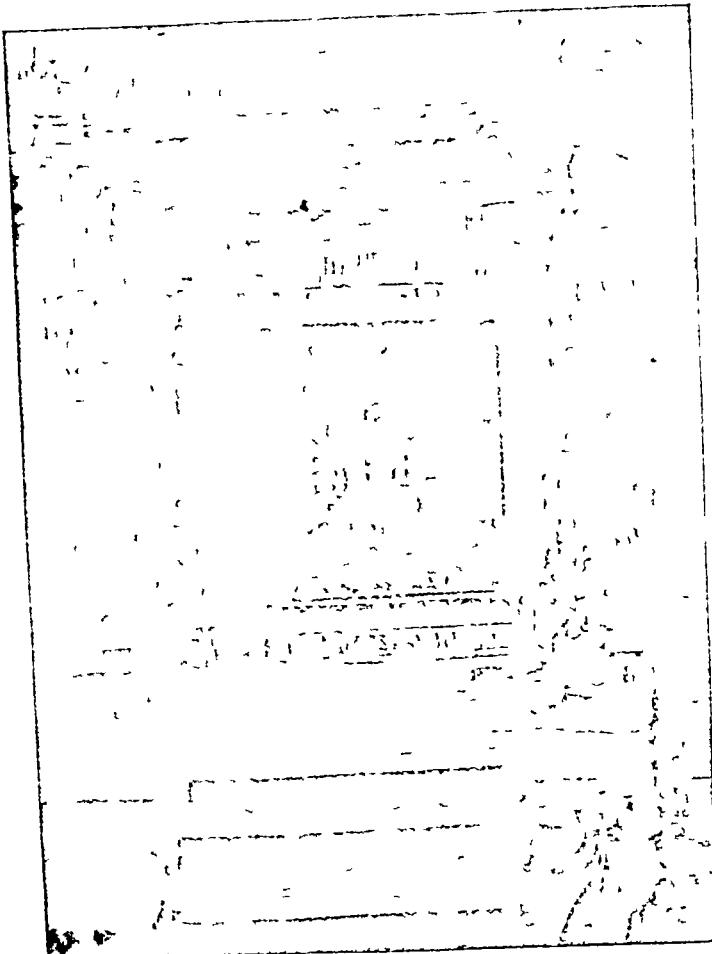
देलवाडा मन्दिर का भीतरी दृश्य

बीकानेर, कराची आदि जगह जाने वाले यात्री उतर गये। मारवाड जंकशन से आगे ब्यावर आए। यह राजपूताने की एक बडी रुई की मंडी है। यहाँ

रुई के कपड़े बनाने के कारखाने हैं। ब्यावर से चल कर **अजमेर** पहुँचे। यहाँ नसीराबाद, चित्तौड, उदयपुर आदि जगह जाने वाले यात्री उतर पड़ं।
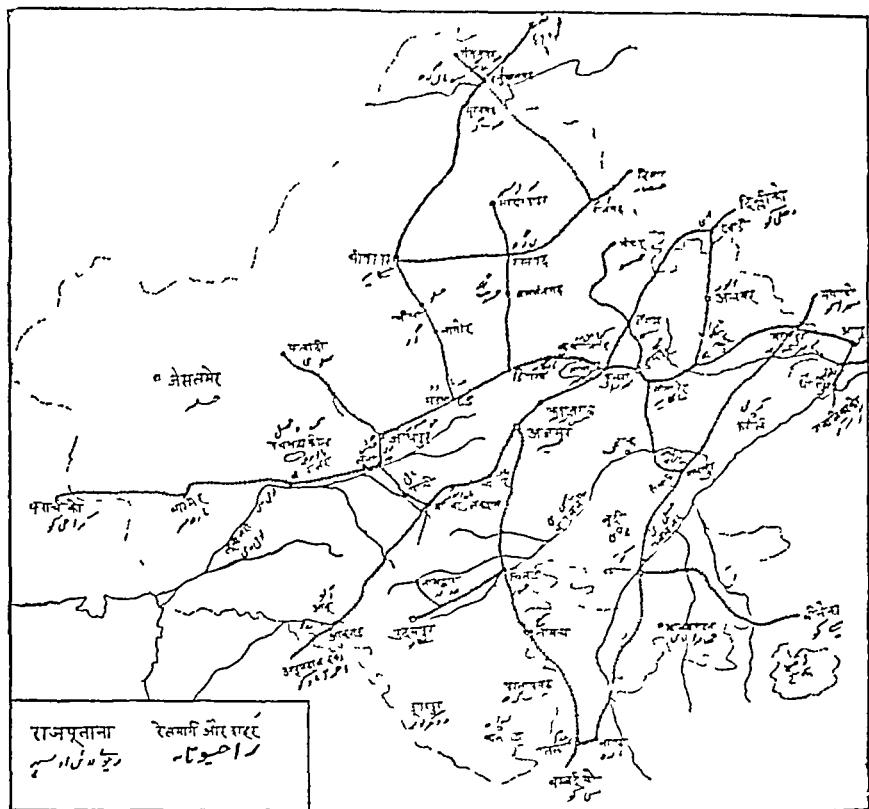
नकशा नं० १२

अजमेर—यह रेलवे का एक बड़ा केन्द्र है जहाँ रेलवे के बडे-बड़े दफ्तर और एक बड़ा कारखाना है जिसमें हज़ारों लोग काम करते हैं। यह अजमेर मेरवाड़ा की राजधानी है। ए० जी० जी० भी यहीं रहते हैं। यह नगर जन-संख्या में राजपूताने का दूसरा शहर है। यह नगर राजा अजयपाल

ने बसाया था। पुराने समय की बनी हुई कई इमारतें इसमें देखने योग्य हैं। अढाई दिन का झोंपडा, ख्वाजा साहिब का दरगाह, अकबर की मसजिद, आनासागर मशहूर स्थान हैं। अजमेर के पास **पुष्कर** नाम का हिन्दुओं का एक बडा तीर्थ है जहाँ प्रति वर्ष हज़ारों यात्री आया करते हैं। एक बडा पशु-मेला भी पुष्कर में प्रतिवर्ष लगता है जिसमें घोडे, ऊँट, बैल आदि बिकने आते हैं। अजमेर एक बडा तिजारती शहर भी है। यहाँ पक्के गोटे का काम बहुत अच्छा होता है। इसके अलावा यहाँ राजपूताने के राजा, महाराजा और सरदारों के कुमारों की पढाई के लिये मेयो कालिज है जो सफेद पत्थर का बना हुआ है।

हम अजमेर से चलकर **किशनगढ़** आए। यह रियासत की राजधानी है। यहाँ रुई की मंडी तथा सूत के कारखाने हैं। किशनगढ़ से रवाना होकर **फुलेरा जंकशन** होते हुए **जयपुर** आए। यहाँ रीगस, झूँझनू, सवाई माधोपुर आदि जगह जानेवाले मुसाफिर उतर गए। हम भी जयपुर देखने ठहर गए।

जयपुर—यह राजपूताने का सबसे बड़ा शहर है जिसे महाराज सवाई जयसिंहजी ने बसाया था। यह नगर रियासत की वर्तमान राजधानी है। शहर के आस पास पक्की दीवारें बनी हुई हैं जिसमें बड़े बड़े दरवाज़े लगे हुए हैं। सारे हिन्दुस्तान भर में ऐसा खूबसूरत शहर दूसरा कोई नहीं है। इसकी सडकें चौड़ी और सडकों से लगे मकान एक ही से मालूम होते हैं। शहर में कई इमारतें देखने योग्य हैं। इसके अतिरिक्त यह एक बड़ा तिजारती शहर भी है। यहाँ पीतल के बरतन, खिलौने, लाख के चूड़े, संगमरमर की मूर्तियाँ, ऊन के नमदे आदि बहुत अच्छे बनते हैं। शहर के बाहर रामनिवास बाग है जिसमे एक अजायबघर और चिड़ियाखाना भी है जहाँ कई प्रकार

की वस्तुएँ, जानवर और चिड़ियाएँ देखने को मिलती हैं । शहर के पास ही करीब ८ मील दूर जयपुर की पुरानी राजधानी आमेर है जहाँ पहाड़ी पर पुराना किला और महलात अच्छे बने हुए हैं ।
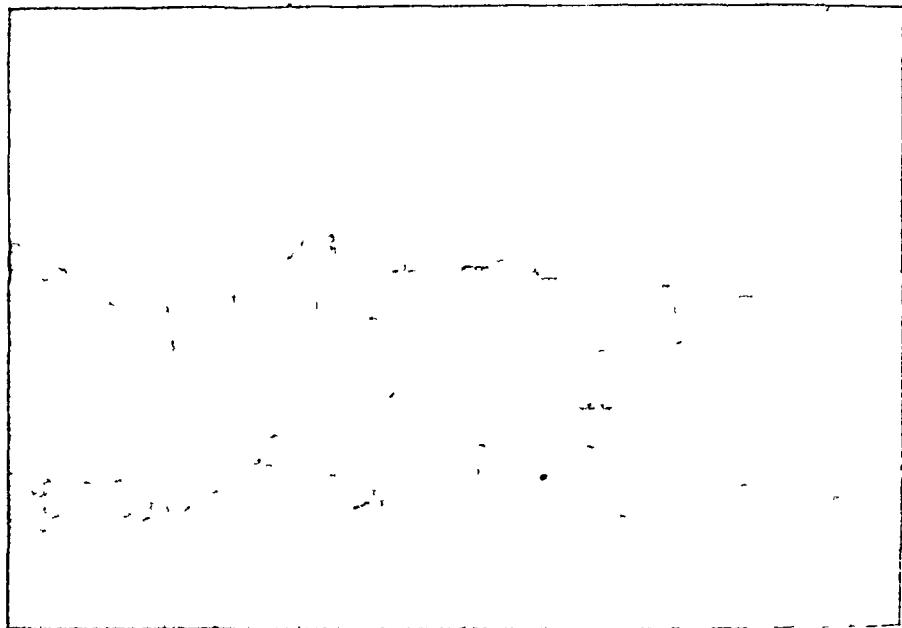
आमेर का पुराना किला

(Photo by the courtesy of R B Sulakhe)

जयपुर से चल कर **बाँदीकुई जंकशन** होते हुए **अलवर** पहुँचे । अलवर रियासत की राजधानी है । यहाँ पुराने महलात, फतहजंग का मकबरा और मथुराधीश का मन्दिर देखने योग्य हैं । यहाँ रँगाई का काम भी बहुत अच्छा होता है । अलवर से गाड़ी **देहली** को चली जाती है ।

बाँदीकुई जंकशन से रेल की एक शाख **भरतपुर** होती हुई आगरे को जाती है। **भरतपुर** जाटों की प्रसिद्ध रियासत की राजधानी है। यहाँ का किला और उसमें बने हुए महलात देखने योग्य हैं। यहाँ हाथीदाँत की चौरी, पंखे और मिट्टी के हुक्के अच्छे बनते हैं। इसके उत्तर में २१ मील दूरी पर डीग का किला और महल देखने योग्य हैं।

यात्रा दूसरी—अजमेर से उदयपुर तक—अजमेर से हम बी० बी० ऐन्ड सी० आई० रेलवे की **खंडवा** जानेवाली गाडी में रवाना हुए। अजमेर से १२ मील दूरी पर **नसीराबाद** होते हुए **चित्तौड़गढ़** पहुँचे। नसीराबाद एक अँग्रेज़ी प्रसिद्ध छावनी है। चित्तौडगढ में हम उतर गये और हमारी गाडी **रतलाम** होती हुई **खंडवा** को चली गई। चित्तौड़ विडंच नदी के किनारे एक पहाडी पर बसा हुआ है। यहाँ का किला भारतवर्ष में बहुत प्रसिद्ध है। यह किला इतना बडा है कि चित्तौड शहर उसमें बसा हुआ है। इसमें खेती भी होती है। यहाँ का कीर्तिस्तम्भ, जयस्तम्भ, राणाओं के महलात तथा कई इमारतें देखने योग्य हैं। यहाँ की छपाई भी अच्छी होती है। यह मेवाड की पुरानी राजधानी थी।

चित्तौडगढ से उदयपुर रेलवे में बैठ कर हम मेवाड की वर्तमान राजधानी उदयपुर आए। यह एक बडा रमणीय देखने योग्य स्थान पिछोला सागर (तालाव) के किनारे बसा हुआ है। पिछोला तालाव में और तीर पर कई सुन्दर इमारतें हैं जिनमें जगनिवास, जगमंदिर, जगदीश जी का मंदिर आदि देखने योग्य हैं। उदयपुर में सुनहली और रुपहली छपाई तथा लकडी के खिलौने अच्छे बनते हैं।

उदयपुर रेलवे की एक शाख मावली जंक्शन से निकल कर नाथद्वार होती हुई अरवली पहाड़ को पार करके मारवाड जंक्शन से आने वाली जोधपुर रेलवे की शाख से मिलाई गई है। **नाथद्वार** वल्लभ कुल संप्रदाय का मुख्य धर्म स्थान है जहाँ श्रीनाथजी का मंदिर है जिसके दर्शन के लिये बम्बई और गुजरात से हज़ारों यात्री प्रतिवर्ष आते हैं।

यात्रा तीसरी—भरतपुर से कोटा तक बड़ी* लाइन से—मथुरा से आने वाली बी० बी० ऐन्ड सी० आई० रेलवे की बडी लाइन की गाडी में बैठ कर हम **भरतपुर** से रवाना हुए। **बियाना** होते हुए **सवाई माधोपुर** जंक्शन पर आए। यहाँ **जयपुर** की ओर से **सांगानेर** होते हुए छोटी लाइन से आने वाले यात्री हमारी गाडी के इंतज़ार में खडे थे। यहाँ से रवाना होकर हम **कोटा** पहुँचे। यहाँ हमारी यात्रा समाप्त हुई और हमारी गाडी **रतलाम** होती हुई **बम्बई** को चली गई। यहाँ से जी० आई० पी० रेलवे की एक शाख **बाराँ** होती हुई मध्य हिन्दुस्तान में बीना तक गई है। बाराँ में कपड़े की अच्छी छपाई होती है।

कोटा—यह रियासत की राजधानी है और चम्बल नदी के किनारे बसा हुआ है। यहाँ से रुई, गेहूँ, अफीम और पत्थर बाहर जाता है। यहाँ की मलमल, डोरिये और डुपट्टे प्रसिद्ध हैं। सूती कपड़ों के कारखाने भी हैं

*रेलवे लाइन दो प्रकार की है। साढे पाँच फीट चोडी पटरी वाली बडी लाइन कहलाती है और तीन फीट तीन इंच चोडी पटरी वाली छोटी लाइन कहलाती है। कोटे से पूर्व की ओर बीना को, उत्तर की ओर मथुरा को और दक्षिण की ओर रतलाम, बम्बई, को बडी लाइन गई है।

जिनमें कई प्रकार का कपडा तैयार होता है। यहाँ की चूँदडी की बँधाई और रँगाई प्रसिद्ध है।

यात्रा चौथी—मारवाड़ जङ्क्शन से जोधपुर रेलवे में—पहिली यात्रा में हमने मारवाड जंक्शन स्टेशन देखा था। अब हम यात्रा यहीं से आरम्भ करें। देखो, वह बी० बी० ऐण्ड सी० आई० रेलवे की डाकगाडी आ गई। मुसाफिर उतर कर हमारी गाडी में आ रहे हैं। वे बीकानेर, जोधपुर, कराँची आदि जगह जाने वाले होंगे ? ओ हो ! हमारी गाडी चल दी। देखो, दोनों तरफ कैसा मैदान ही मैदान नज़र आता है। बडे बडे पेडों का पता ही नहीं। कटीले पेड, झाडियाँ और छोटी छोटी घास कही कहीं नज़र आती हैं। देखो वह एक हिरन का झुण्ड खडा है। इस प्रकार का दृश्य देखते हुए हम **पाली** होते हुए **लूनी जङ्क्शन** पहुँचे। यदि तुम्हें कराँची को जाना हो तो यहीं से जे० रेलवे की एक शाख **बारमेर** होती हुई जाती है उसमें बैठो। रास्ते में बारमेर उतर कर ऊँट या मोटर की सवारी में **जैसलमेर** जा सकते हो। जैसलमेर का किला, महलात और जैन मंदिर देखने योग्य हैं। वहाँ पत्थर की वस्तुएँ भी अच्छी बनती हैं। क्या तुम बता सकते हो क्यों ? हमारी गाडी लूनी जंक्शन से चलकर **जोधपुर** आई।

जोधपुर—यह जे० रेलवे का केन्द्र है। यहाँ रेलवे के दफ़्तर और एक कारखाना भी है जिसमें सैकडों मनुष्य काम करते हैं। राजपूताने में यह तीसरे श्रेणी का शहर है। लगभग ४०० वर्ष होने आए यह शहर राव जोधाजी ने बसाया था। शहर के आस-पास पक्की दीवारें बनी हुई हैं जिसमें बडे बडे दरवाजे हैं। शहर के बीच में एक चट्टान पर किला

है और उसमें महलात बने हुए हैं जो देखने योग्य हैं। जोधपुर मारवाड की वर्तमान राजधानी होने के कारण रियासत की बड़ी बडी कचहरियाँ यहीं हैं। यहाँ से ६ मील दूर मारवाड की पुरानी राजधानी "मंडोर" है जहाँ
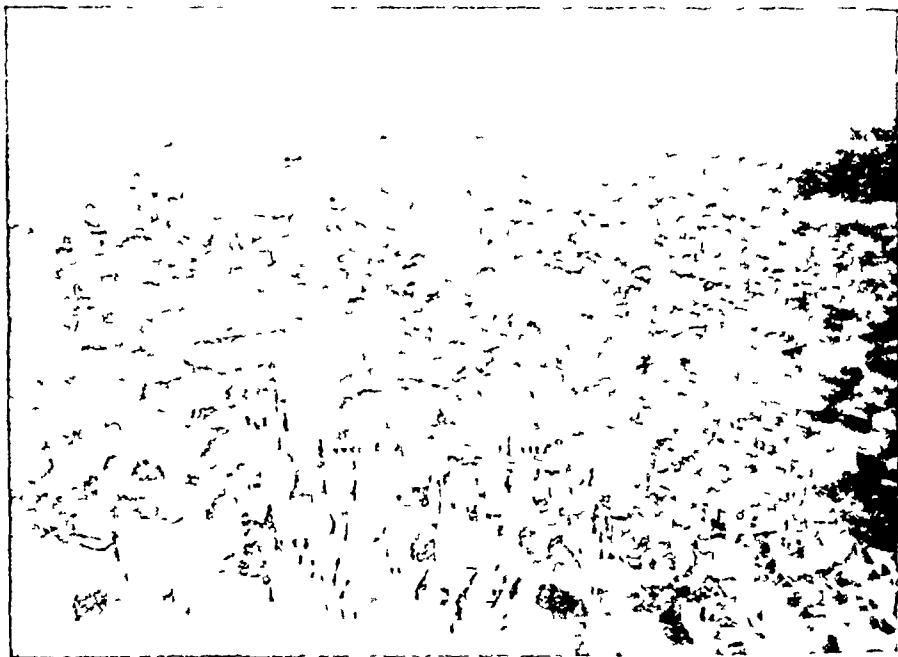
जोधपुर शहर का विहंगम दृश्य (Bird's-eye view)
(Photo by the author)
(यह चित्र जोधपुर के किले पर से लिया गया है)

एक बाग और मृत महाराजाओं की छत्रियाँ दर्शनीय है। जोधपुर के पास बालसमन्द और प्रतापसागर (कायलाना) दो बड़ी कृत्रिम झीलें हैं जिनसे शहर में पानी नलों द्वारा लाया गया है। जोधपुर के आस-पास लाल पत्थर की कई खानें हैं जहाँ से पत्थर और बडी बडी पट्टियाँ बाहर भेजी जाती हैं।

इसके अतिरिक्त हाथीदाँत के चूडे, चूँदडी की बंदिश और रंगाई यहाँ बहुत अच्छी होती है।

जोधपुर में हवाई जहाज़ उतरने का बहुत अच्छा स्टेशन बना हुआ है जिसे **'एरोड्रोम'** कहते हैं। रात मे भी हवाई जहाज़ उतरने का प्रबन्ध किया गया है। ऐसा दूसरा एरोड्रोम सारे राजपूताने में कही नहीं है।

जोधपुर में एरोड्रोम (हवाई स्टेशन)

(Photo by the courtesy of the Uday Photo and Art Works)

जोधपुर से रवाना होकर **पीपाड़ मेरतारोड, डेगाना** होते हुए कुचामनरोड पहुँचे। यहाँ जे० रेलवे का मार्ग समाप्त होता है और बी० बी०

ऐन्ड सी० आई० रेलवे की एक शाखा यहाँ से **साँभर** (जहाँ निमक पैदा होता है) होती हुई **फुलेरे जङ्कशन** को जाती है।

जोधपुर रेलवे की एक शाखा जोधपुर से **पोहकरन फलौदी** को जाती है जहाँ से सैकड़ों यात्री प्रतिवर्ष रूणिचा रामदेव जी के दर्शनार्थ जाते हैं। जे० रेलवे की दूसरी बडी शाखा **मेडतारोड** से शुरू होकर **नागोर** होती हुई चीलो जंकशन तक जाती है जहाँ जे० रेलवे का मार्ग समाप्त होकर बी० एस० रेलवे आरम्भ होती है। यह **बीकानेर, सूरतगढ़, हनुमानगढ़** होती हुई पञ्जाब में **भटीण्डे** को जाती है। **हनुमानगढ** से रेल की एक शाखा **गंगानगर** जाती है और दूसरी **राजगढ़, रतनगढ़** होती हुई मारवाड में **जसवंतगढ़** जाती है जहाँ जे० रेलवे की एक शाखा **डेगाने** से आती है। **राजगढ़** से बीकानेर रेलवे की एक शाखा पञ्जाब में **हिसार** को जाती है। **रतनगढ़** से एक शाखा **सरदार शहर** और दूसरी **बीकानेर** को जाती है।

नागोर—यहाँ मारवाड का सब से अच्छा किला बना हुआ है। यहाँ हाथीदाँत के खिलौने और पीतल के बरतन अच्छे बनते हैं। यहाँ का बैल सर्वत्र मशहूर है।

बीकानेर—यह रियासत की राजधानी है जिसे राव बीकाजी ने बसाया था। यह राजपूताने में चौथे श्रेणी का शहर है। इसमें देखने योग्य लालगढ किला, पुस्तकालय, लक्ष्मीनारायणजी का मन्दिर आदि अच्छे स्थान हैं। यहाँ की मिश्री, लोइयाँ, कम्बल, गलीचे और ऊँट के चमडे के कुप्पे अच्छे होते हैं।

सूरतगढ़—यह बीकानेर रियासत के बहुत उपजाऊ हिस्से में होने के कारण यहाँ अनाज की मण्डी है।

हनुमानगढ़—यहाँ का किला देखने योग्य है।

गंगानगर—गंगा कनाल (नहर) के कारण यह एक अच्छा आवाद शहर हो गया है।

बीकानेर, सूरतगढ़, रतनगढ़, सरदार शहर आदि शहरों के अनेक सेठ साहूकार कलकत्ता, बम्बई, मद्रास आदि बड़े बड़े शहरों में व्यापार करते हैं। क्या तुम बता सकते हो क्यों ?

अन्य शहर—टोंक, करौली, डूँगरपुर, झालरापाटन* बूँदी, परताप-गढ़, सिरोही आदि कई नगर छोटी मोटी रियासतों की राजधानियाँ हैं जो किसी रेल-मार्ग पर नहीं हैं।

धोलपुर—चम्बल नदी के किनारे कई भागों में बँटा हुआ शहर बसा हुआ है। यह जाटों की रियासत की राजधानी है। **आगरे से बम्बई** को जाने वाली जी० आई० पी० रेल-मार्ग यहाँ होकर निकलता है। यहाँ लकड़ी और लोहे का अच्छा काम होता है। प्रतिवर्ष यहाँ पशु-मेला भी लगता है।

प्रश्न

१—आबूरोड से देहली तक की यात्रा में—

(अ) कौन सा शहर अति सुन्दर बना हुआ है। उसमें क्या विशेषता है ?

(ब) किस किस जगह सूती कपड़ो के कारखाने हैं ?

(क) उदयपुर जाने वाले यात्री किस जगह गाड़ी बदलते हैं ?

*झालरापाटन को आजकल ब्रिजनगर कहते हैं। वह झालावाड राज्य की राजधानी है।

२—अजमेर से उदयपुर की यात्रा में जो जो शहर देखने योग्य हो उनका कुछ वर्णन करो।

३—जोधपुर से कोटा किस रेल-मार्ग से जाते है? रास्ते में कौन से शहर देखने योग्य है?

४—सरदार शहर, जैसलमेर, धोलपुर, नागौर, नाथद्वार—इन में पहुँचने के लिये कौन कौन से मार्ग है?

५—क्या जोधपुर में बहुत बडा 'एरोड्रोम' बनने के कारण शहर के गौरव पर उसका कुछ प्रभाव पडा है? पडा हो तो किस प्रकार?

अभ्यास

१—रेलवे टाइम टेबिल से यह मालूम करो कि डाकगाडी में आबूरोड से देहली तक जाने में क्या समय लगता है?

२—रेलवे के नकशे में आबूरोड से देहली तक का रेल मार्ग एक डोरा लेकर नापो और उन दो शहरो के बीच का अन्तर मालूम करो। स्टेशन पर रेलवे टाइम टेबिल देख कर जाँच करो कि तुम्हारा उत्तर ठीक है या नहीं।

३—१२ नम्बर के पतले नकशे को १ नम्बर के नकशे पर बराबर रख दो और बताओ कि आबूरोड से दिल्ली तथा आगरे तक का रेलमार्ग कौन कौन सी रियासतो में हो कर गुजरता है।

४—१२ नम्बर का पतला नकशा ६ और २ नम्बर के नकशो पर बराबर रख दो और बताओ कि बीकानेर से उदयपुर तक की यात्रा में किस प्रकार का प्राकृतिक दृश्य हम देखेंगे।

५—मारवाड़ जकशन से चित्तौरगढ की ओर रेल-मार्ग के खुल जाने से जोधपुर से उदयपुर तक की यात्रा में कितने मील की यात्रा कम हो गई है। यह रेल-मार्ग नाप कर बताओ।

॥ श्रीवितरागायनमः ॥

श्रीमत्ज्जैनाचार्य पुज्यजी श्री श्री श्री १००८
श्री श्री प्रभाकरसुरीजी ऊर्फ
प्रसन्नचन्द्रजी महाराज कृत.

जैन तत्व बोध.

आपणा जैनधर्म प्रिय चतुर्विध संघके हितार्थ
प्रसिद्ध कर्ता
अहमदनगर निवासी,
खुबचंदजी मुलतानचंदजी काकरिया,
तथा
बाळारामजी पिरथीराजजी चोराडिया.

आवृत्ति १ ली, प्रती ५०००.
विक्रम सं. १९६९ विना मूल्य वीर सं. २४३८.
सन १८६७ का २५ वा आक्ट मूजब रजिष्टर किनो.
मुंद्रक, रतनचंद पु मुथा, 'सुदर्शन प्रेस' अहमदनगर

इण जगतमांहे प्राणिमात्रनें धर्ममार्गमांहे अवश्य प्रवर्त्तन करणो चाहिजे आपणो जैनधर्म सर्व धर्ममांहे श्रेष्ठ हे, ओर तिणरो जाणपणो करणेंरी मनुष्यवर्गनें जरूरी हे जैनधर्म घणो सूक्ष्म होणारा कारणसू आपणा सूत्रांरी समज पूरी हुवे नहीं. सूत्र वगैरेरी समज हुया शिवाय, ओर जिवाजीवरो जाणपणो हुया शिवाय, आपणा घटमांहे जैन धर्मरो प्रकाश हुवे नहीं आपणा टाबरानें व चतुर्विध संघनें जैन धर्मरो पूर्ण तत्व मालम हुवणो, इण कारण वास्ते आपणा धर्मगुरु महान्पडित श्रीमत्‌जैनाचार्य पूज्यजी श्री प्रभाकरसूरिजी ऊर्फ जैनाचार्य पूज्यजी श्री प्रसन्नचन्द्रजी महाराज ओ छोटोसो 'जैनतत्त्व बोध नामक पुस्तक तयार करणवास्ते बडी मेहनत किवी, और श्रीयुत काकरीया खुवचदजी मुलतानचंदजी तथा श्रीयुत वाळारामजी पिरथीराजजी चोरडीया द्रव्यव्यय करके श्रीसंघके हितार्थ "जैनतत्वबोध" छपाकर प्रसिद्ध कियो. इणवास्ते आपणा संवनें तिणारो उपकार मानणो जरूर हे. ओर म्हनें पिण घणी उमेद हे के ओ पुस्तक चतुर्विध संघनें बराबर रीतसू शिकायो तो थोडा दिनमांहे जैन धर्मरो तत्व जाणनें सभामाहे बोलणे लायक हुवसी; आपणा धर्मरी पिण उन्नति हुवसी आपणा बालकवर्गनें व श्रावक श्राविकानें जाणपणो हुयासू वे पुद्गलिक

सुखांसू विरक्त हूयने आत्मिक सुखप्राप्ति होणेरा मार्गने लागसी; ओर इण छोटा पुस्तकसू जैन धर्मकी उन्नति हूयने जिवाजीवरो जाणपणो अवश्य हूवसी पचीस बोलको थोकडो साधारण आपणां बायां भाया माहे घणांने आवेहे; पिण तिणरो भेद, अर्थरूप घणारा समज माहे आवे नहीं. इण वास्ते इसा पुस्तकविना शिक्षणरो बराबर उपयोग हुवे नहीं. इण पुस्तक माहे पचीस बोल के थोकडेरा न्यारा न्यारा भेद बताया हे, व आपणा धर्म माहेली उपयोगी इसी घणी बातां लिखी हे इण पुस्तक मांहला सगळा बोल शास्त्राधारसू लिया हे, व भाषा पिण सोरी लिखी हे. बोल वगेरे शिखती बखत अशुद्ध भाषा वापरणरी खबरदारी पूरण रीतसू राखने इण पुस्तकरो उपयोग जरूर करसी

इण पुस्तक मांहे कोई हस्ताक्षर अगर नजर चूक हुई हुवेतो शुद्ध करलेसी, इसी उमेद हे

हुकमचंद रूपचंद सुथियान
अहमदनगर

विद्या प्रशंसा.

(शा० वि०)

विद्या नाम नरस्य रूपमाधिकं प्रत्यक्ष गुप्तं धनम् ।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी. विद्या गुरूणां
गुरु ॥ विद्या बन्धुजनो विदेशगमने. विद्या परा
देवता । विद्या राजसु पूजिता न तु धनं,
विद्याविहीनः पशुः ॥ १ ॥

भावार्थः—विद्या मनुष्यमात्रका रूपनें वधावणवाली हे. व गुप्त धनसरीखी हे. और विद्या सुकीर्ति दायक हुयने अत्यंत श्रेष्ठ हे आ सर्वने मान्य हे. परदेशमांहे भी विद्या एक महादेवतासमान हे, इसो सर्व विद्याप्रिय लोक केवे हे. राजमांहे पिण विद्याकी महत्प्रशंसा हुवे हे. विद्या सरीखो दूसरो धन नहीं हेः व जो कोई विद्या रहित (अज्ञानी) होय तिणरी गणना पशुसमान हे इत्यादि.

हिवे विद्याको गुण कहे छे.

(उ० जा०)

न चोरहार्यं न च राज हार्यम् ।
न भ्रातृभाज्यं. न च भारकारि ॥

व्यये कृते वर्धत एव नित्यम् ।
विद्याधनं सर्व धन प्रधानम् ॥ २ ॥

भावार्थः—विद्या आ चीज चोरी जावे नहीं, अथवा राजमांहे तिणनें कोई हरण कर सके नहीं; तिणनें भाई पिण ले सके नहीं व विद्यारो बिलकुल भार हुवे नहीं. तिणरो खरच कियां सूं उलटी तिणरी हमेस वृद्धि हुवे. व सर्व द्रव्य मांहे विद्यारूपी धन फक्त प्रधान (प्रमुख) हे.

अब विद्याको फळ कहे हे.

(अनुष्टुप्)

विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम् ॥
प्रात्रत्वाद्धनमाप्नोति, धनाद्धर्मं ततः सुखम् ॥ ३ ॥

भावार्थः—विद्यासूं विनय प्राप्ति हुवे, और विनयसूं पात्रता मिले हे पात्रता (योग्यता) मिल्यासूं धनप्राप्ति हुवे, धनप्राप्तिसूं धर्म उत्पन्न हुवे; व अखेरमें अत्यंत सुख मिले हे. हवे अज्ञानी मनुष्य की स्थिति कहे हे.

(अनुष्टुप्.)

शुनः पुच्छमिव व्यर्थं, जीवितं विद्यया विना ॥
न गुह्य गोपने शक्तं, न च दंश निवारणे ॥ ४ ॥

भावार्थः—ज्यूं कुत्ताकी पुच्छ व्यर्थ हे, त्यूं विद्याविना मनुष्यरो जन्म पिण व्यर्थ हे. ज्यूं कुत्तारो पुच्छ आपरा

गुप्त इंद्रिय ढकणनें व दंशकारक जनावरांनें उडावणनें असमर्थ है. वो कोरो तिणनें भार है. त्यूं विद्यारहित मनुष्यको जन्म पिण व्यर्थ है.

इण वास्ते विद्या ओ एक अखूट धन है: खायां खुटे नहीं, किंवा खर्च्यां कमी हुवे नहीं. इण धननें जित्तो खरचे उत्तो दुप्पट हुवण वाळो है. पिण संसारी लोग फक्त द्रव्य संग्रह करण वास्ते रातदिन मेहनत करे है. पिण इण विद्यारूप धननें संग्रह करणरी खटपट करे नहीं. इण धननें संग्रह कर्‍यांसूं इहलोक व परलोक वास्ते घणो फायदो है. आपणामांहे विद्यारो ज्ञान पूर्ण नहीं हुवणसूं बोलणो लिखणो घणो अशुद्ध है आपणामांहे व्याकरण शीखणरी घणी न्यूनता है व व्याकरण शीख्यांविना शुद्ध अशुद्धरो जांणपणो हुवे नहीं. ओर भगवान् पण कह्यो है के:—

"पढमं नाणं तओदया"

अर्थात् पेलीं ज्ञान अनें पछे क्रिया इसो कह्यो है. व्याकरण विना ज्ञान होवे नहीं इसो भगवान् पिण फरमायोहे

(गाथा.)

वयण तियं लिंग तियं, काल तियं तह परोक्खप-

---

(१) व्याकरणात पदशुद्धि, पदशुद्ध्यार्थ निर्णयो भवति॥

अर्थात शुद्धज्ञानं शुद्धज्ञानात भवत् मुक्ति.॥

भावार्थ —व्याकरणसे पदशुद्धि हुवेहे, पदशुद्धि हुणेसूं अर्थ निर्णय हुवेहे. अरे निर्णयसूं शुद्धज्ञान हुवेहे, शुद्धज्ञानसे मुक्ति हुवेहे.

च्चक्खं ॥ उवणय वयण चउक्कं, अजत्थं चेव सोलसमं ॥ १ ॥

भावार्थः—वचन ३ लिंग ३ काल ३ तथा प्रत्यक्ष १० व परोक्ष ११ उपनय वचन चार १५ व अध्यात्म वचन १ एवं १६ ए सोळा वचनरो जाणपणो किया विना अर्थरो ज्ञान हुवे नहीं. ओर कोई एसो केवे के 'व्याकरण तो मिथ्य शास्त्र हे. जिणसूं व्याकरण शास्त्र पढणो नहीं.' ओ केवणो झूट हे. कारण आपणा धर्ममांहे भी व्याकरण मोजूद हे तिणरा नांवः—१ जैनेंद्र व्याकरण २ शाकटायन व्याकरण. ए दो संस्कृत मांहे ओर १ हेमानु शासनका अष्टमाध्याय, २ प्राकृत व्याकरण इ० प्राकृतमांहे. इणतरे आपणा धर्ममांहे व्याकरण मौजूद हूयनें उणारो अभ्यास आपे करा नहीं, आ आपणामांहे वडी खामी हे. अशुद्ध शास्त्र वाचणा ओर धर्मरो पठन पाठन करणो ओ कर्म बंधनरो कारण हे. इरावास्ते अबे आपणा मांहे ठोड ठोड जैनपाठशाळा हुयनें उरामांहे वालक वर्ग शिखे हे. उण शाळा मांहे सूं, अगर दूजी कनासूं टाबरानें व्याकरणरो अभ्यास करायनें शुद्ध बोलणरी ओर लिखणरी प्रवृत्ति राखणी ओ आपणो काम हे. धर्मरो कोई पाठ उच्चारती वखत व शीखती वखत बरोबर रीतसूं पुस्तक मांहे रेवे तिण प्रमाणें शुद्ध उच्चार करणो अशुद्ध बिलकुल शीखणो नहीं.

पुण्य ओर धर्म.

पुण्य ओर धर्म घणा लोक एक माने हे पिण वे न्यारा न्यारा हे. पुण्य नव[1] प्रकार को हे. व धर्म (निर्जरा) १२[2] प्रकार को हे, वे इण पुस्तक मांहे सूं मालम पडजासी. साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकानें पोषणमांहे एकांत धर्म हे. इराबद्दल आपणा शास्त्र मांहे कह्यो हे के

उत्तमपत्तं साहु, मज्झमपत्तं च सावया भणिया॥
जहन्न पत्तं इवरादि, तिविहं पत्तं मुणे यव्वं ॥ १ ॥

इणप्रमाणें लिख्यो छे. साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, इणांनें पहिला दो पात्रमांहे लिना छे; ओर तीजा पात्रमांहे ऊपरला चतुर्विध संघनें छोडनें बाकी रहेला साराई अन्यमति लोक जघन्य पात्रमांहे गिण्याछे. अठे फक्त उत्तम पात्रमांहे साधु, साध्वी. मध्यम पात्रमांहे श्रावक, श्राविका, जघन्य पात्रमांहे अन्यमति लोक इणतरे तीन पात्र बताया हे. पिण चोथो कुपात्र कठेई शास्त्रांमांहे बतायो नहीं पिण आपणामांहे पुण्य करती वखत सुपात्र कुपात्ररो घणो विचार करे हे. इण वास्ते गरीब अन्यमति लोकांनें अनुकंपा लायनें जरूर दान करणो. अनुकंपा दान करती वखत कुपात्र सुपात्ररो बिल्कुल विचार करणो नहीं कारण के

---

१ ठाणायागसूत्रका नवमें ठाणे देखो. २ उववाई सूत्र देखो.

अनुकंपा समकितरो मूळ पायोहे. ओर शास्त्रांमांहे दूजा ठिकाणे पिण इणतरे लिख्यो हे के,

मोक्खत्थं जं दाणं, तंपइ एसो विही समक्खाओ॥
अणुकंपा दाणं पुण, जिणेहिं न कयाइ पडिसिद्धं॥ १

इरावास्ते अनाथ लोकांनें दान देवती वखत योग्य अयोग्यरो विचार बिलकुल करणो नहीं. अनुकंपालायने कुपात्रने दान नही देवणो इसो कठेई लिख्यो नहीं, व लाध णार नहीं. दान लेवणवालो किसाहि जातरो आदमी हुयो ओर जो इरामाथे अनुकंपा लायनें उणनें दान देवणो इस भाव हुवा तो उणनें जरूर दान देवणो. दान देवणवालाने अनाथ लोकांमाथे समदृष्टि राखने शक्तिप्रमाणें हरहमेश अनुकंपा लायनें दान देवणरी प्रवृति राखणी. दान लेवणवालो पुरुष दान लेयनें उरो उपयोग योग्य अयोग्य काममांहे करेतो तिणरा फल आगलो भुगतसी. इरा बदल क्रिया देवणवालाने बिलकुल लागे नहीं इसो शास्त्र-मांहे खुलासो हे. जिणतरे मेघ सर्वत्र वर्षे हे योग्य अयोग्य जागारो विचार देखे नहीं इणतरे पिण दान देती वखत योग्य अयोग्य पात्ररो विचार करणो नही.

दान पुण्य माथे आपणी श्रद्धा,

चतुर्विध श्री संघनें दान देवणमांहे एकान्त धर्म उत्पन्न हुवे. असंयति अव्रती अपच्चक्खाणी, मिथ्यात्वीनें अनुकंपा

लायनें दान देवणमांहे एकान्त पुण्य और देशथकी निर्जरा उपजेहै. आपणा साधु मार्गियांकी आ खास श्रद्धाहै इणसूं विपरीत जो है. सो तेरे पंथियां की श्रद्धाहै.

रजस्वला.

रजस्वला स्त्रीनें आपणा शास्त्रमूं स्थानकमांहे आवणकी. अथवा शास्त्र वगैरे सुणणकी मनाई है. सूत्रमांहे दश प्रकारकी औदारिक शरीर वालांकी असज्झाई लिखी है. जिणमूं रजस्वला स्त्रीने व्याख्यान मांहे आवणकी बिलकुल मनाई है. स्त्री रजस्वला रैवे जठाताई सामायिक करणी, नवकार मंत्र, अगर दूसरो कोई शास्त्रको पाठ बोलणो नहीं. रजस्वला स्त्रीका हाथसूं साधु, साध्वी वगैरेने दान लेवणो नहीं. दिगंबर पक्षवाला पिण लिखे है के रजस्वला स्त्रीका हातसूं दान लेवण मांहे घणो दोष है. इस वास्ते काया शुद्ध, वचन शुद्ध, मन शुद्ध करनें पाठ वगैरे को उच्चार व शास्त्र श्रवण करणो.

पाणी.

श्री आचाराङ्गजी शास्त्रमांहे एकवीस तन्हेरा

१ घणो विस्तार सिद्धान्तसारसे देखो   २ ज्यादा विस्तार जैनसम्प्रदाय शिक्षासूं देखो पृष्ठ ७०९

पाणी कह्यो हे. तिन मांहे पाण विधि में पेला अध्ययनरो ७ मों उद्देशो. जिण मांहे २१ प्रकाररा पाणी चाल्या तिणरा नामः—

१ उस्से इमंवा, आटेरो पाणी.
२ संसे इमंवा, अरणीरो पाणी.
३ चाउलो दगंवा, चॉवळरो पाणी.
४ तिल्लोदगं, तिल धोयांगे पाणी.
५ तुस्सोदगं, तुषरो पाणी.
६ जवोदगं, जवॉको पाणी.
७ आयामंवा, उसामणरो पाणी.
८ सोवीरंवा, ऊनी छाछरे उपरलीआछ.
९ सुद्धवीयडंवा, उन्नो पाणी
१० अंवपाणगंवा, आंबागे पाणी
११ अंबाडगपाणगंवा, अंबाडीरो पाणी.
१२ कविट्ठपाणगंवा, कविठ्ठरो पाणी.
१३ मातुलिंगपाणगंवा, बीजोरारो पाणी.
१४ मुद्दीयपाणगंवा, दाखरो पाणी.
१५ दालिमपाणगंवा, दाडमरो पाणी.
१६ खज्जुरपाणगंवा, खजूररो पाणी.
१७ नालीएरपाणगंवा, नारेळरो पाणी.
१८ करीरपाणगंवा, केरको पाणी.
१९ कोलपाणगंवा, बोरको पाणी.

२० आमलपाणगंवा, ऑवळांरो पाणी.

२१ चिंचापाणगंवा, आंवलीरो पाणी.

इणांमांहे राखरो धोवण कह्यो नहीं. पिण प्रचारमांहे व साधु साध्वीने वेरावणमांहे राखरो धोवण घणो आवेहे. पिण ओ भांडा घसनें कियोडो राखरो धोवण वापरणमांहे कच्चा पाणीरो दोष लागे हे. इरा खातर ओ धोवण प्रचारमांहे नहीं लावतां सूत्रमांहे लिख्या मुजब २० प्रकारका धोवण अगर गरम पाणीरो उपयोग करणो. शास्त्रमांहे धोवण पाणीरो काल लिख्यो छे तिको इणमुजबः—

अन्नजलं किंचिट्ठिइ, पच्चरकाणं न भुंजए भिक्खु।
घडी दोय अंतरिया, निगोहिया हुंति बहु जीवा॥१॥[1]

इण मुजब धोवण पाणीरो काळ लिखे हे. उंणरो खुलारो नीचे हे. ओर गरम पाणी थंडो हुवांपछे कित्ता काळमांहे वापरणो इणरो पिण खुलासो नीचे दीनो हे. कालरा परिमाणसूं जादा दोनु पाणी वापरणा नहीं. जादा काळ राखणांसूं तिणमांहें अनंत जीव उत्पन्न हुवे इसो शास्त्रमांहे लिख्यो हे.

१ धोवणको काळ—दो घडी उपरांत राखणो नहीं, राख्यासूं अनंत जीवरी उत्पत्ति हुवे.

---

१ इण गाथामें सूत्रमे कह्या हुवा २० प्रकारका धोवणरो काळ नहीं हे फक्त अन्नसहित धोवणरो काळ हे.

गरम पाणीरो काळः—चोमासामांहे तीन प्रहर, शियाळामांहे चार प्रहर, व उन्हाळामांहे पांच प्रहर. इण उपरांत पाणीरो उपयोग करेतो कच्चापाणीरो दोष लागे इण प्रमाणें कच्चो दूध पिण दो घडी उपरांत राखणो नहीं. गरवगे धोवण तो चतुर्विध संघने वापरणकी मनाई हे.

कच्चोपाणी.

कच्चा पाणी मांहे समय समयसूं अनंत जीवरी उत्पत्ति हुवे. ओर इण पृथ्वीमांहेला द्वीपसमुद्रांरी मात्र क्रिया लागे हे. जिणसूं जिनराज चतुर्विध संघनें गरम पाणी तथा २० प्रकारका धोवणं पीवणरी आज्ञा दिवी हे. गरम पाणी करण मांहे फक्त पाणी गरमकरे उताईज पाणीरा जीवां बद्दल दोष लागे हे. ओर बाकीरी पाणीरी क्रिया टळ जावे. उन्नो पाणी हुयांपछे उपर लिख्योडा काळमांहे वापर्‍यो तो जीव उत्पन्न हुवे नहीं. कच्चा पाणीमांहे समय समयसूं अनंता जीवांरी उत्पत्ति हे, ओर उन्नो पाणी पीवणो बिलकुल निरोगी हे. प्रवासमांहे उन्नो पाणी पीवणो घणोज श्रेयकार हे.

---

१ बालबोध मराठी चोथा पुस्तक पत्र ८५—८६ मे भी देखो

स्त्रीशिक्षण.

आपणा मांहे स्त्री शिक्षणरो प्रचार घणो कम हे. कारण आपणा लोक इण तरासूं केवे हे के एक घरमांहे दोय कलम रेवणी नहीं. पिण ओ अज्ञानी लोकांरो वचन हे. देखो. एक युरोपियन गृहस्थ केवेहे के,

दुहो.

कहे नेपोलियन देशनें, करवा आवादान;
सरस रीत छे एज के, द्यो मातानें ज्ञान ॥ १ ॥

इणतरे आपणा जात शिवाय अन्य जातिमांहे स्त्रीनें शिक्षण देवण वास्ते घणा प्रयत्न करे हे. पिण आपणा लोक फक्त एक घरमांहे दोय कलम कामरी नहीं, इण परंपरासूं आयोडा अज्ञानी लोकांरा वचन कांनी ध्यान देवे हे. पिण इण अज्ञानी लोकांरा वचनने ज्ञानरूपी वचनसूं दग्ध कियो चाहिये. स्त्रीयांनें शिक्षण देवणासूं फायदा घणा हुवे है, वालपणासूं टावरानें घरमांहे मातारोज शिक्षण रेवे जिणसूं माता जो साधारण शिख्योडी भण्योडी हुई, तो मातारा शिक्षणसूं वालपणामांहे टावरानें पिण शिक्षण चोखो लागसी धर्मध्यानको पिण उद्योत हूवसी. इरा वास्ते छोकऱ्यानें शाळा मांहे घालने उणानें शिक्षण देवणो. निदान पुस्तक

वांच लेव इत्तो शिखायो तोई घणो हे. जादा शिखायो तो घणो ईज श्रेयकार हे. शिक्षणसूं धर्मरो मार्ग शुद्ध ओळखता व बोलतां आवेला. धर्मरो पाठ शुद्ध आयासूंज तिरणो हुवेला, अशुद्ध पाठ शिखणमांहे व बोलणमांहे कर्म बंधनरो कारण हे. वास्ते छोकऱ्यानें शिक्षण देवणमांहे घणो फायदो हे, जिण ठिकाणें जैनशाळा हे तिण ठिकाणांसूं शाळा मांहे छोकऱ्यानें शिखावणवास्ते न्यारो वर्ग जोडनें उणानें जरूर शिक्षण देवणो.

---

२० आमलपाणगंवा, आँवळांरो पाणी.

२१ चिंचापाणगंवा, आंवलीरो पाणी.

इणांमांहे राखरो धोवण कह्यो नहीं. पिण प्रचारमांहे व साधु साध्वीनें वेरावणमांहे राखरो धोवण घणो आवेहे. पिण ओ भांडा घसनें कियोडो राखरो धोवण वापरणमांहे कच्चा पाणीरो दोष लागे हे. इरा खातर ओ धोवण प्रचारमांहे नहीं लावतां सूत्रमांहे लिख्या मुजब २० प्रकारका धोवण अगर गरम पाणीरो उपयोग करणो. शास्त्रमांहे धोवण पाणीरो काल लिख्यो छे तिको इणमुजबः—

अन्नजलं किंचिट्ठिइ, पच्चरकाणं न भुंजए भिक्खु ।
घडी दोय अंतरिया, निगोहिया हुंति बहु जीवा[1]॥१॥

इण मुजब धोवण पाणीरो काळ लिखे हे. उंगरो खुलासो नीचे हे. ओर गरम पाणी थंडो हुवांपछे कित्ता काळमांहे वापरणो इणरो पिण खुलासो नीचे दीनो हे. कालरा परिमांणसूं जादा दोनु पाणी वापरणा नहीं. जादा काळ राखणांसूं तिणमांहें अनंत जीव उत्पन्न हुवे इसो शास्त्रमांहे लिख्यो हे.

१ धोवणको काळ—दो घडी उपरांत राखणो नहीं, राख्यासूं अनंत जीवरी उत्पत्ति हुवे.

---

१ इण गाथामें सूत्रमे कह्या हुवा २० प्रकारका धोवणरो काळ नहीं हे फक्त अन्नसहित धोवणरो काळ हे.

गरम पाणीरो काळ:—चोमासामांहे तीन महर, शियाळामांहे चार महर, व उन्हाळामांहे पांच महर. इण उपरांत पाणीरो उपयोग करेतो कच्चापाणीरो दोष लागे इण प्रमाणें कच्चो दूध पिण दो घडी उपरांत राखणो नहीं. राखरो धोवण तो चतुर्विध संघने वापरणकी मनाई है.

कच्चोपाणी.

कच्चा पाणी मांहे समय समयसूं अनंत जीवरी उत्पत्ति हुवे. ओर इण पृथ्वीमांहेला द्वीपसमुद्रांरी मात्र क्रिया लागे है. जिणसूं जिनराज चतुर्विध संघनें गरम पाणी तथा २० प्रकारका धोवण पीवणरी आज्ञा दिवी है. गरम पाणी करण मांहे फक्त पाणी गरमकरे उताईज पाणीरा जीवां बदल दोष लागे है. ओर बाकीरी पाणीरी क्रिया टळ जावे. उन्हो पाणी हुयांपछे उपर लिख्योडा काळमांहे वापर्‍यो तो जीव उत्पन्न हुवे नहीं. कच्चा पाणीमांहे समय समयसूं अनंता जीवांरी उत्पत्ति है, ओर उन्हो पाणी पीवणो बिलकुल निरोगी है. प्रवासमांहे उन्हो पाणी पीवणो घणोज श्रेयकार है.

---

१ बालबोध मराठी चोथा पुस्तक पत्र ८५–८६ मे भी देखो.

स्त्रीशिक्षण.

आपणा मांहे स्त्री शिक्षणरो प्रचार घणो कम हे. कारण आपणा लोक इण तरासूं केवे हे के एक घरमांहे दोय कलम रेवणी नहीं. पिण ओ अज्ञानी लोकांरो वचन हे. देखो, एक युरोपियन गृहस्थ केवेहे के,

दुहो.

कहे नेपोलियन देशनें, करवा आवादान;
सरस रीत छे एज के, द्यो मातानें ज्ञान ॥ १ ॥

इणतरे आपणा जात शिवाय अन्य जातिमांहे स्त्रीनें शिक्षण देवण वास्ते घणा प्रयत्न करे हे. पिण आपणा लोक फक्त एक घरमांहे दोय कलम कामरी नहीं, इण परंपरासूं आयोडा अज्ञानी लोकांरा वचन कांनी ध्यान देवे हे. पिण इण अज्ञानी लोकांरा वचनने ज्ञानरूपी वचनसूं दग्ध कियो चाहिये. स्त्रीयांनें शिक्षण देवणासूं फायदा घणा हुवे हे, बालपणासूं टाबरानें घरमांहे मातारोज शिक्षण रेवे जिणसूं माता जो साधारण शिख्योडी भण्योडी हुई, तो मातारा शिक्षणसूं बालपणामांहे टाबरानें पिण शिक्षण चोखो लागसी धर्मध्यानको पिण उद्योत हूवसी. इरा वास्ते छोकन्यानें शाळा मांहे घाल्ने उणानें शिक्षण देवणो. निशान पुस्तक

वांच लेव इत्तो शिखायो तोई घणो हे. जादा शिखायो तो घणो ईज श्रेयकार हे. शिक्षणसूं धर्मरो मार्ग शुद्ध ओळखता व बोलतां आवेला. धर्मरो पाट शुद्ध आयामूंज तिरणो हुवेला, अशुद्ध पाट शिखणमांहे व बोलणमांहे कर्म बंधनरो कारण हे. वास्ते छोकऱ्यानें शिक्षण देवणमांहे घणो फायदो हे, जिण ठिकाणें जैनशाळा हे तिण ठिकाणांसूं शाळा मांहे छोकऱ्यानें शिखावणवास्ते न्यारो वर्ग जोडनें डणानें जरूर शिक्षण देवणो.

मङ्गलाचरण.

श्रेयःश्रियां मंगलकेलिसद्म नरेन्द्रदेवेन्द्रनतांघ्रिपद्म ।
सर्वज्ञ सर्वातिशयप्रधान चिरं जय ज्ञानकलानिधान ॥ १ ॥
जगत्त्रयाधार कृपावतार दुर्वारसंसार विकारवैद्य ।
श्रीवीतराग त्वयि मुग्धभावाद् विज्ञ प्रभो विज्ञपयामि किंचित् ।२
किं वाललीलाकलितो न वालः पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः।
तथा यथार्थं कथयामि नाथ निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥ ३ ॥

अथ पच्चीस बोलाँको थोकड़ो लिख्यते.

गति-जाति-काय-मिन्द्रिय, पर्याप्ति-प्राणकाः-शरीरश्च ॥
योगोपयोग-कर्मक,-गुणस्थितींद्रियक विषय-मिथ्यात्वम् ॥ १ ॥
नवतत्त्व-मात्म-दंडक, लेश्या-दृष्टि-स्तथाध्यानम् ॥
षड्द्रव्य-मपिच राशिः-श्राद्धव्रत-साधुसन्महाव्रतकम् ॥ २ ॥
नवचत्वारिंशद्थो, भङ्गाश्चारित्रमेतच्च ॥
इति पञ्चविंशतिमिता-न्यायैर्द्वाराणि कथितानि ॥ ३ ॥

---

१ ज्ञानवागपायापगमपूजातिशयश्रेष्ट. २ विगतशकः ३ सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः

पहिले बोले गति च्यार.

नारकी[1], तिर्यंच[2], मनुष्य[3], देवता[4].

दूजे बोले जाति पांच

एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, पंचेंद्रिय.

तीजे बोले कायां (समूह) छ

पृथ्वीकाय[6], अप्काय[7], तेउकाय[8], वायुकाय[9], वनस्पतिकाय[10], त्रसकाय[11].

चोथे बोले इंद्रियां पांच

सोइंद्रिय[12], चक्षुइंद्रिय[13], घ्राणेंद्रिय[14], रसेंद्रिय[15], स्पर्शेंद्रिय[16].

पांचवे बोले पर्याप्ति[17] छ

आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इंद्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति, मनः पर्याप्ति.

---

१ नारकीसात. २ पाच स्थावर, तीन विकलेंद्रिय, ओर पचेंद्रीतिर्यच. ३ सन्नी ओर असन्नी ४ भवनपति १, व्यतर २, ज्योतिपी ३, ओर वैमानिक ४.

(५) पुढवी जलतेउवाऊ, वणप्फई विविहथावरे इदी ॥
विगतिग चउपचक्खा, तसजीवा होंति सखाई ॥ १ ॥

६ जमीन ७ पाणी. ८ अग्नि. ९ वायरो १० झाड फळ फूल आदि ११ हालता चालता प्राणी १२ कान १३ ऑख्या. १४ नाक. १५ जीभ. १६ शरीर

(१७) आहार सरीरिंदिय, पज्जत्ति आण पाण भासमणो ॥
चउ पच पच छप्पिय, इग विगला सन्नि सन्नीण ॥ २ ॥

छठे बोले प्राण[1] दश.

सोइंद्रिय वल प्राण, चक्षुइंद्रिय वल प्राण, घ्राणेंद्रिय वल प्राण, रसेंद्रिय वल प्राण, स्पर्शेंद्रिय वल प्राण, मन वल प्राण, वचन वल प्राण, काया वल प्राण, श्वासोच्छ्वास वल प्राण, आयुष्य वल प्राण.

सातमें बोले शरीर[2] पांच.

औदारीक शरीर, वैक्रिय शरीर, आहारक शरीर, तैजस शरीर, कार्मण शरीर.

आठमें बोले योग पनरे.

४ मनरा ४ वचनरा ७ कायारा.

४ मनरा कहे छै.

सत्यमन योग, असत्यमन योग, मिश्रमन योग व्यवहार मन योग.

४ वचनरा कहे छै.

सत्य भाषा, असत्य भाषा, मिश्र भाषा, व्यवहार भाषा.

---

(१) दसहा जीवाणपाणा, इंदिय उसास आउ वल रूवा ॥ एगेंदिएसु चउरो, विगलेसु छ सत्त अट्ठेव ॥ १ ॥ असन्नि सन्नी पचेंदिएसु, नव दस कम्मेण बोधव्वा ॥ तेसिंसह विप्पओगो, जीवाण भण्णए मरण ॥ २ ॥

(२) ओराल विउव्वाहारयाण, सग तेअ कम्म जुत्ताण.

७ कायारा कहे छे.

औदारिक, औदारिकरो मिश्र, वैक्रिय, वैक्रियरो मिश्र, आहारक, आहारकरो मिश्र, कार्मण.

नवमें बोले उपयोग[1] वारे.

पांच ज्ञान, तीन अज्ञान, च्यार दर्शन.

पांच ज्ञान कहे छे

मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनः पर्यव ज्ञान, केवळ ज्ञान.

तीन अज्ञान कहे छे

मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान.

च्यार दर्शन कहे छे

चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवळदर्शन.

दशमें बोले कर्म[2] आठ

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदिनीय, मोहिनीय. आयुष्क, नाम, गोत्र, अंतराय.

---

[१] उव ओगो दुवियप्पो, दसण णाण च दसण चदुधा ॥ चक्खु अचक्खु ओही, दमण मथ केवलणेय ॥ १ ॥ णाण अट्ठवियप्प, मदिसुदओहा अणाणणाणाणि ॥ मण पज्जव केवलमवि, पच्चक्ख परोक्ख भेयच ॥ २ ॥ मइ सुय परोक्खणाण, ओही मण होइ वियलपच्चक्ख ॥ केवल णाण च तहा, अणावम होइ सयलपच्चक्ख ॥ ३ ॥
चक्खु अचक्खु ओही, केवल दंसण अणागारा ॥

[२] इणरा उत्तर भेद तो १५८ हे.

इग्यारमें बोले गुणठांणा (गुणस्थान) चवद.

[१] मिथ्यात्व गुणठाणो, २ सास्वादन गुणठाणो, ३ मिश्र गुणठाणो, ४ अव्रती सम्यग् दृष्टि गुणठाणो, ५ देश-व्रती गुणठाणो, ६ प्रमादि गुणठाणो, ७ अप्रमादि गुणठाणो ८ निवृत्तिबादर गुणठाणो, ९ अनिवृत्तिबादर गुणठाणो, १० सूक्ष्मसंपराय गुणठाणो, ११ उपशांतमोह गुणठाणो, १२ क्षीणमोह गुणठाणो, १३ सयोगीकेवली गुणठाणो, १४ अयोगीकेवली गुणठाणो.

बारमें बोले पांच इंद्रियांरी २३ विषय.

सो इंद्रियरी तीन विषय.

जीवशब्द, अजीव शब्द, मिश्र शब्द.

चक्षुइंद्रियरी पांच विषय.

काळो, नीलो, पीळो, रातो, धोळो.

घ्राणेंद्रियरी दोय विषय.

सुरभिगंध, दुरभिगंध.

रसेंद्रियरी पांच विषय.

तीखो, कडवो, कषायलो, खाटो, मीठो.

---

[१] मिच्छे सासण मीसे अविरय देसे पमत्त अपमत्ते ॥
निअट्टि अनिअट्टि सुहुमु, वसम खीण सजोगि अजोगी गुणा ॥ ४ ॥

स्पर्शेंद्रियरी आठ विषय.

खरखरो, सुहालो, भारी, हलको, थंडो, उंनो, चीकटो, लुखो.

तेरमें बोले दश प्रकारको मिथ्यात्व[1].

अधर्मनें धर्म श्रद्धेतो मिथ्यात्व, धर्मने अधर्म श्रद्धे तो मिथ्यात्व, अमार्गनें मार्ग श्रद्धे तो मिथ्यात्व, मार्गने अमार्ग श्रद्धे तो मिथ्यात्व, अजीवने जीव श्रद्धे तो मिथ्यात्व, जीवने अजीव श्रद्धे तो मिथ्यात्व, असाधुने साधु श्रद्धे तो मिथ्यात्व, साधुने असाधु श्रद्धे तो मिथ्यात्व, अमोक्षने मोक्ष श्रद्धे तो मिथ्यात्व, मोक्षने अमोक्ष श्रद्धे तो मिथ्यात्व.

चवदमें बोले छोटी नवतत्त्वरो जाणपणों ११५ बोल.

नवतत्त्व[2] के नाम.

जीव १, अजीव २, पुण्य ३, पाप ४, आश्रव ५, संवर ६, निर्जरा ७, बंध ८, मोक्ष ९.

---

(१) अदेवे देवबुद्धिर्या गुरुधीरगुरावपि । अतत्वे तत्वबुद्धिश्च तन्मिथ्यात्व विलक्षणम् ॥ १ ॥

(२) जीवाजीवा पुण्ण, पावासव संवरोय निज्जरणा ॥ बंधोमुक्खोय तहा, नव तत्ता हुतिनायव्वा ॥ १ ॥

जीव किणने कहीजे ?

जीव चैतन्य लक्षण सुख दुःखरो कर्त्ता पुण्यपापरो भोक्ता पर्याप्ति प्राण करके सहित तीन काळमांहे जीवरो जीव रह्यो जिणनें जीव कहीजे.

जीवरा चवदे भेद.

सूक्ष्म एकेंद्रियरा २ भेद, अपर्याप्ता[1] १, पर्याप्ता[2] २, बादर एकेंद्रियरा २ भेद, अपर्याप्ता[3] १, पर्याप्ता[4] २, बेइंद्रियरा २ भेद, अपर्याप्ता[5] १, पर्याप्ता[6] २, तेइंद्रियरा २ भेद, अपर्याप्ता १, पर्याप्ता २, चउरिंद्रियरा २ भेद, अपर्याप्ता १, पर्याप्ता २, असन्निपंचेंद्रियरा २ भेद, अपर्याप्ता[11] १, पर्याप्ता[12], २ सन्निपंचेंद्रियरा २ भेद, अपर्याप्ता[13] १, पर्याप्ता[14] २.

[illegible] किणनें कहीजे ?

अजी[illegible] सुख दुःखरो अकर्त्ता पुण्य पापरो अ[illegible] [illegible] करके रहित तीन काळमांहे अजीवरो अजीव रह्यो. जिणनें अजीव कहीजे.

[१ जीवो उवओगमओ, अमुत्ति कत्ता सदेहपरिमाणो ॥ भुत्तासंसारत्थो सिद्धो सो विस सोड्ढगइ ॥ १ ॥

य कर्त्ताकर्मभेदाना, भोक्ताकर्मफलस्यच ॥ संसर्ता परिनिर्वाता, सह्यात्म न्यलक्षण ॥१॥

[२] इहसुहुमबायरेगिंदि बितिचउअसन्निसन्नीपचेंदि । अपजत्तापजत्ता, कम्मेणचउदसजिअठाणा ॥ १ ॥

अजीवरा चवंदे भेद.

धर्मास्ति कायरा ३ भेद, स्कंध १, देश २, प्रदेश ३. अधर्मास्ति कायरा ३ भेद, स्कंध १, देश २, प्रदेश ३. आकाशास्ति कायरा ३ भेद, स्कंध १, देश २, प्रदेश ३. दशमो काळ.

पुद्गलास्ति कायरा ४ भेद, स्कंध १, देश २, प्रदेश ३. परमाणु पुद्गल ४.

पुण्य किणनें कहीजे ?

पुण्य बांधता दोरो भोगवता सोरो पुण्यरा फळमीठ सुखे सुखे भोगवे शुभयोगमूं बंध ऊंची गतिमांहे ले जा जिणनें पुण्य कहीजे.

पुण्यरा नव भेद.

अण्णपुण्णे १, पाणपुण्णे २, लेणपुण्णे ३, सयणपुण्णे ४, वत्थपुण्णे ५, मनपुण्णे ६, वचनपुण्णे ७, कायपुण्णे ८ नमस्कार पुण्णे ९.

---

(१) अज्जीवो पुणगेओ, पुग्गलधम्मो अधम्म आयास ॥ कालो पुग्गल मुत्ता, रूवादिगुणो अमुत्ति सेसा दु ॥१॥

धम्मा धम्मा गासा, तियतिय भेया तहेव अद्धाय ॥ खंधादेसपएसा, परमाणू अजीव चउदसहा ॥२॥

(२) सुरनर तिगुच्च सायं, तस दस तणु वग वइर चउरंसं । परघासग तिरि आऊ, वण्ण चउपणिंदि सुभ खगइ ॥१॥

पाप किणनें कहीजे ?

पाप बांधता सोरो भोगवता दोरो पापराफळ कडवा दुःखे दुःखे भोगवे अशुभ योगसूं बंधे नीची गतिमांहे ले जावे जिणनें पाप कहीजे.

पापरा अठारे भेद.

१ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, ५ परिग्रह, ६ क्रोध, ७ मान, ८ माया, ९ लोभ, १० राग, ११ द्वेष, १२ कलह, १३ अभ्याख्यान, १४ पैशुन्य, १५ परपरिवाद, १६ रति अरति, १७ मायामोसो, १८ मिथ्यात्व दर्शनशल्य.

आश्रव[1] किणनें कहीजे?

जीवरूपी तलाव पाप रूपी पाणी आश्रव रूपी नाळा वरके कर्म आवे जिणनें आश्रव कहीजे.

आश्रवरा वीस[2] भेद.

मिथ्यात्व ते आश्रव १, अव्रत ते आश्रव २, प्रमाद ते आश्रव ३, कषाय ते आश्रव ४, अशुभ योग ते आश्रव ५, हिंसा करे ते आश्रव ६, झूठ बोले ते आश्रव ७, चोरी करे

---

(१) 'मनोवचनकायाना यत्स्यात् कर्म स आश्रव' ॥ आसवदि जेण कम्म परिणामेणप्पणो स विण्णओ ॥ भावासवो जिणुत्तो, कम्मासवण परो होदि ॥१॥

(२) मिच्छत्ताविरदिपमाद, जोगकोहादओसविण्णेया ॥ पण पण पणदह-तिय, चदुकमसोभेदादुपव्वस्स ॥२॥

ते आश्रव ८, मैथुन सेवे ते आश्रव ९, परिग्रह राखे ते आश्रव १०, सोइंद्रिय मोकळी मेले ते आश्रव ११, चक्षुइंद्रिय मोकळी मेले ते आश्रव १२, घ्राणेंद्रिय मोकळी मेले ते आश्रव १३, रसेंद्रिय मोकळी मेले ते आश्रव १४, स्पर्शेंद्रिय मोकळी मेले ते आश्रव १५, मन मोकळो मेले ते आश्रव १६, वचन मोकळो मेले ते आश्रव १७, काया मोकळी मेले ते आश्रव १८, भंड उपगरण अजयणा मूं लेवे अजयणा मूं मेले ते आश्रव १९, सुई कुशाग्र मात्र अजयणा मूं लेवे अजयणा मूं मेले ते आश्रव २०.

संवर[1] किणने कहीजे?

जीव रूपी तलाव पाप रूपी पाणी आश्रव रूपीया नाळा करके कर्म आवे जिणनें संवर रूपी पाटीया करीनें रोके जिणने संवर कहीजे.

संवररा वीस[2] भेद.

समकित ते संवर १, व्रतते संवर २, अप्रमाद ते संवर ३, अकषाय ते संवर ४, शुभ योग ते संवर ५, हिंसा न करेते संवर ६, झूट न बोले ते संवर ७, चोरी न करे ते

(१) 'सर्वेपामाश्रवाणा यो रोधहेतु- स संवरः'॥ चेदणपरिणामोजो, कम्मस्सासवणिरोहणे हेऊ॥ सो भाव संवरो खलु, दव्वासव रोहणो अण्णो ॥१॥

(२) तवगमिदीगुत्तिओ, धम्माणुपिहा परिसहजओय ॥ चारित्त बहु भेया णायव्वा भावसवरविसेसा ॥२॥

संवर ८, मैथुन न सेवे ते संवर ९, परिग्रह न राखेते संवर १०, सोइंद्रिय वश करे ते संवर ११, चक्षु इंद्रिय वश करे ते संवर १२, घ्राणेंद्रिय वश करे ते संवर १३, रसेंद्रिय वश करे ते संवर १४, स्पर्शेंद्रिय वश करे ते संवर १५, मन वश करे ते संवर १६, वचन वश करे ते संवर १७, काया वश करे ते संवर १८, भंड उपगरण जयणासूं लेवे जयणासूं मेले ते संवर १९, सुईकुशाग्र मात्र जयणासूं लेवे जयणासूं मेले ते संवर २०.

निर्जरा[1] किणनें कहीजे?

देश थकी कर्म खपावे जिणनें निर्जरा कहीजे.

निर्जरारा[2] बारे भेद.

अनशन १, उणोदरी २, भिक्षाचरी ३, रसपरित्याग ४, काया क्लेश ५, परि संलीनता ६, प्रायश्चित्त ७, विनय ८, वैयावच ९, सज्झाय १०, ध्यान ११, कायोत्सर्ग १२.

---

१ 'कर्मणा भवहेतूना जरणादिह निर्जरा'। जहकालेण तवेणय भुत्तरस कम्मपुग्गलं जेण ॥ भावेण सडदि णेया, तस्सडणन्चेदि णिज्जरा दुविहा ॥२॥

२ अनशनमौनोदर्य वृत्ते· सक्षेपण तथा ॥ रसत्यागस्तनुक्लेशो, लीनतेति बहिस्तप ॥१॥ प्रायश्चित्त वैयावृत्य, स्वाध्यायो विनयोऽपिच॥ व्युत्सर्गोथ शुभ ध्यान, षोढेत्याभ्यन्तर तप.॥२॥

बंध[1] किणनें कहीजे?

कर्मोनें बांधे जिणनें बंध कहीजे.

बंधरा च्यार[2] भेद.

प्रकृतिबंध १, स्थिति बंध २, अनुभाग बंध ३, प्रदेश बंध ४.

मोक्ष[3] किणनें कहीजे?

सकल कर्म खपावे जिणनें मोक्ष कहीजे.

मोक्षरा च्यार भेद.

ज्ञान १, दर्शन २, चारित्र ३, तप ४.

नवतत्वमें तीन जाणवा जोग, तीन छांडवा जोग, ती आदरवा जोग.

जीव १, अजीव २, पुण्य ३, ए तीन जाणवा जोग

पाप १, आश्रव २, बंध ३, ए तीन छांडवा जोग.

संवर १, निर्जरा २, मोक्ष ३, ए तीन आदरवा जोग

---

१. 'सकषायतया जीव' कर्मयोग्यास्तु पुद्गलान् यदादत्ते सबवस्यात्.

२. वज्झदि कम्म जेण दु, चेदण भावेण भाव बंधो सो कम्मादपदेसाणं अण्णोण्णपवेसणं इदरो ॥ १ ॥ पयडिट्ठिदिअणुभाग पदेसभेदा दु चदुविधो बंधो ॥ जोगापयडिपदेसा, ठिदि अणु भागा कसायदो होंति ॥ २ ॥

३. सव्वस्स कम्मणो जो खयहेदू अप्पणोक्खु परिणामो ॥ णेओ स भावमोक्खो, दव्व विमोक्खोय कम्मपुध भावो ॥ ३ ॥ अभावाद्बन्धहेतूना निर्जराश्च यो भवेत् नि शेषकर्मनिर्मोक्ष. स मोक्ष कथ्यते जिनै ॥ ४ ॥

नवतत्वमें व्यवहार नयसूं ४ जीव, ५ अजीव.

जीव १, संवर २, निर्जरा ३, मोक्ष ४, ए ४ जीव.

अजीव १, पुण्य २, पाप ३, आश्रव ४, बंध ५, ए ५ अजीव.

नवंतत्वमें निश्चय नयसूं एक जीव. एक अजीव. एक जीव सो, जीव. अजीव सो अजीव. बाकी सात जीव अजीवरी पर्याय.

पनर में बोले आत्मा आठ.

द्रव्य आत्मा १, कषाय आत्मा २, योग आत्मा ३, उपयोग आत्मा ४, ज्ञान आत्मा ५, दर्शन आत्मा ६, चारित्र आत्मा ७, वीर्य आत्मा ८.

सोळ में बोले दंडक चौवीस.

दंडक किणनें कहिजे ?

जिण कर के आत्मा दंडीजे तिणनें दंडक कहीजे.

---

१ प्र. ९ तत्वमेंतत्वाकिता ? ओर पदार्थ किता ? उ॰ ७ तत्व ९ पदार्थः- तथेदम् सप्ततत्वानिः-जीवाऽजीवास्रवा बन्धसंवरावपि निर्जरा । मोक्षश्चेतीह तत्वानि सप्त स्युर्जिनशासने ॥१॥ ९ पदार्थानिः-वधातर्भाविनो. पुण्यपापयो· पृथगुक्ति पदार्था नव जायन्ते तान्येव भुवनत्रये ॥२॥

२ नेरइया असुराई, पुढवाई बेंदियादओचेव, गब्भयतिरियमणुस्सा, वितरजोइसियवेमाणी ॥१॥

दंडक[1] चौवीस.

सात नारकी नों एक दंडक.

सात नारकीना नाम[2]—घम्मा १, वंशा २, शीला ३, अंजणा ४, रिठा ५, मघा ६, माघवइ ७.

दश भवन पतिरा दश दंडक.

दश भवन पतिरा नाम[3].

असुर कुमार १, नाग कुमार २, सुवर्ण कुमार ३,

---

१ दंडकांरोविस्तार —सात नारकीरो एकदंडक. देवतारा १३, दश भवनपतिरा, एक व्यंतररो, एक ज्योतिषीरो, एक वैमानिकरो एव १३

नव तिर्यंच रा, पांच स्थावर का पाच, विकलेंद्रिय रा तीन, तिर्यंच पंचेद्रियरो १ एव ९ मनुष्यरो १ एवं सर्व मिल के—चोवीस.

प्र० २४ दंडक माहे सन्नी कित्ता और असन्नी कित्ता -उ० सन्नी १६ असन्नी ८, मनुष्य ओरपंचेंद्रिय तिर्यंच सन्नी सअन्नी दोनुं.

प्र० २४ दडक माहे भाषक कित्ता व अभाषक कित्ता—उ० भाषक १९ अभाषक ५ स्थावर. प्र० २४ दंडकाने १८ पाप, ८ कर्म, ४ कषाय, ४ संज्ञा ए सदाई लागूहे. मनुष्यमाहे केवली हुवा पछे फक्त ८ कर्म मायला ४ कर्म बाकी रेवे तेना नाम, वेदनी १, आयुष्य २, नाम ३, गोत्र, ये ४, बाकीरा नहीं. और दडकामें आठकर्मसर्वथा लागीयोडाहे.

२ घम्मावंसा सेला, अजण रिठा मग्घा य माघवई ॥ नामेहिं पुढवीओ छत्ताईच्छत्तसंठाणा ॥२॥ रयणप्पहा सक्कर पहा, वालुयपहा पंकपहय धूमपहा ॥ तमपहा तमतमा पहा कम्मेणपुढवीणगोत्ताइ ॥३॥

३ असुरा नाग सुवन्ना, विज्जु अग्गीय दीव उदहीअ ॥ दिसिपवयणथणियदसविह, भवणवई तेसु दुदु इंदा ॥४॥

विज्जु कुमार ४, अग्नि कुमार ५, द्वीप कुमार ६, उदधि कुमार ७, दिशा कुमार ८, पवन कुमार ९ स्तनित कुमार १०

पांच स्थावरना दंडक ५.

पृथ्वी कार्य १, अप् कार्य २, तेउ कार्य ३, वायु कार्य ४, वनस्पति कार्य ५.

तीन विकलेंद्रियना दंडक तीन.

बेइंद्रिये १, तेइंद्रिये २, चउरेंद्रिये ३. तिर्यंच पंचेंद्रियेरो एक दंडक. मनुष्यरो एक दंडक.

देवताना दंडक तीन.

वाण व्यंतर १, ज्योतिषी २, वैमानीक ३ [एकंदर २४]

सत्तरमें बोले लेश्या छ.

कृष्ण लेश्या १, नील लेश्या २, कापोत लेश्या ३, तेजु लेश्या ४, पद्म लेश्या ५, शुक्ल लेश्या ६.

---

१ लिप्यन्ते कर्मणा सह जीवा आभिर्लेश्या ॥ अर्थात् जिणसे कर्मोके व जीवरा बन्धन होवे उणरो नाम लेश्या है।

(१) अतिरौद्र सदा क्रोधी, मत्सरी धर्मवर्जित ।
निर्दयो वैरसंयुक्त, कृष्ण लेश्याधिकोनर ॥१॥

(२) अलसो मन्दबुद्धिश्च, स्त्रीलुब्ध परवंचक ।
कातरश्च सदामानी, नीललेश्याधिकोभवेत् ॥२॥

(३) शोकाकुलः सदारुष्ट, परनिन्दात्म शंसक ।
संग्रामे प्रार्थतेमृत्यु, कापोतक उदाहृत ॥३॥

अट्ठारमें बोले दृष्टि तीन.

समदृष्टि १, मिथ्यादृष्टि २, समामिथ्यादृष्टि ३.

उगणीस में बोले ध्यान च्यार.

आर्त्त ध्यान १, रौद्र ध्यान २, धर्म ध्यान ३, शुक्ल ध्यान ४.

वीसमे बोले षड् द्रव्यरो जांणपणो तीस बोल करीनें ओळखीजे.

धर्मास्ति¹ काय पांच बोल करीनें ओळखीजे.

द्रव्य थकी एक द्रव्य, क्षेत्रथकी लोक प्रमाणें, काळ-थकी आदि अंत रहित, भावथकी अरूपी, वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, गुणथकी चलण गुण जीवपुद्गलनें चाल वाको सहाय दे पाणीमें माछलारो दृष्टांत.

---

(४) विद्यावान् करुणायुक्त कार्याकार्यविचारक· ।
लाभालाभे सदा प्रीत·, पीतलेश्याधिकोनर ॥४॥
(५) अमायिश्च सदा त्यागी, देवार्चनरतोद्यमी ।
शुचिर्भूतसदानन्दः, पद्मलेश्याधिकोभवेत् ॥५॥
(६) रागद्वेषविनिर्मुक्त , शोकनिन्दाविवर्जित ।
परमात्मत्वसंपन्नः, शुक्ललेश्या भवेन्नरः ॥६॥

१ गइपरिणयाण धम्मो, पुग्गलजीवाण गमणसहयारी ॥
तोयंजह मच्छाणं, अच्छता णेव सो णेई ॥१॥
परिणामी गतेर्धर्मो, भवेत्पुद्गलजीवयोः॥ अपेक्षाकारणाल्लोके, मीनस्येव जलं सदा॥२॥
जैसें सलिल समूहमें, करेमीनगति कर्म ॥ तैसें पुद्गलजीवको चलन सहाइ धर्म ॥३॥

र्मास्ति[1] काय पांच बोल करीनें ओळखीजे.

द्रव्यथका एक द्रव्य, क्षेत्रथकी लोक प्रमाणें, काळथकी दि अंतरहित, भावथकी अरूपी, वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस ां, स्पर्श नहीं, गुणथकी स्थिर गुण, जीवपुद्गलनें स्थिर रवाको सहाय दे, थाका पंथीनें छायारो दृष्टांत.

काशास्ति[2] काय पांच बोल करीनें ओळखीजे.

द्रव्यथकी एक द्रव्य, क्षेत्रथकी लोकालोक प्रमाणें, ळथकी आदि अंतरहित, भावथकी अरूपी, वर्ण नहीं, र नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, गुणथकी आकाशरो विकास ग, भींतमांहे खुंटी रो दृष्टान्त.

---

१ ठाणजुयाण अधम्मो, पुग्गलजीवाण ठाण सहयारी ॥
छायाजह पहियाणं, गच्छंता णेव सो धरई ॥४॥
स्थितिहेतुरधर्मः स्यात्परिणामी तयोः स्थिते. ॥
सर्व साधारणो धर्मो, गत्यादिर्द्रव्ययोर्द्वयोः ॥५॥
ज्यों पंथिक ग्रीषम समय, बेठे छाया माह ॥
त्यों अधर्मकी भूमिमें, जड चेतन ठहराह ॥६॥

२ अवगासदाणजोग्गं, जीवादीणंवियाण आयासं ॥ जेण्हलोगागास, अलो-गासमिदिदुविह ॥१॥ धम्माधम्मा कालो, पुग्गलजीवायसंतिजावदिये॥ आयासे ा लोगो, तत्तोपरदो अलोगुत्तो ॥२॥ योदत्ते सर्व द्रव्याणां, साधारणावगाहनम्॥ ोकालोकप्रकारेण, द्रव्याकाश. स उच्यते ॥३॥ संतत जा के उदरमें, सकल दारथ वास॥ जोभाजन सब जगत को, सोही द्रव्य आकाश ॥४॥

काळ[1] पांच बोल करीनें ओळखीजे.

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, क्षेत्रथकी अढाई द्वीप प्रमाणें, कालथकी आदि अंतरहित, भावथकी अरूपी, वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, गुणथकी वर्त्तमान गुण, नवाने जुनोकरे, कपड़ारो दृष्टांत.

पुद्गलास्तिकाय[2] पांच बोल करीनें ओळखीजे.

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, क्षत्रथकी लोक प्रमाणें, काळथकी आदि अंतरहित, भावथकी रूपी, वर्ण हे, गंध हे, रस हे, स्पर्श हे, गुणथकी गिळे मिळे, आकाशमांहे बादळारो दृष्टान्त. जीवास्तिकाय पांच बोल करीनें ओळखीजे.

द्रव्यथकी अनंताद्रव्य, क्षेत्रथकी लोक प्रमाणे, काळथकी आदि अंतरहित, भावथकी अरूपी, वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, गुणथकी चैतन्य गुण, चंद्रमारी कळारो दृष्टांत.

---

१ दव्वपरिवट्टरूवो, जो सो कालो हवेइ ववहारो ॥ परिणामादिलक्खो, वट्टण लक्खो य परमट्ठो ॥१॥ लोयायास पदेसे, इक्केक्के जेठिया हु इक्केक्का ॥ रयणाणरासीमिव, ते कालाणु असंखदव्वाणि ॥२॥ वर्त्तनालक्षण· काल , पर्यव-द्रव्यमिष्यते॥ द्रव्यभेदात्तदानन्त्य, सूत्रख्यात सविस्तरम् ॥३॥ जो नवकरजीरनकरे, सकलवस्तुस्थितिस्थान ॥ परावर्त्त वर्त्तनधरे, कालद्रव्य सो जान ॥४॥

२ वर्णादिकेगुणैर्भेदा, ज्ञायते पुद्गलस्य च ॥ निसर्ग चेतनायुक्तो, जीवोरूपी ह्येवदक. ॥५॥ पुद्गल ओरजीवरोस्वरूपभेळोहे

एकवीसमें बोले राशि दोय.

जीव राशि १. अजीव राशि २.

बावीसमें बोले श्रावकरा बारे व्रत.

पहिले व्रतमें श्रावकजी हालता चालता विना अपराधे त्रसजीवरी हिंसा करे नहीं.

दूजे व्रतमें श्रावकजी मोटको झूठ बोले नहीं.

तीजे व्रतमें श्रावकजी मोटकी चोरी करे नहीं.

चोथे व्रतमें श्रावकजी परस्त्रीका त्याग करे, घर स्त्रीकी मर्यादा करे.

पांचमें व्रतमें श्रावकजी परिग्रहकी मर्याद करे.

छठे व्रतमें श्रावकजी छ दिशांरी मर्याद करे.

सातमें व्रतमें श्रावकजी छव्वीस बोलांरी मर्याद करे, पनरे कमादानं सेवे नहीं.

आटमें व्रतमें श्रावकजी अनर्थदंड सेवे नहीं.

नवमें व्रतमें श्रावकजी सामायिक करे.

दशमें व्रतमें श्रावकजी देशावकाशिक करे.

इग्यारमें व्रतमें श्रावकजी पोषध करे.

बारमें व्रतमें श्रावकजी साधु साध्वीनें चवदे मकारको निर्दोष दान देवे

तेवीसमें बोले साधुजी महाराजरा पांच महाव्रत.

पहिले महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे जीव हिंसा करे नहीं, करावे नहीं, करतानें भलो जाणे नहीं, मनकर, वचनकर, कायाकर.

दूजे महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलतानें भलो जाणे नहीं, मनकर, वचनकर, कायाकर.

तीजे महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे, चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करतानें भलो जाणें नहीं, मनकर, वचनकर, कायाकर.

चोथे महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं, सेवरावे नहीं, सेवतानें भलो जाणे नहीं, मनकर, वचनकर, कायाकर.

पांचमे महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं, राखतानें भलो जाणे नहीं, मनकर, वचनकर, कायाकर.

छठे व्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे रात्रि भोजन करे नहीं, करावे नहीं, करतानें भलो जाणे नहीं, मनकर, वचनकर, कायाकर.

चउवीसमें बोले श्रावकरा ४९ भांगा.

भगवतीसूत्र शतक ८ में उद्देशे पांचमें

अंक एक इग्यारेरो भांगा उठे ९

एक करण एक योगसूं केवणा.

करूं नहीं मणसा १, करूं नहीं वयसा २, करूं नहीं कायसा ३. कराऊं नहीं मणसा १, कराऊं नहीं वयसा २, कराऊं नहीं कायसा ३. अणमोदूं नहीं मणसा १, अणमोदूं नहीं वयसा २, अणमोदूं नहीं कायसा ३.

अंक एक १२ रो भांगा उठे ९

एक करण दो योगसूं केवणा.

करूं नहीं मणसा वयसा १, करूं नही मणसा कायसा २, करूं नहीं वयसा कायसा ३, कराऊं नहीं मणसा वयसा १, कराऊं नहीं मणसा कायसा २, कराऊं नहीं वयसा कायसा ३, अणमोदूं नहीं मणसा वयसा १, अणमोदूं नहीं मणसा कायसा २, अणमोदूं नहीं वयसा कायसा ३

अंक एक १३ रो भांगा उठे ३

एक करण तीन योगसूं केवणा.

करूं नहीं मणसा वयसा कायसा १, कराऊं नहीं

मणसा वयसा कायसा २, अणमोदूं नहीं मणसा वयसा कायसा ३.

अंक एक २१ रो भांगा उठे ९

दो करण एक योगसूं केवणा.

करूं नहीं कराऊं नहीं मणसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं वयसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा ३.

करूं नहीं अणमोदूं नहीं मणसा १, करूं नहीं अणमोदूं नहीं वयसा २, करू नहीं अणमोदू नहीं कायसा ३.

कराऊं नहीं अणमोदू नहीं मणसा १, कराऊं नहीं अणमोदूं नहीं वयसा २, कराऊं नहीं अणमोदूं नहीं कायसा३.

अंक एक २२ रो भांगा उठे ९

दो करण दो योगसूं केवणा.

करूं नहीं कराऊ नहीं मणसा वयसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं मणसा कायसा २, करू नही कराऊं नहीं वयसा कायसा ३.

करू नहीं अणमोदूं नहीं मणसा वयसा १, करूं नहीं अणमोदू नही मणसा कायसा २, करूं नही अणमोदूं नहीं वयसा कायसा ३.

कराऊं नही अणमोदूं नही मणसा वयसा १, कराऊ

नही अणमोदू नही मणसा कायसा २, कराउ नही अणमोदूं नही वयसा कायसा ३.

अंक एक २३ रो भांगा उठे ३
दो करण तीन योगसूं केवणा.

करू नहीं कराउ नही मणसा वयसा कायसा १,
करू नही अणमोदू नही मणसा वयसा कायसा २,
कराउ नहीं अणमोदू नही मणसा वयसा कायसा ३.

अंक एक ३१ रो भांगा उठे ३
तीण करण एक योगसूं केवणा.

करूं नहीं कराऊं नहीं अणमोदूं नहीं मणसा १,
करूं नहीं कराऊं नहीं अणमोदूं नहीं वयसा २,
करूं नहीं कराऊं नहीं अणमोदूं नहीं कायसा ३.

अंक एक ३२ रो भांगा उठे ३,
तीन करण दो योगसूं केवणा.

करू नहीं कराऊं नहीं अणमोदूं नहीं मणसा वयसा १,
करूं नहीं करारूं नहीं अणमोदूं नहीं मणसा कायसा २,
करूं नहीं कराऊं नहीं अणमोदूं नहीं वयसा कायसा ३.

अंक एक ३३ रो भांगो उठे १,
तीन करण तीन योगसूं केवणा.

करूं नहीं कराऊं नहीं अणमोदूं नहीं मणसा, वयसा, कायसा १.

पच्चीसमें बोले चारित्रं पांच.

सामायिक चारित्र १, छेदोपस्थापनिय चारित्र २ परिहार विशुद्धि चारित्र ३ सूक्ष्मसांपराय चारित्र ४ यथा ख्यात चारित्र ५.

---

१ सामाइयत्थपढमं, छेओवट्ठावणं भवेबीअ ॥ परिहारविसुद्धिय, सुहुमन हसपरायच ॥ १ ॥ तत्तोअहक्खायं, खायसव्वमिजीवलोगम्मि ॥ जचरिऊणसुवि-हिया, वच्चत अयरामरठाण ॥ २ ॥ सामायिक चारित्र ते करेमिभते उच्चारेमां पीछे जघन्य ७ दिन मज्झम ४ मास उत्कृष्ट ६ मास लग रहे सो छेदोपस्थाप नीय चारित्र तीजो परिहार० ९ को गण, नवजणा गच्छछोडी तपकरे १८ मास लगे पूरो हुवे ते. चोथो सूक्ष्मसपराय० १० मे गुणठाणे पावे ४ कषाय रापावे तापीछे यथाख्यात चारित्र ११-१२-१३-१४ गुणठाणे लाधे ज्युंसूत्रमेंकह्यो ज्यूंही चाले, सुविहित साधु हुवे.

विशेष वर्णन.

दोहरो.

प्रणिपतकर जिनराजकों, धर्म करण हित हेत ॥
तत्वातत्त्वनिमित्त जग, शुद्ध उपदेशहि देत ॥१॥

नंबर	नाम	संख्या	
१	गति	४	नारकी १, तिर्यंच २, मनुष्य ३, देवता ४.
२	जाति	५	एकेंद्रिय १, बेइंद्रिय २, तेइंद्रिय ३, चउरेंद्रिय ४, पंचेंद्रिय ५.
३	काय	६	पृथ्वी १, अप् २, तेउ ३, वायु ४, वनस्पती ५, त्रस ६.
४	इंद्रिय	५	श्रोतेंद्रिय १, चक्षुइंद्रिय २, घ्राणेंद्रिय ३, रसेंद्रिय ४, स्पर्शेंद्रिय ५.
५	पर्याप्ति	६	आहारपर्याप्ति १, शरीर पर्याप्ति २, इंद्रिय पर्याप्ति ३, इत्यादि.

नंबर	नाम	संख्या	
६	प्राण	१०	पांचइंद्रिय, तीनयोग, श्वासोच्छ्वास, आयुष्य.
७	शरीर	५	औदारिक १, वैक्रिय २, आहारक ३, तैजस ४, कार्मण ५.
८	योग	१५	४ मनरा, ४ वचनरा, ७ कायारा.
९	उपयोग	१२	५ ज्ञान, ३ अज्ञान, ४ दर्शन.
१०	गुणठाणा	१४	मिथ्यात्व १, सास्वादन २, मिश्र ३, अव्रतिसम्यक्दृष्टि ४, इत्यादि
११	विषय	२३	श्रोतेंद्रियरी ३, चक्षुइंद्रियरी ५, घ्राणेंद्रियरी २, रसेंद्रियरी ५, स्पर्शेंद्रियरी ८.
१२	तत्व	९	जीव १, अजीव २, पुण्य ३, पाप ४, आश्रव ५, संवर ६, निर्जरा ७, बंध ८, मोक्ष ९.
१३	आतमा	८	द्रव्य १, कषाय २, योग ३, उपयोग ४, ज्ञान ५, दर्शन ६, चारित्र ७, वीर्य ८.
१४	दंडक	२४	सातनारकीरो १, दश भवनपतिरो १०, पांचस्थावररा ५, विकलेंद्रियरा ३ इत्यादि

नंबर	नाम	संख्या	
१५	लेश्या	६	कृष्ण १, नील २, कापोत ३, तेजु ४, पद्म ५, शुक्ल ६.
१६	दृष्टि	३	समदृष्टि १, मिथ्या दृष्टि २, समामिथ्या दृष्टि ३.
१७	ध्यान	४	आर्त्त १, रौद्र २; धर्म ३, शुक्ल ४.
१८	षड्द्रव्य	६	धर्म १, अधर्म २, आकाश ३, काळ ४, पुद्गल ५, जीव ६.
१९	समुद्घात	७	वेदनी १, कषाय २, मार्णांतिक ३, वैक्रिय ४, तैजस ५, आहारक ६, केवळ ७.
२०	वेद	३	स्त्री १, पुरुष २, नपुंसक ३.
२१	आयुष्य	२	सोपक्रमी १, नोपक्रमी २.
२२	आहार	३	ओज १, लोम २, कवळ ३.
२३	संठाण	६	समचतुरस्र १, न्यग्रोध २, सादि ३, कुब्ज ४, वामन ५, हुंडक ६.
२४	संघयण	६	वज्रऋषभनाराच १, ऋषभनाराच २, नाराच ३, अर्द्धनाराच ४, कीलिका ५, सेवर्त्तक ६.
२५	जीवरा भेद	१४	
२६	काळ	३	शून्य १, अशून्य २, मिश्र ३.

नरक गतिरो विस्तार.

नंवर	नाम	संख्या	नरक गतिरो विस्तार.
१	गति	१	नरक गति.
२	जाति	१	पंचेंद्रिय.
३	काया	१	त्रस काय.
४	इंद्रिय	५	सर्व.
५	पर्याप्ति	६	सर्व.
६	प्राण	१०	सर्व.
७	शरीर	३	वैक्रिय, तैजस, कार्मण.
८	योग	११	मनरा ४, वचनरा ४, वैक्रिय, वैक्रियरोमिश्र २, कार्मण १.
९	उपयोग	९	३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन.
१०	गुणठाणा	४	मिथ्यात्व गु., सास्वादन गु., मिश्र गु., अव्रती सम्यक् दृष्टि.
११	विषय	२३	सर्व.
१२	तत्व	८	मोक्ष छोडने सर्व.
२३	आत्मा	७	चारित्र छोडने सर्व.
१४	दंडक	१	सात नारकीरो.
१५	लेश्या	३	कृष्ण, नील, कापोत.
१६	दृष्टि	३	सर्व.
१७	ध्यान	३	आर्त्त १, रौद्र २, धर्मध्यानरा पायामांहिलो पेलोपायो १.

नंबर	नाम	संख्या	नरक गतिरो विस्तार.
१८	षड्द्रव्य	६	सर्व.
१९	समुद्घात	४	पेली.
२०	वेद	१	नपुंसक.
२१	आयुष्य		जघन्य १०००० हजार वर्ष उत्कृष्ट ३३ सागर.
२२	आहार	३	कवळ १, ओज २, लोम ३.
२३	संठाण	१	हुंडक
२४	संघयण	०	
२५	जीवराभेद	३	सन्नीरो अपर्याप्तो १, पर्याप्तो २, असन्नीरो अपर्याप्तो ३.
२६	काळ	३	शून्य १, अशून्य २, मिश्र ३.

तिर्यंच गतिरो विस्तार.

नंबर	नाम	संख्या	तिर्यंच गतिरो विस्तार.
१	गति	१	तिर्यंच.
२	जाति	५	सर्व.
३	काया	६	सर्व.
४	इंद्रिय	५	सर्व.
५	पर्याप्ति	६	सर्व.
६	प्राण	१०	सर्व.
७	शरीर	४	औदारिक १, वैक्रिय २, तैजस ३, कार्मण ४.

नंबर	नाम	संख्या	तिर्यंच गतिरो विस्तार.
८	योग	१३	४ मनरा ४ वचनरा औदारिकदो १० वैक्रियदो १२ कार्मण १३
९	उपयोग	९	तीन ज्ञान पेला, ३ अज्ञान ६, चक्षुदर्शन ७, अचक्षुदर्शन ८, अव० ९.
१०	गुणठाणा	५	पेला.
११	विषय	२३	सर्व.
१२	तत्व	८	मोक्षछोडने सर्व.
१३	आत्मा	७	चारित्र आत्मा छोडने सर्व.
१४	दंडक	९	५ स्थावर, ३ विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय.
१५	लेश्या	६	सर्व.
१६	दृष्टि	३	सर्व.
१७	ध्यान	४	सर्व.
१८	षड्द्रव्य	६	सर्व.
१९	समुद्घात	५	पेली.
२०	वेद	३	सर्व.
२१	आयुष्य		जघन्य अंतर मुहूर्त, उत्कृष्ट ३ पल्योपम.
२२	आहार	३	सर्व.
२३	संठाण	६	सर्व.
२४	संघयण	६	सर्व.
२५	जीवराभेद	१४	सर्व.
२६	काळ	२	अशून्य १, मिश्र २.

मनुष्य गतिरो विस्तार.

नंवर	नाम	संख्या	मनुष्य गतिरो विस्तार.
१	गति	१	मनुष्य गति.
२	जाति	१	पंचेंद्रिय (सन्नी).
३	काया	१	त्रस.
४	इंद्रिय	५	सर्व.
५	पर्यासि	६	सर्व.
६	प्राण	१०	सर्व.
७	शरीर	५	सर्व. (स्वतामांहे ३, औदारिक १, तैजस २, कार्मण ३.)
८	योग	१५	सर्व. (स्वतामांहे ११, ४मनरा, ४ वचनरा, औदारिक दो १०, कार्मण ११.)
९	उपयोग	१२	सर्व. (स्वतामांहे ६, दो ज्ञानपेला, दो अज्ञानपेला ४, दो दर्शनपेला ६.)
१०	गुणठाणा	१४	सर्व. (स्वताश्रावकमाहे १, देशव्रति ५ मों, मुनिराजमें ६ ठो.)
११	विषय	२३	सर्व.
१२	तत्व	९	सर्व. (वर्तमानमांहे ८, मोक्ष छोडने.)
१३	आत्मा	८	सर्व. (श्रावकमांहे ७ चारित्र आत्मा छोडने.)

नंबर	नाम	संख्या	मनुष्य गतिरो विस्तार.
१४	दंडक	१	मनुष्यरो एकवीसमो.
१५	लेश्या	६	सर्व.
१६	दृष्टि	३	सर्व.
१७	ध्यान	४	सर्व.
१८	षड्द्रव्य	६	सर्व.
१९	समुद्घात	७	सर्व.
२०	वेद	३	सर्व.
२१	आयुष्य		जघन्य अंतर मुहूर्त्त, उत्कृष्ट क्रोडपूर्व, तथा ३ पल्य.
२२	आहार	३	सर्व.
२३	संठाण	६	सर्व.
२४	संघयण	६	सर्व.
२५	जीवरा भेद	२	सन्नीरो अपर्याप्तो १, पर्याप्तो २
२६	काळ	३	सर्व.

देव गतिरो विस्तार.

नंबर	नाम	संख्या	देव गतिरो विस्तार.
१	गति	१	देवगति.
२	जाति	१	पंचेंद्रिय.
३	काया	१	त्रस.
४	इंद्रिय	५	सर्व.
५	पर्याप्ति	६	सर्व. मन भाषा साथे बंधे.

नंबर	नाम	संख्या	देव गतिरो विस्तार.
६	प्राण	१०	सर्व.
७	शरीर	३	वैक्रिय १, तैजस २, कार्मण ३.
८	योग	११	४ मनरा, ४ वचनरा, वैक्रिय दो, कार्मण ११.
९	उपयोग	९	३ ज्ञानपेला, अज्ञान ३, दर्शन ३ पेला.
१०	गुणठाणा	४	पहिला.
११	विषय	२३	सर्व.
१२	तत्व	८	मोक्ष छोडने सर्व.
१३	आत्मा	७	चारित्र आत्मा छोडने बाकीरी सर्व.
१४	दंडक	१३	१० भवनपति, १ वानव्यंतर, १ ज्योतिषी, १ वैमानिक एवं १३.
१५	लेश्या	६	सर्व.
१६	दृष्टि	३	सर्व.
१७	ध्यान	३	आर्त, रौद्र, धर्म.
१८	षड्द्रव्य	६	सर्व.
१९	समुद्घात	५	पहिली.
२०	वेद	२	स्त्री १, पुरुष.
२१	आयुष्य		जघन्य १०००० वर्ष उत्कृष्ट ३३ सागर.
२२	आहार	२	लोम १, ओज २.

नंबर	नाम	संख्या	देव गतिरो विस्तार.
२३	संठाण	१	समचउरंस.
२४	संघयण	०	
२५	जीवराभेद	३	सन्नीपंचेंद्रियरो अपर्याप्तो १, पर्याप्तो २, असन्नीरो अपर्याप्तो.
२६	काळ	३	सर्व

एकेंद्रियमांहे विस्तार.

नंबर	नाम	संख्या	एकेंद्रियमांहे विस्तार.
१	गति	१	तिर्यंच
२	जाति	१	एकेंद्रिय (असन्नी.)
३	काय	५	पृथ्वी १, अप् २, तेउ ३, वायु ४, वनस्पति ५.
४	इंद्रिय	१	स्पर्शेंद्रिय.
५	पर्याप्ति	४	आहार १, शरीर २, इंद्रिय३, श्वासोच्छ्वास ४.
६	प्राण	४	स्पर्शेंद्रिय १, काया २, श्वासोछ्वास ३, आयुष्य ४.
७	शरीर	३	औदारिक १, तैजस २, कार्मण ३, वायुकायमें वैक्रिय वध्यो.

नंबर	नाम	संख्या	एकेंद्रियमाहे विस्तार.
८	योग	३	औदारिक दो, कार्मण -, वायुकायमें५ वैक्रिय, वैक्रियरोमिश्र'
९	उपयोग	३	मतिअज्ञान १, श्रुतअज्ञान २, अचक्षुदर्शन ३.
१०	गुणठाणा	१	पहिलो.
११	विषय	८	स्पर्शेंद्रियकी.
१२	तत्व	७	संवर, मोक्षछोडनेसर्व.
१३	आत्मा	६	ज्ञान आत्मा ओर चारित्र आत्माछोडनें.
१४	दंडक	५	स्थावरका ५.
१५	लेश्या	४	पहिली.
१६	दृष्टि	१	मिथ्या दृष्टि
१७	ध्यान	२	आर्त १, रौद्र २.
१८	षड्द्रव्य	६	सर्व.
१९	समुद्घात	४	पहिली.
२०	वेद	३	नपुंसक.
२१	आयुष्य		जघन्य अंतर मुहूर्त्त, उत्कृष्ट २२ हजार वर्ष.
२२	आहार	२	लोम १, ओज २,
२३	संठाण	१	हुंडक.
२४	संघयण	१	सेवर्तक.
२५	जीवराभेद	४	सूक्ष्मरा २, बादररा २.
२६	काळ	२	शून्य १ मिश्र २.

बेइंद्रियमांहे विस्तार.

नंबर	नाम	संख्या	बेइंद्रियमांहे विस्तार.
१	गति	१	तिर्यंच (असन्नी)
२	जाति	१	बेइंद्रिय (लट्ट, गिंडोळा, वाळा, अलसिया, सीप, शंख, वगेरे.)
३	काया	१	त्रस
४	इंद्रिय	२	रसेंद्रिय १. स्पर्शेंदिय २.
५	पर्याप्ति	५	मनछोडनें
६	प्राण	६	रसेंद्रिय १, स्पर्शेंद्रिय २, वचन ३, काया ४, श्वासोच्छ्वास ५, आयुप्य ६.
७	शरीर	३	औदारिक १, तेजस २, कार्मण ३.
८	योग	४	व्यवहार भाषा १, औदारिक दो ३, कार्मण ४.
९	उपयोग	५	दोज्ञानपहिला, दोअज्ञानपहिला, अचक्षुदर्शन ५.
१०	गुणठाणा	२	पहिला.
११	विषय	१३	८ स्पर्शेंद्रियरी, ५ रसेंद्रियरी.
१२	तत्व	८	मोक्षछोडने सर्व.
१३	आत्मा	७	चारित्र छोडनें
१४	दंडक	१	सत्तरमों बेइंद्रियरो.
१५	लेश्या	३	पहिली.

नंबर	नाम	संख्या	बेइंद्रियमांहे विस्तार.
१६	दृष्टि	२	सम्यक् दृष्टि १, मिथ्या दृष्टि २.
१७	ध्यान	२	पहिला
१८	षड्द्रव्य	६	सर्व.
१९	समुद्घात	३	पहिली
२०	वेद	१	नपुंसक.
२१	आयुष्य		जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट १२ वर्ष.
२२	आहार	३	सर्व
२३	संठाण	१	हुंडक.
२४	संघयण	१	सेवर्तक.
२५	जीवरा भेद	२	बेइंद्रियरो अपर्याप्तो १, पर्याप्तो २.
२६	काळ	३	सर्व

तेइंद्रियमांहे विस्तार.

नंबर	नाम	संख्या	तेइंद्रियमांहे विस्तार
१	गति	१	तिर्यंच (असन्नी).
२	जाति	१	तेइंद्रिय, [जूं, लीख, चांचड, माकड, गजाई, किडी वगेरे]
३	काया	१	त्रस.
४	इंद्रिय	३	घ्राणेंद्रिय, रसेंद्रिय, स्पर्शेंद्रिय.
५	पर्याप्ति	५	मन छोडने सर्व.

नंबर	नाम	संख्या	तेइंद्रियमांहे विस्तार.
६	प्राण	७	घ्राणेंद्रियबल, रसेंद्रिय, स्पर्शेंद्रिय, वचन, काया, श्वासोच्छ्वास आयुष्य.
७	शरीर	३	औदारिक १, तैजस २, कार्मण ३.
८	योग	४	व्यवहार भाषा, औदारिक, औदारिकरोमिश्र, कार्मण.
९	उपयोग	५	२ ज्ञान, २ अज्ञान, १ अचक्षुदर्शन.
१०	गुणठाणा	२	पहिला.
११	विषय	१५	८ स्पर्शेंद्रियरी, ५ रसेंद्रियरी, २ घ्राणेंद्रियरी.
१२	तत्त्व	८	मोक्षतत्व छोडने सर्व.
१३	आत्मा	७	चारित्र आत्मा छोडनें.
१४	दंडक	१	तेइंद्रियरो १८ मां.
१५	लेश्या	३	कृष्ण १, नील २, कापोत ३.
१६	दृष्टि	२	सम्यक् दृष्टि १, मिथ्या दृष्टि २.
१७	ध्यान	२	आर्त १, रौद्र २.
१८	षड्द्रव्य	६	सर्व.
१९	समुद्घात	३	पहिली.
२०	वेद	१	नपुंसक.
२१	आयुष्य		जघन्य अंतर मुहूर्त, उत्कृष्ट ४९ दिन.
२२	आहार	३	सर्व.

नंबर	नाम	संख्या	तेइंद्रियमांहे विस्तार.
२३	संठाण	१	हुंडक.
२४	संघयण	१	सेवर्तक.
२५	जीवराभेद	२	तेइंद्रियरो अपर्याप्तो, पर्याप्तो.
२६	काळ	२	सर्व.

चऊरेंद्रियमांहे विस्तार.

नंबर	नाम	संख्या	चऊरेंद्रियमांहे विस्तार.
१	गति	१	तिर्यंच (असन्नी) ·
२	जाति	१	चउरिंद्रिय टीड, पतंग, भमर,
३			मच्छर, माखी, विच्छू व-गैरे.
४	काय	१	त्रस
५	इंद्रिय	४	श्रोतेंद्रियछोडने सर्व.
	पर्याप्ति	५	मनःपर्याप्ति छोडने सर्व.
६	प्राण	८	श्रोतेंद्रियबलप्राण, ओरमनब० छोडने सर्व.
७	शरीर	३	औदारिक, तैजस, कार्मण.
८	योग	४	व्यवहारभाषा, औदारिकदो, कार्मण.
९	उपयोग	६	दोज्ञान, दो अज्ञान, चक्षुद-र्शन, अचक्षुदर्शन.
१०	गुणठाणा	२	पहिला.

नंबर	नाम	संख्या	चऊरेंद्रियमांहे विस्तार.
११	विषय	२०	श्रोतेंद्रियरी छोडने सर्व.
१२	तत्व	८	मोक्षतत्व छोडनें.
१३	आत्मा	७	चारित्र आत्मा छोडने सर्व.
१४	दंडक	१	१९ मों चउरिंद्रियरो
१५	लेश्या	३	पहिली.
१६	दृष्टि	२	सम्यक् दृष्टि, मिथ्यादृष्टि.
१७	ध्यान	२	आर्त, रौद्र.
१८	षड्द्रव्य	६	सर्व.
१९	समुद्घात	३	पहिली.
२०	वेद	१	नपुंसक.
२१	आयुष्य		जघन्यअंतरमुहूर्त, उत्कृष्ट ६ मास.
२२	आहार	३	सर्व.
२३	संठाण	१	हुंडक.
२४	संघयण	१	सेवर्तक.
२५	जीवरा भेद	२	चउरिंद्रियरो अपर्याप्तो, पर्याप्तो.
२६	काळ	३	सर्व.

असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रियमांहे विस्तार.

नंबर	नाम	संख्या	असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रियमांहे वि.
१	गति	१	तिर्यंच (जलचर, स्थलचर, खेचर, उरपर, भुजपर)

नंबर	नाम	संख्या	असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रियमांहे वि.
२	जाति	१	पंचेंद्रिय (हाथी, मूवा, ऊंद-रा, मींडका, वगेरे.
३	काया	१	त्रस.
४	इंद्रिय	५	सर्व.
५	पर्याप्ति	५	मनपर्याप्ति छोडने सर्व.
६	प्राण	९	मनबलप्राण छोडने सर्व
७	शरीर	३	औदारिक, तैजस, कार्मण.
८	योग	४	व्यवहारभाषा, औदारिक, औदारिकरोमिश्र, कार्मण.
९	उपयोग	६	दोज्ञान, दो अज्ञान, चक्षुद-र्शन, चक्षुदर्शन.
१०	गुणठाणा	२	पहिला.
११	विषय	२३	सर्व.
१२	तत्व	८	मोक्षतत्व छोडनें सर्व.
१३	आत्मा	७	चारित्र आत्मा छोडनें सर्व.
१४	दंडक	१	वीसमों पंचेंद्रितिर्यंचरो.
१५	लेश्या	३	कृष्ण, नील, कापोत.
१६	दृष्टि	२	सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि.
१७	ध्यान	२	आर्त, रौद्र.
१८	षड्द्रव्य	६	सर्व.
१९	समुद्घात	३	पहिली.
२०	वेद	१	नपुंसक.

नंवर	नाम	संख्या	असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रियमांहे वि.
२१	आयुष्य		जघन्य अंतर मुहूर्त, उत्कृष्ट क्रोडपूर्व.
२२	आहार	३	सर्व.
२३	संठाण	१	हुंडक.
२४	संघयण	१	सेवर्तक.
२५	जीवरा भेद	२	असन्नी पंचेंद्रियरो अपर्याप्तो, पर्याप्तो.
२६	काळ	३	सर्व.

असन्नी मनुष्यमांहे विस्तार.

नंवर	नाम	संख्या	असन्नी मनुष्यमांहे विस्तार
१	गति	१	मनुष्यगति (असन्नी)
२	जाति	१	पंचेंद्रिय.
३	काया	१	त्रस.
४	इंद्रिय	५	सर्व.
५	पर्याप्ति	४	भाषापर्याप्ति, मनपर्याप्ति, छोडने
६	प्राण	७॥	मनवलप्राण, वचनवलप्राण, उच्छ्वास ॥ एकदर २॥ छोडने
७	शरीर	३	औदारिक, तैजस, कार्मण.
८	योग	३	औदारिक, औदारिकरोमिश्र, कार्मण.
९	उपयोग	४	दो अज्ञान, दो दर्शनपेला.

नंबर	नाम	संख्या	असन्नी मनुष्यमांहे विस्तार.
१०	गुणठाणा	१	पहिलो.
११	विषय	२३	सर्व.
१२	तत्व	७	संवरतत्व, ओरमोक्षतत्व, छोडने सर्व.
१३	आत्मा	६	ज्ञानआत्मा, और चारित्र आत्मा छोडने सर्व.
१४	दंडक	१	२१ मों मनुष्यरो.
१५	लेश्या	३	पहिली
१६	दृष्टि	१	मिथ्या दृष्टि.
१७	ध्यान	२	आर्त १, रौद्र २.
१८	षड्द्रव्य	६	सर्व
१९	समुद्घात	३	पहिली
२०	वेद	१	नपुंसक
२१	आयुष्य		जघन्य, उत्कृष्ट अंतर मुहूर्त.
२२	आहार	३	सर्व.
२३	संठाण	१	हुंडक.
२४	संघयण	१	सेवर्तक.
२५	जीवरा भेद	१	असन्नी मनुष्यरो अपर्याप्तो.
२६	काळ	३	सर्व.

अथ द्रव्यानुयोगमें सातनयोंका स्वरूप हिंदी भाषा करके दिखाते हैं.

नीयते येन श्रुताख्यप्रमाणविषयीकृतस्यार्थस्यांशः तादितरांशौदासीन्यतः स प्रतिपत्तुराभिप्रायविशेषो नयः।

अर्थात् प्रत्यक्षादि प्रमाणोंसे निश्चित किये अर्थ के अंश अथवा वहुतसे अंशोंको ग्रहण करे और वाकी वचे अंशोंमें उदासीन रहे, याने इतरका निषेध न करे, ऐसा वक्ताका आभिप्राय विशेष 'नय' कहलाताहे। यदि इतर अंश का उदासीन न होकर निषेधही करे तो नयाभास कहा जायगा।

[1]नयके भेद-नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शद्ब, समभिरूड तथा, एवंभूत रुपसे सात प्रकारके है.

उसमें १ नैगम[2] वह कहलाता है, जो द्रव्य और पर्याय इन दोनों को सामान्य विशेष युक्त मानता हो, क्यों

---

१ नैगमः संग्रहश्चैव व्यवहारर्ज्जुसूत्रकौ। शद्ब समभिरूडैवं भूतो चेति नयाः स्मृता. ॥१॥

२ नैगमो वहुमानः स्यात्तस्य भेदस्त्रयस्तथा। वर्तमानारोपकृते भूतार्थेषु चः तत्पर ॥१॥

कि वह कहता है कि सामान्य विना विशेप नहीं होता और विशेप विना सामान्य रह नहीं सकता।

संग्रह[1] नय २, हर एक वस्तुको सामान्यात्मक ही मानता है क्योंकि वह कहता हे कि सामान्य से भिन्न विशेप कोई पदार्थही नहीं हे।

व्यवहार[2] नय ३, हरएक वस्तु को विशेपात्मकही मानता है।

ऋजुसूत्र[3] ४, अतीत और अनागत को नहीं मानता केवल कार्य कर्त्ता वर्तमानही को मानता हे।

शद्बनय[4] ५, अनेक पर्यायों (शद्वान्तर) से एकही अर्थका ग्रहण करता हे।

समभिरूढनय[5] ६, पर्याय के भेदसे अर्थको भी भिन्न कहता हे।

---

१ सग्रहो द्विविधोज्ञेय सामान्याच्च विशेपत ।
द्रव्याणि चाविरोधीनि यथा जीवा. समे समा ॥ १ ॥

२ संग्रहभेदक व्यवहारोऽपि द्विविध. स्मृत । जीवाजीवौ यथा द्रव्यं जीवा सन्सारिण शिवाः ॥ २ ॥

३ स्वानुकूलं वर्त्तमानं ऋजुसूत्रो हि भापते । तत्र क्षणिकपर्याय सूक्ष्म स्थूलो नरादिकम् ॥ ३ ॥

४ शाद्बिको मनुते शद्व सिद्धं धात्वादिभिस्तथा ।

५ भिन्नं समभिरूढाख्यः शद्बमर्थं तथैव च ॥ ८ ॥ शद्ब औरसमभिरूढ ए दोय नयानो वर्णन चोथे श्लोकमें है.

एवंभूतनय[1] ७, स्वकीय कार्य करनेवाली वस्तुको ही वस्तु मानता है।

इन सातो नयोंका द्रव्यार्थिक नय और पर्य्यायार्थिक नय में समावेश होता है। ये पूर्वोक्त नय और परस्पर विरूद्ध रहने पर भी मिलकर ही जैन दर्शन का सेवन[2] करते हैं। इसमें दृष्टांत यह हैकि जैसे संग्रामकी युक्तिसे पराजित समग्र सामन्त राजा परस्पर विरुद्ध रहनेपर भी एकत्रित होकर चक्रवर्ति राजाकी सेवा करते हैं।

इनका विस्तार पूर्वक वर्णन[3], नयचक्रसार और स्याद्वादरत्नाकर के सातवे परिच्छेद आदिमे है; जिज्ञासुको वहाँ देख लेना चाहिये।

---

१ क्रियापरिणतार्थं चेदेवंभूतो नयो वदेत्।

२ सर्वे नया अपि विरोधभृतो मिथस्ते सभूय साधुममयं भगवन्! भजन्ते। भूपा इव प्रतिभटा भुवि सार्वभौम—पादाम्बुजं प्रधनयुक्तिपराजिता द्राक् ।४।

३ This extract is written under the authorities of Jain Tatwa Digdarshan, and the deep suspicions if any arise, the said book may be consulted.

इग्यारमें बोले गुणठाणा १४ को स्वरूप.

मिथ्यात.	जैन धर्म उपर दुष्ट भाव राखे, ओर जैन धर्मसूं उलट रेवे जैनदेव, गुरु, धर्मरी निंदाकरे.
सास्वादन.	समकित मात्र छे आवलिका रेवे. एक मुहूर्त मांहे आवलिका[1],१६७,७७,२,१६. होवेहे.
मिश्र.	जैन धर्म तथा अन्यधर्म ए दोनु धर्मांउपर श्रद्धा राखे पक्कावट एक धर्म मानेनहीं.
अव्रतीसम्य०	जैन धर्म माथे पक्कावट श्रद्धा राखे पिण व्रत पच्चक्खाण बिलकुल करे नहीं.
देशव्रती.	देशथकी व्रतपच्चक्खाण करे उणनें पांचमें गुणस्थान व्रती श्रावक केवे हे।
६ प्रमत्त.	सर्व थकी पच्चक्खाण उदयमांहे आवे [अर्थात्] साधुपद अंगिकार करे [ओगुणटाणो फक्त साधु साध्वीमांहे पावे.]
७ अप्रमत्त.	पांच प्रकारका प्रमाद निवर्तन करे.
८ नियट्ट वादर.	वादर पदमूं निवर्तन हुवे.
९ अनियट्ट वा०	अपूर्व कर्ण अगिकार करे ओर उपशम श्रेणीसूं हेठोपडे तथा खपक श्रेणीमूं इग्यारे गुणठाणाताई उपर चढे.

१ एगा कोडी सतसट्ठी लक्खा, सतहत्तरी सहस्साय।
दोयसया सोलहिया, आवलियाणमहुत्तंमि ॥ १ ॥

१० सूक्ष्मसंप०	संजलका क्रोध, मान माया, लोभने खपावे.
११ उपशांतमो०	मोहनीय कर्मने उपरसूं शांतकरे पिण मांहे मोहनीय कर्म कायम राखे.
१२ क्षिण मोह.	सर्व प्रकारसूं मांहेला तथा वारला मोहनीय कर्मरो क्षयकरे, और चार घनघाती कर्म खपावे. [ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अंतराय.
१३ सयोगी के०	योग सहित दश बोल प्राप्त हुवे (शुक्लध्यान १, यथाख्यात चारित्र २, क्षायिकसमकित ३, केवलज्ञान ४, केवलदर्शन ५, लब्धि, दान ६, लाभ ७, भोग ८, उपभोग ९, बलवीर्य १०.)
१४ अयोगी के०	योग रहित हुवे और चार अघातिया कर्म खपावे [आयुष्य १, नाम, गोत्र ३, वेदनीय ४.]

इण मुजब आपणा मांहे, १४ गुणठाणा के० गुणस्थान कह्या हे, ए मोक्ष मार्गरा पगथीया हे, इण गुणठाणारो जाणपणों हुयासूं मोक्षपद और आत्मिक सुख मिले.

१४ गुणठाणाकी स्थिति.

मिथ्यातकी स्थिति तीन प्रकाररी बताई हे. अणाइया अपज्जवसिया, अभव्य आश्री. ओर अणाइया सपज्जवसिया भव्य जीव आश्री. साइया सपज्जवसिया, पड़वाई सम्यग् दृष्टि आश्री. जिणरी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्टी, अर्द्धपुद्गल परावर्तन.

सास्वादनकी स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्टी ६ आवलिका.

मिश्रकी स्थिति जघन्य उत्कृष्टी अंतर मुहूर्त. अव्रती सम्यग् दृष्टिकी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्टी ६६ सागरोपम जाझेरी.

देशव्रती[5] ओर प्रमत्त[6] व सयोगी[13] गु० स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्त, उत्कृष्टी देश उनी क्रोड पूर्व आठ वर्ष घाट.

अप्रमत्त[7], नियट्ट बादर[8], अनियट्ट बादर[9], सूक्ष्मसंपराय[10], उपशांत मोह[11], ए पांच गु० की स्थिति जघन्य १ समय उत्कृष्टी अंतर मुहूर्त.

क्षीण मोह[12] गु० की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अतर मुहूर्त. अयोगी[14] गु० की, स्थिति ५ लघु अक्षरकी हे.

१४ गुणठाणारा प्रश्नोत्तर.

१. प्रश्न. १४ गुणठाणामांहे सावद्य कित्ता ओर निर्वद्य कित्ता.

उत्तर. मिथ्यात्व १, ओर मिश्र ३, ए दो सावद्य बाकीरा १२ निर्वद्य.

२. प्र० १४ गुणठाणामांहे धर्मी कित्ता ओर अधर्मी कित्ता.

उ० मिथ्यात्व १, ओर मिश्र ३, ए दो अधर्मी बाकीरा १२ धर्मी.

३. प्र० १४ गुणठाणामांहे परमति कित्ता ओर स्वमति कि.

उ० मिथ्यात्व १, ओर मिश्र ३, ए दो परमति बाकीरा १२ स्वमति.

४. प्र० १४ गुणठाणामांहे विराधिक कित्ता ओर आराधिक कित्ता.

उ० मिथ्यात्व १, ओर मिश्र ३, ए दो विराधिक बाकीरा १२ आराधिक.

५. प्र० १४ गुणठाणामांहे आज्ञाबारे कित्ता ओर आज्ञामांहे कित्ता.

उ० मिथ्यात्व १, ओर मिश्र ३, ए दो आज्ञाबारे बाकीरा १२ आज्ञामांहे.

६. प्र० १४ गुणठाणामांहे मिथ्यादृष्टि कित्ता ओर सम्यक् दृष्टि कित्ता.

उ० मिथ्यात्व १, ओर मिश्र ३ ए दो मिथ्यादृष्टि बाकीरा सम्यक् दृष्टि.

७. प्र० १४ गुणठाणामांहे अज्ञानी कि. ओर ज्ञानी कि.

उ० मिथ्यात्व १, ओर मिश्र ३, ए दो अज्ञानी वाकीरा १२ ज्ञानी.

८ प्र० १४ गुणठाणामांहे अव्रती कि. ओर व्रती कि.
उ० पहिला ४ अव्रती, पांचमों व्रताव्रती, वाकीरा ९ व्रती.

९ प्र० १४ गुणठाणामांहे असंवरी कि. ओर संवरी कि. संवरा संवरी कि.
उ० पहिला ४ असंवरी, पांचमों संवरासंवरी, वाकीरा ९ संवरी.

१० प्र० १४ गुणठाणामांहे अकेवली कि. ओर केवली कि.
उ० सयोगी १३, ओर अयोगी १४ ए दो केवली ओर वाकीरा १२ अकेवली.

११ प्र० १४ गुणठाणामांहे अवेदी कि. ओर सवेदी कि.
उ० १० मों, ११ मों, १२ मों, १३ मों, १४ मों, ए ५ अवेदी वाकी ९ सवेदी.

१२ प्र० १४ गुणठाणामांहे सरागी कि. ओर वीतरागी कि.
उ० ११ मों, १२ मों, १३ मों, १४ मों, ए वीतरागी वाकीरा १० सरागी.

१३ प्र० १४ गुणठाणामांहे कित्ता काळकरे कित्ता नहीं करे.
उ० तीजो, १२ मो, १३ मों, ए तीन काळ नहीं करे वाकीरा ११ काळ करे.

१४ प्र० १४ गुणठाणामांहे शाश्वता कि. ओर अशाश्वता कि.
उ० तीजो, ४ थो, ५ मों, छट्टो, १३ मों, ए ५

शाश्वता वाकीरा ९ अशाश्वता.

१५ प्र. १४ गुणठाणामांहे प्रमत्त कि. अप्रमत्त कि.
उ० पहिला ६ गु० प्रमत वाकीरा ८ अप्रमत्त.

१६ प्र० गुणठाणामांहे अकषायी सकषायी कि.
उ० ११ मों, १२ मों, १३ मों, १४ मों, ए ४ अकषायी वाकीरा १० सकषायी.

१७ प्र. १४ गुणठाणामांहे सयोगी कि. ओर अयोगी कि.
तेरे सयोगी, चवदमों एक अयोगी.

१८ प्र० १४ गुणठाणामांहे अलेशी कि. ओर सलेशी कि.
उ० चवदमों एक अलेशी, ओर १३ सलेशी.

१९ प्र. १४ गुणठाणामांहे सइंद्रिय कि. ओर अनेंद्रिय कि.
उ. १२ सइंद्रिय, १३ मों, चवदमों, ए दो अनेंद्रिय.

२० प्र. १४ गुणठाणामांहे अचारित्त कि. ओर चारित्त कि.
उ. पहिला ४ अचरित्त पांचमों चरित्ताचारित्त वाकीरा ९ चरित्त.

२१ प्र० १४ गुणठाणामांहे असंयति कित्ता ओर संयति कित्ता.
उ० पहिला ४ असंयति पांचमों संयतासंयति वाकी ९ संयति.

२२ प्र० १४ गुणठाणामांहे पडवाई कित्ता ओर अपडवाई कित्ता.
उ० पहिला ११ पडवाई ओर १२ मों, १३ मों १४ मों, ए तीन अपडवाई.

२३ प्र० १४ गुणठाणामांहे तीर्थंकर गोत्र कित्ता बांधे ओर कित्ता नहीं बांधे.

उ० ९ बांधे ओर पहिलो, दुजो, तीजो, १३ मों, १४ मों. ए ५ नहीं बांधे.

२४ प्र० १४ गुणठाणामांहे भव्यकित्ता ओर अभव्य कित्ता.

उ० पहिलो गु० भव्य अभव्यदोनुं बाकीरा १३ भव्य

२५ प्र० १४ गुणठाणामांहे वाटे वहिता जीवमांहे कित्ता गुणठाणा पावे, कित्ता नहीं पावे.

उ० पहिला तीन गु० पावे ओर बाकीरा ११ नहीं पावे.

२६ प्र० १४ गुणठाणामांहे तीर्थंकर गोत्र किता गुणठाणा-स्पर्शे ओर किता नहीं स्पर्शे.

उ० पहिला ३ पांचमों, ११ मों, ए ५ नहीं स्पर्शे, बाकीरा ९ स्पर्शे.

२७ प्र० १४ गुणठाणामांहे भाषक किता ओर अभाषक किता.

उ० पहिला ४ भाषक अभाषकदोनुं १४ मों अभाषक बाकीरा ९ भाषक.

२८ प्र० १४ गुणठाणामांहे ५ चारित्रमांहेला किता कित्ता गुणठाणा मांहे पाव.

उ० ११ मों, १२ मों, १३ मों, १४ मों, ए ४ में यथा ख्यात बाकीरा १० गु० ४ चारित्र पावे.

२९ प्र० कित्ता गुणठामांहे समकित पावे.

उ० मिथ्यात्व १, ओरमिश्र एदो गु० समकित नहीं बाकी सर्व में पावे. सास्वादन गु० में १ सास्वादन.

३० प्र. चोथे, पांचमें, छट्टे, सातमें, ए ४ गुण० माहे समकित किति पावे.

उ० ४ (उपशम १ क्षयोपशम २, वेदक ३ क्षायिक ४)

३१ प्र० नियट्ट ओर अनियट्ट एदो गु० में समकित किति पावे.

उ० तीन (उपशम १, क्षयोपशम २, क्षायिक ३)

३२ प्र० सूक्ष्म सांपराय १०, उपशांत ११, एदो गु० में कि० समकित पावे.

उ० २ (उपशम १, क्षायिक २)

३३ प्र० क्षीणमोह १२, सयोगी १३, अयोगी १४, ए तीन गु० तथा सिद्धामें कि० समकित पावे.

उ० १ (क्षायिक समकित पावे)

३४ प्र० पहिल गुणठाणेंमें दंडक कि० पावे

उ० २४.

३५ प्र० सास्वादन २ गु० मांहे कि० दंडक पावे.

उ० १९ पावे (पांच स्थावररा टाळनें)

३६ प्र० मिश्र ३ गु० मांहे कि० दंडक पावे.

उ० १६ पावे (पांच स्थावर तीन विकलेंद्रिय टाळनें)

३७ प्र० अव्रती सम्यगदृष्टि ४ गु० मांहे कि० दंडक पावे.

उ० १६ पावे (५ स्थावर तीन विकलेंद्रिय टाळनें)

३८ प्र० देशव्रती ५ गु० माहे कि० दंडक पावे.

उ० दो, पंचेंद्रियतिर्यंच २०, मनुष्य २१, एदो पावे.

३९ प्र० छट्ठे गुणठाणेसूं लेने १४ में गुणठाण तांई कि० दंडक पावे.

उ० १ मनुष्यरो २१ मों दंडक पावे.

४० प्र० पहिला तीन गु० ध्यान कि० पावे.
उ० दोय (आर्त्त १, रौद्र २.)

४१ प्र० चोथे, पांचमें एदो गुणठाणामांहे ध्यान कि० पावे.
उ० ३ (आर्त १, रौद्र २, धर्म ३.)

४२ प्र० प्रमत्त गु० ६, मांहे ध्यान कि० पावे.
उ० दो (आर्त १, धर्म २.)

४३ प्र० अप्रमत्त ७ गु० मांहे ध्यान कि० पावे.
उ० १ (धर्म ध्यान १.)

४४ प्र० आठमा गुण ठाणासूं लगायनें १४ मा गु० तांई ध्यान कित्ता पावे.
उ० १ (शुक्ल ध्यान पावे.)

अपर्याप्ता पर्याप्तारी ओळख.

जिण योनीमें जीव उत्पन्न हुवे उण योनीरो आहार नहीं लीयो जठातांई अपर्याप्तक. आहार लीयां पछे पर्याप्तक, वाटे वहितां पण अपर्याप्तक हे.

वाटे वहितां जीवरा प्रश्नोत्तर.

१ प्र० वाटे वहिता जीवमें समकित कित्तिपावे.
उ० ४, वेदक समकित टली.

२	प्र०	वाटे वहिता जीवमें शरीर कित्ता पावे.
	उ०	दो, तैजस १, कार्मण २.
३	प्र०	वाटे० गुणठाणा कित्ता पावे.
	उ०	३, मिथ्यात्व १, सास्वादन २, अव्रतीसम्यग् दृष्टी ४, ३ पावे.
४	प्र०	वाटे० योगकित्ता.
	उ०	कार्मण.
५	प्र०	वाटे० उपयोग कित्ता.
	उ०	मनः पर्यवज्ञान, और चक्षुदर्शन टाळनें, बाकीग ·० पावे.
६	प्र०	वाटे० इंद्रिय कित्ति.
	उ०	५ छद्मस्थ मांहेछे, केवळीमें नहीं.
७	प्र०	वाटे० लेश्या कित्ति.
	उ०	६ छद्मस्थ मांहेछे, केवळीमें नहीं.
८	प्र०	वाटे० दृष्टि कित्ति.
	उ०	दो, सम्यग् दृष्टि १, मिथ्यादृष्टि २.
९	प्र०	अज्ञान कित्ता पावे.
	उ०	३, केवळी आश्री नहीं.
१०	प्र०	वाटे० प्राण कित्ता.
	उ०	१, आयुष्य.
११	प्र०	वाटे० ज्ञान कित्ता.
	उ०	४, मनः पर्यव टाळनें.
१२	प्र०	वाटे० वेद कि०.
	उ०	३, अवेदी पिण हुवे.
१३	वाटे	पर्याप्ति कि०

	उ०	नहीं.
१४	प्र०	वाटे० जीवरी स्थिति कि०
	उ०	जघन्य १ समय उत्कृष्टि ४ समय.
१५	प्र०	वाटे० कषाय कि०
	उ०	४. नहीं भी होवे.
१६	प्र०	वाटे जीवरा भेद कि०
	उ०	७, अपर्याप्ता.
१७	प्र०	वाटे० सन्नी हे के असन्नी.
	उ०	सन्नी असन्नी दोनुं.
१८	प्र०	वाटे० त्रस हे के स्थावर.
	उ०	दोनुं.
१९	प्र०	वाटे० आत्मा कित्ति.
	उ०	७. चारित्र आत्मा छोडनें.
२०	प्र०	वाटे० संज्ञा कि०
	उ०	४. नहीं भी पावे.
२१	प्र०	वाटे० भाषक हे के अभाषक.
	उ०	अभाषक.
२२	प्र०	वाटे० कर्ण कि०
	उ०	२८
२३	प्र०	वाटे० हेतु कि०
	उ०	३३
२४	प्र०	वाटे० सूक्ष्म हे के बादर.
	उ०	दोनु.
२५	प्र०	वाटे० आहारीक हे के अणाहारीक.
	उ०	अणाहारीक.

२६। प्र०। वाटे वहिता जीव सक्रिय हे के अक्रियहे.
उ० दोनुंहे.

धारवा योग छुटकर बोल.

समकित ६, क्षायिक १, क्षयोपशम २, उपशम ३, सास्वादन ४, वेदक ५.

नय[1] ७, नैगम १, संग्रह २, व्यवहार ३, ऋजुसूत्र ४, शब्द ५, समभी रूढ ६, एवंभूत ७.

निक्षेपा ४, नाम १, स्थापना २, द्रव्य ३, भाव ४.

प्रमाण २, प्रत्यक्ष[2] १, परोक्ष २, (तद्विभेदं प्रत्यक्ष च परोक्ष च. स्पष्टं प्रत्यक्षं, अस्पष्टं परोक्ष.)

क्रिया ५, काइया १, अहिगरणीया २, पाउसिया ३, पारितावणिया ४, पाणाइवाय ५.

अनुयोग ४, चरणकरणानुयोग १, (आचाराङ्ग आदि.)
द्रव्यानुयोग २, (पन्नवणा आदि.)
धर्म कथानुयोग ३, (ज्ञातासूत्र आदि.)
गणितानुयोग ४, (चंद्रप्रज्ञप्ति आदि)

समवाय ५, काळ १, स्वभाव २, नियति ३, पूर्वकृत ४, पुरुषाकार ५.

---

(१) नैगम १, संग्रह २, व्यवहार ३, ए तीन नय व्यवहारनें प्रधान मानेहे
शब्द, समभिरूढ, एवंभूत, ए तीन, नय निश्चयने प्रधान मानेहे
ऋजुसूत्र दनु माने हे

(२) प्रमाणनयतत्वालोकालङ्कार ग्रन्थसूं प्रत्यक्ष, परोक्षरो विस्तार देखनो पृ० ४ सू० ९ तक.

संज्ञा	४, आहार १, भय २, मैथुन ३, परिग्रह ४.
कषाय	४, क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४.
त्रिपदी	३, उत्पाद १, व्यय २, ध्रौव्य ३.
गुप्ति	३, मन १, वचन २, काया ३.

समकित स्वरूप.

जीवाइ नव पयत्था,
जो जाणई तस्स होई सम्मत्तं ॥
भावेण सद्दहंतो,
अयाण माणेवि सम्मत्तं ॥१॥

सव्वाइ जिणेसर भासियाइं,
वयणाइ नन्नहा हुंति ॥
इय बुद्धि जस्समणे,
सम्मत्तं निच्चलं तस्स ॥२॥

अंतो मुहुत्त मित्तंमि,
फासियं हुज्ज जेहिं सम्मत्तं ॥
तेसिं अवड्ढ पुग्गल,
परियट्टो चेव संसारे ॥३॥

---

(२) जिणरोकदेई नाश नहीं होवे उणनें ध्रौव्य केवे हे
प्रत्येक द्रव्य हरेक समय ६ गुणी हाणी ओर ६ गुणी वृद्धि सहित हे, सो हाणीने व्यय ओर वृद्धिने उत्पाद केवे हे.

भावार्थः—जीवादिक नव पदार्थ (तत्व) रो जाणपणो करनें, भावसूं पूर्ण विश्वास राखे जिणनें समकित केवेहे. (१)

जिनेश्वर भगवान फर्मायला सूत्रोंपर पूर्ण श्रद्धा राखे सो निश्चय समकितहे. (२)

देव अरिहंत, गुरु निग्रंथ ओर जिन भाषित तत्त्व, ए व्यहार समकितहे. समकित छ आवलिकामात्र अर्थात् अंतर मुहुर्त ग्रहण करलेवे तो पिण, अर्द्ध पुद्गल मांहे मोक्षकी प्राप्ति हुवे हे. (३)

---

* आर्या:—अरिहंतोमहदेवो, जावज्जीव सु साहुणो गुरुणो, जिण पण्णत्त तत्तं, एसम्मत्तं मएगहियं ॥ १ ॥

त्रोटक, अनुकूल मूल रसाल समकित, तेहविणमति अंधरे, जे करे किरिया गर्वभरियातेहझूठो धंधरे हो तेह झूठो धंधरे ॥ १ ॥

भवविटपिसमूलोन्मूलने मत्तदन्ती, जडिमतिमिरनाशे पद्मिनीप्राणनाथः ।
नयनमपरमेतत् विश्वतत्त्वप्रकाशे, करण हरिणबन्धे वागुरा ज्ञानमेव ॥ १ ॥

धर्माप्तगुरुतत्वानां श्रद्धानं यत्सुनिर्मलम् ।
शङ्कादि दोषनिर्मुक्तं सम्यक्त्वं तन्निगद्यते ॥ १ ॥

जैन तत्व बोध सारांश.

काययोग

- औदारिक काययोग, औदारिक मिश्रकाययोग — मनुष्य व तिर्यंच
- वैक्रिय कायथोग, वैक्रिय मिश्रकायथोग — स्वर्गवासी देवता
- आहारक कायथोग, आहारक मिश्रकाययोग — चौदपूर्वधर साधु
- कार्मणकाययोग (जीवपरभवगमन (करताधारणकरे.)

चारित्र

- सर्व विरति (साधुचारित्र)
  - सामायिकचारित्र
  - छेदोपस्थापनीयचारित्र
  - परिहारविशुद्धिचारित्र
  - सूक्ष्मसंपरायचारित्र
  - यथाख्यातचारित्र
- देशविरति [गृहस्थधर्म]
  - पाचअनुव्रत.
    - १स्थूलप्राणातिपातविरमणव्रत.
    - २स्थूलमृषावादविरमणव्रत.
    - ३स्थूल अदत्तादानविरमणव्रत.
    - ४स्थूलमैथुनविरमणव्रत.
    - ५ स्थूल परिग्रहपरिमाणव्रत
  - तीनगुणव्रत.
    - १ दिशापरिमान ,,
    - २ देशावकाशिक ,,
    - ३ अनर्थदंडविरमण,,
  - चार शिक्षाव्रत
    - १ सामायिकव्रत.
    - २ पोषध ,,
    - ३ भोगोपभोग-परिमाण ,,
    - ४ अतिथि संविभाग,,

हिंसा मृषा अदतधन मैथुन परिग्रह साज ।
किंचित त्यागी अणुव्रती सर्वत्यागी मुनिराज ॥ ५४ ॥
समयसारनाटक. प्र० र० भा० २ पृ० ५६४

- जीव
  - सिद्धरूप (निरिंद्रय व शरीर रहित)
  - संसारी
    - नारक [पचेंद्रिय युक्त]
      - रत्नप्रभादिसात नारकींमाहेला जीव
    - तिर्यक्
      - स्थावर (एकेंद्रिय स्पर्शेंद्रिययुक्त)
        - पृथिवीकाय
          - वायुकाय
        - अप्काय
          - वनस्पतीकाय
        - तेउकाय
      - त्रस
        - एकेंद्रियमें
          - तेजस्काय
          - वायुकाय
        - द्विंद्रिय
          - स्पर्श वरसना युक्तकृमि
        - त्रींद्रिय
          - स्पर्श रसना व घ्राण युक्तमकोडा
        - चतुरिंद्रिय
          - स्पर्श रसना घ्राण चक्षुयुक्त मार्न्ना
        - पंचेंद्रिय [जलचर स्थलचर खेचर]
          - पाचुयुक्त मच्छ पशु पक्षी.
    - मनुष्य [पंचेंदिययुक्त]
      - भोगभूमिभव
      - कर्म भूमिभव
        - आर्य
        - म्लेच्छ
    - देव (पंचेंद्रिय युक्त)
      - भवनपती
        - असुरादि
      - व्यंतर
        - किनरादि
      - ज्योतिष्क
        - सूर्यचंद्रादि
      - वैमानिक
        - कल्पसंभुत
        - कल्पातीत
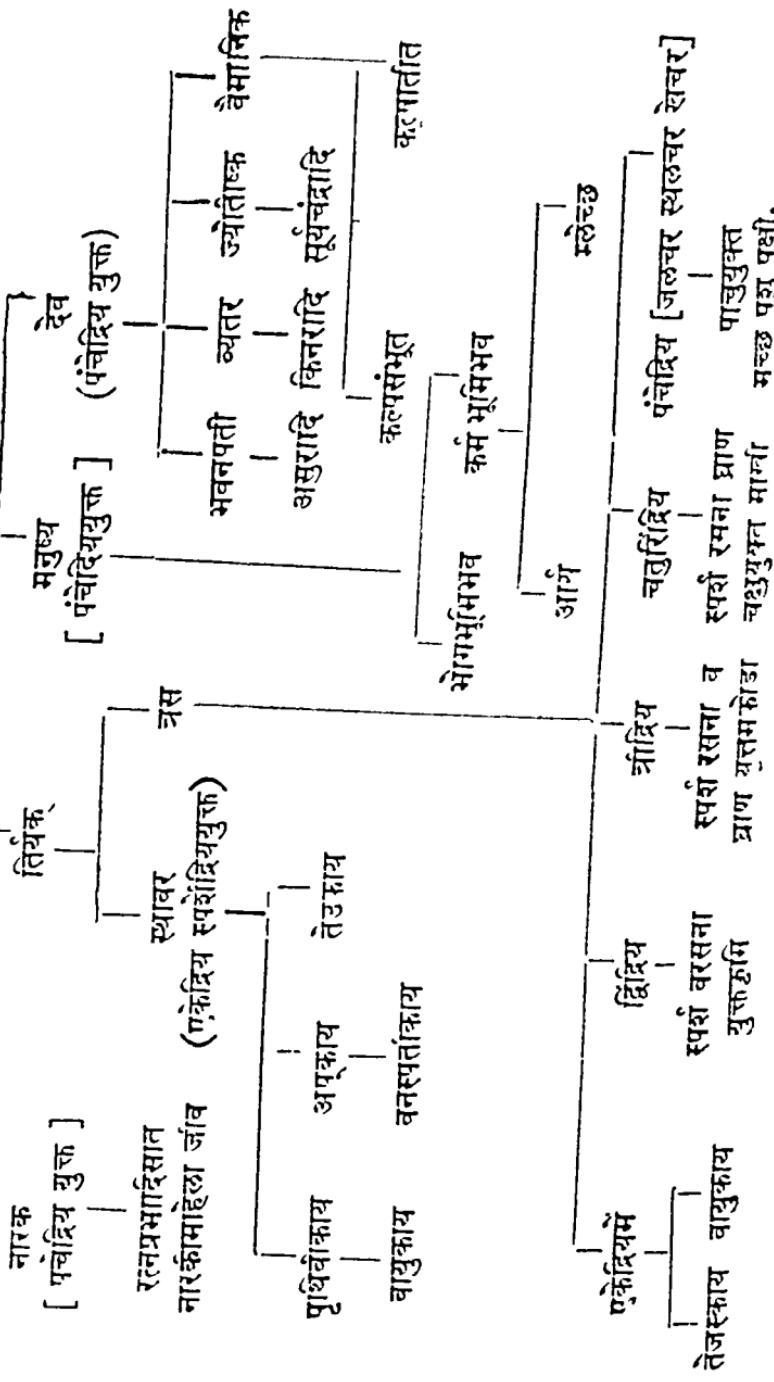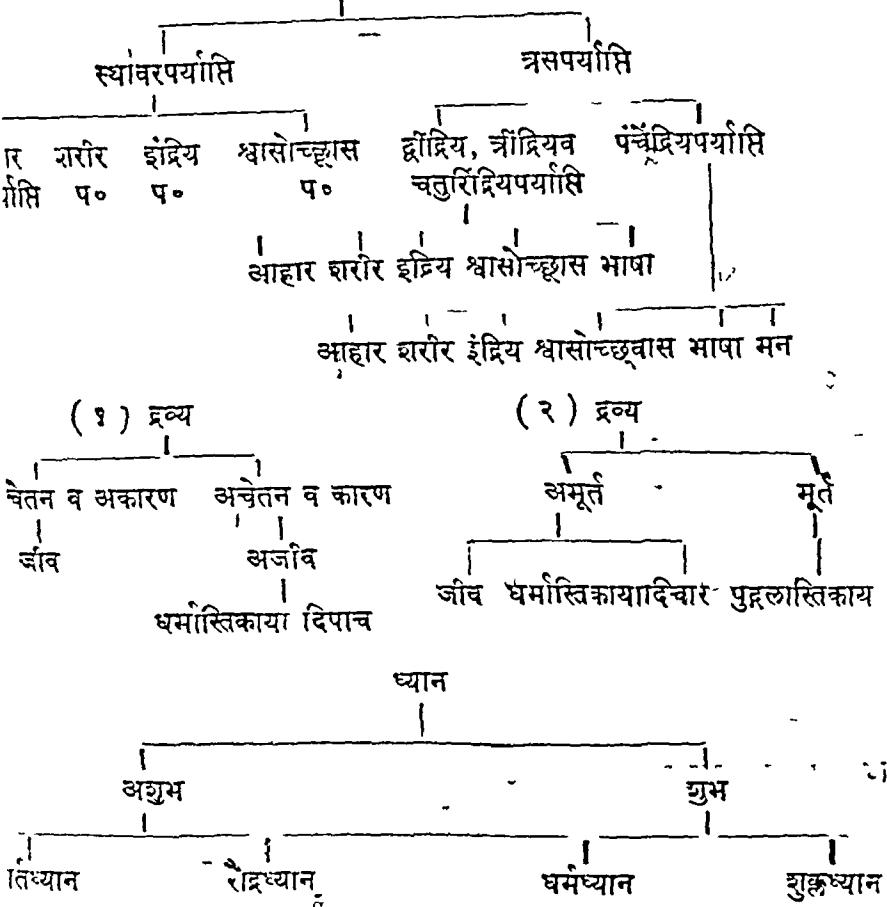
आर्तध्यान—इष्टवस्तुरो वियोग अनिष्ट वस्तूरो सयोग अथवा मनमे दुःखदाई चिंता

रौद्रध्यान–स्वतः जिव हिंसा करे अथवा दूसरानें करतो देख खुशी हुवे ओर पट धरे दूसराने कपटमे फसाय हर्ष मानें.

धर्मध्यान–शुद्ध धर्मरो एकाग्र चित्तकर चिंतावण करणो मैत्री, प्रमोद, करुणा, चार भावना.

शुक्लध्यान निर्मल आतम स्वरूपरो चिंतवण कर तन्मय ध्यान करणो.

निर्जरा
सकाम
अकाम
व्रतोपक्रमै·कृता
(श्वभ्रनिवासिनां) स्वविपाकेन जा:
सागारव्रतानि
अनगारव्रतं
अणुव्रतानि
गुणव्रतानि
शिक्षाव्रतानि
तपः
अहिंसा
सत्यं
अस्तेयं
ब्रह्मचर्यं
अपरिग्रहः
सामायिक
प्रोषधं
भोगोपभो
गसंख्यान
अतिथिसं
विभागव्रत
बाह्यं
आभ्यन्तरं
प्रायश्चित्त
विनयः
वैयावृत्यं
स्वाध्याय:
ध्यानं
व्युत्सर्गं
दिशापरिमाणव्रत
देशावकाशिकव्रतं
अनर्थदण्ड-
विरमणव्रतं
अनशनं
ऊनोदरता
वृत्तिसंक्षेप
रस त्याग
कायक्लेश
संलीनता
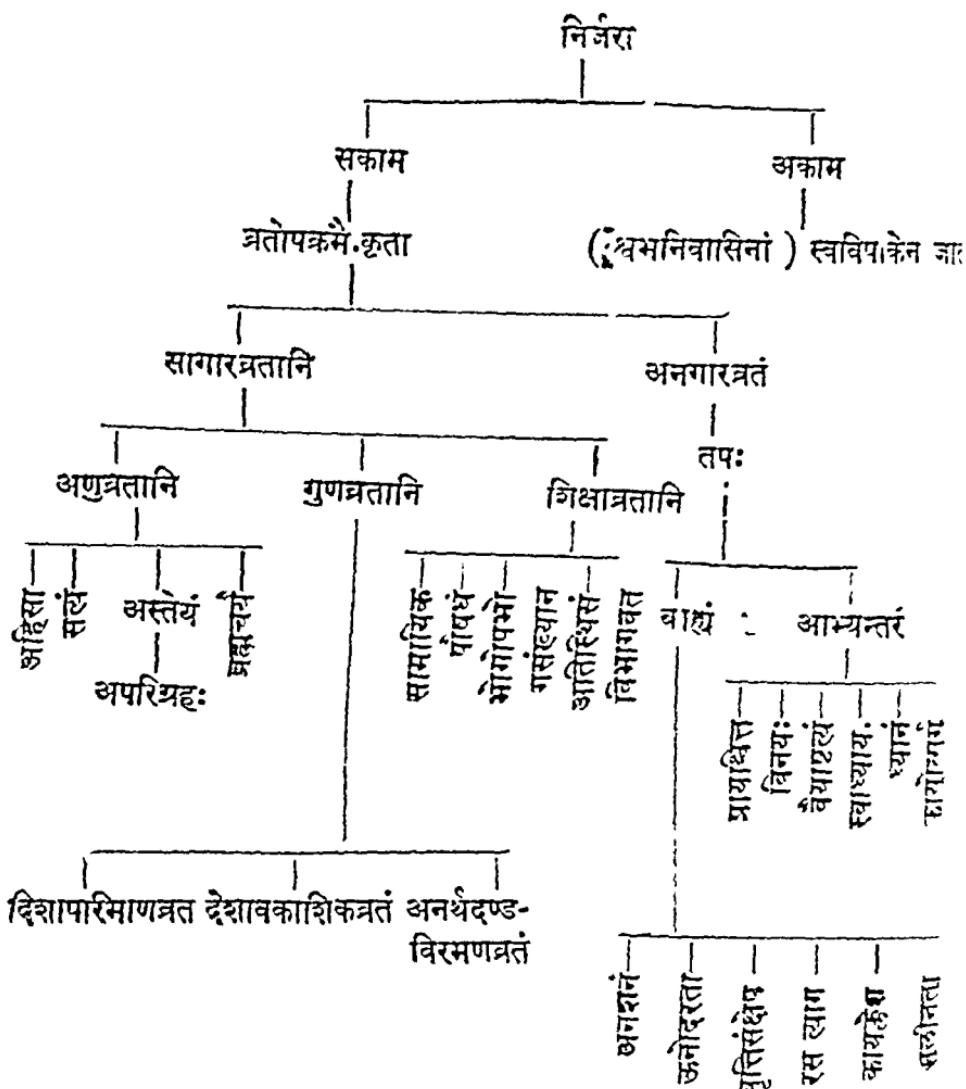
निर्जरा

दुर्जरं निर्जरत्यात्मा यया कर्म शुभाशुभम् ।
निर्जरा सा द्विधा ज्ञेया सकामाकामभेदतः ॥ १२२ ॥

सा सकामा स्मृता जैनैर्या व्रतोपक्रमैः कृता ।
अकामा स्वविपाकेन यथा श्वभ्रनिवासिनाम् ॥ १२३ ॥

सागारमनागारं च जैनैरुक्तं व्रतं द्विधा ।
अणुव्रतादिभेदेन, तयोः सागारमुच्यते ॥ १२४ ॥

अणुव्रतानि पञ्च स्युस्त्रिप्रकारं गुणव्रतम् ।
शिक्षाव्रतानि चत्वारि सागाराणां जिनागमे ॥ १२५ ॥

हिंसानृतवचःस्तेयस्त्रीमैथुनपरिग्रहात् ।
देशतो विरतिर्ज्ञेया पञ्चधाणुव्रतस्थितिः ॥ १४२ ॥

दिग्देशानर्थदण्डेभ्यो यत्त्रिधा विनिवर्तनम् ।
पोतायते भवाम्भोधौ त्रिविधं तद्गुणव्रतम् ॥ १४३ ॥

सामायिकमथाद्यं स्यच्छिक्षाव्रतमगारिणाम् ।
आर्तरौद्रे परित्यज्य त्रिकाल जिनवंदनात् ॥ १४९ ॥

निवृत्तिर्भुक्तभोगानां या स्यात् पर्वचतुष्टये ।
पोषधाख्यं द्वितीयं तच्छिक्षाव्रतमीरितम् ॥ १५० ॥

भोगोपभोगसंख्यानं क्रियते यदलोलुपैः
तृतीयं तत्तदाख्यं स्यादुःखदानानलोदकम ॥ १५१ ॥

गृहागताय यत्काले शुद्धं दानं यतात्मने ।
अन्ते सल्लेखना चान्यत्तच्चतुर्थं प्रकीर्त्यते ॥ १५२ ॥
व्रतानि द्वादशैतानि सम्यग्दृष्टिर्बिभर्ति यः
जानुदघ्नीकृतागाधभवाम्भोधिः स जायते ॥ १५३ ॥
अनगारं व्रतं द्वेधा बाह्याभ्यन्तरभेदतः
षोढा बाह्यं जिनैः प्रोक्तं तावत्संख्यानमान्तरम् ।
वृत्तिसंख्यानमौदर्यमुपवासो रसोज्झनम् ।
रहःस्थितितनुक्लेशौ षोढा बाह्यमिति व्रतम् ॥ १५५ ॥
स्वाध्यायो विनयो ध्यानं व्युत्सर्गो व्यावृतिस्तथा ।
प्रायश्चित्तमिति प्रोक्तं तपःषड्विधमान्तरम् ॥ १५६ ॥
यास्तिस्रो गुप्तयः पञ्च ख्याता समितयोऽपि ताः
जननात् पालनात् पोषादष्टौ तन्मातरः स्मृताः ॥ १५७

(इति धर्मशर्माभ्युदयकाव्ये एकविंशे सर्गे)

अथ अध्यात्मकल्पद्रुमेप्युक्तम्

परिग्रह.
बाह्यपरिग्रह अथवा द्रव्यपरिग्रह
अभ्यंतरपरिग्रह
धन
धान्य
क्षेत्र
वास्तुक (हवेली, वाडा)
रूप्य
सुवर्ण
कुप्य (तांबा पीतलका वासण)
द्विपद (दासदासी)
चतुष्पद (गाय, भैंस, घोडा, हाथी वगैरे)
मिथ्यात्व
नोकषाय
अथवा कषाय
साहाय्यकारी
हास्य
रति
अरति
भय
शोक
जुगुप्सा
स्त्रीवेद
पुरुषवेद
नपुंसकवेद
कषाय
क्रोध
मान
माया
लोभ
षड्द्रव्याणी
जीव (जीवास्तिकाय)
अजीव
सिद्ध
संसारी
धर्मास्तिकाय
अधर्मास्तिकाय
आकाशास्तिकाय
पुद्गलास्तिकाय
काल
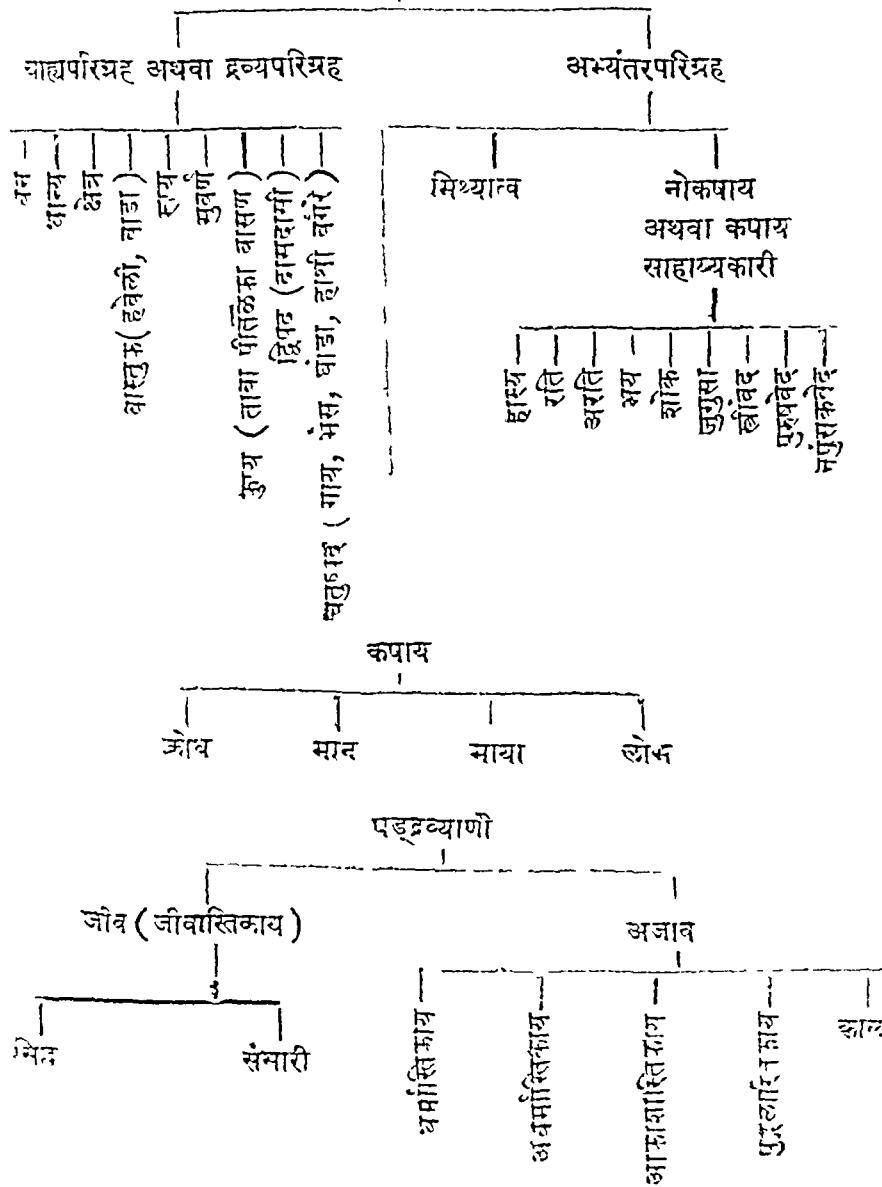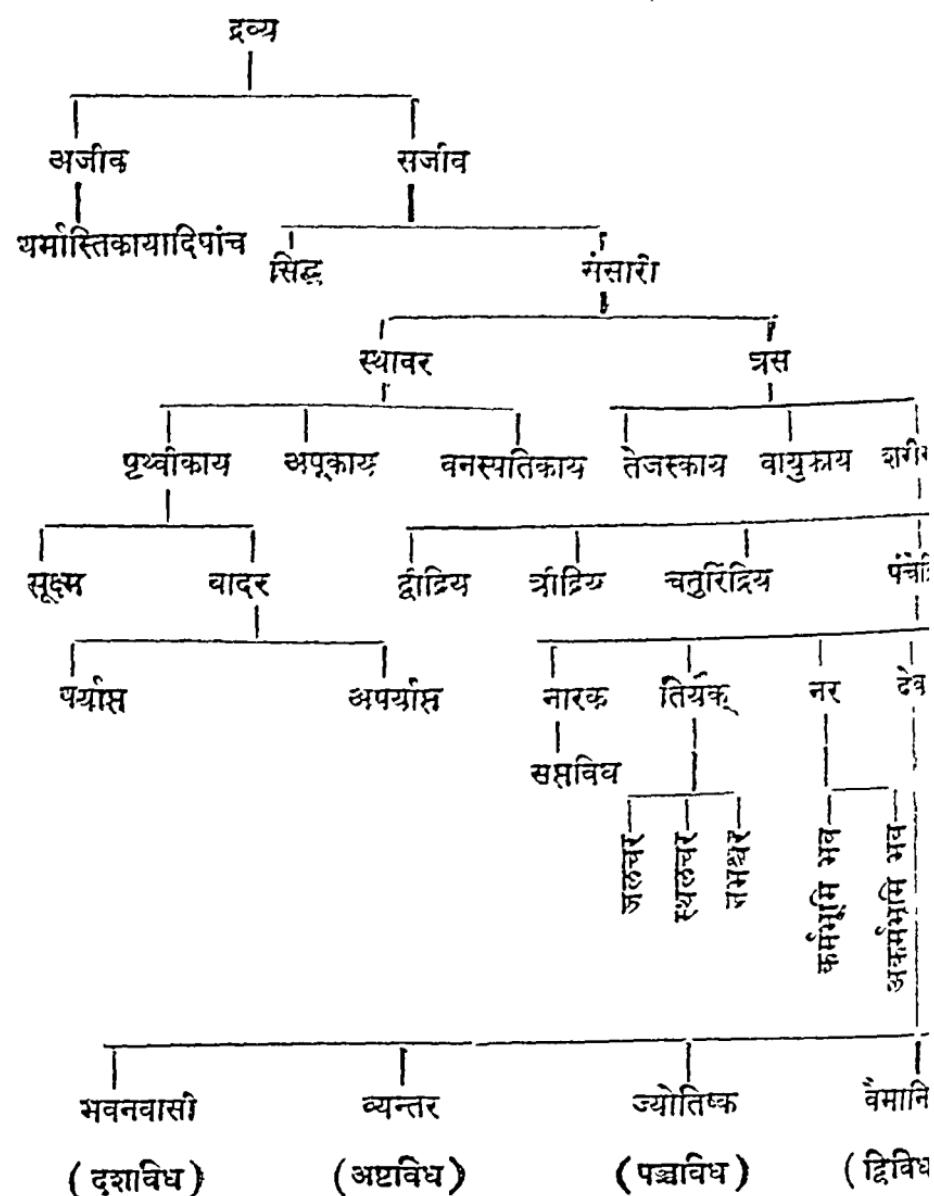
भवनवासी देवः—असुर, नाग, सुवर्ण, विद्युत, अग्नि, द्वीप, उदधि, दिक, वायु, स्त

व्यन्तरः—पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किंनर, किंपुरुष, महोरग, गंधर्व.

ज्योतिष्कः—चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारागण.

वैमानिकः—कल्पसंभूत, कल्पातीत.

जीव.

अमूर्तश्चेतनाचिह्नः कर्ता भोक्ता तनुप्रभः।
ऊर्ध्वगामी स्मृतो जीवः स्थित्युत्पत्तिव्ययात्मकः ॥ १ ॥

अजीव.

धर्माधर्मौ नभः कालः पुद्गलश्चेति पंचधा।
अजीव कथ्यते सम्यग्जिनैस्तत्वार्थदर्शिभिः ॥ २ ॥

षड् द्रव्याणीति वर्ण्यन्ते समं जीवेन तान्यपि।
विना कालेन तान्येव यान्ति पञ्चास्तिकायताम् ॥ ३ ॥

धर्मःस तात्त्विकैरुक्तो यो भवेद्गतिकारणम्।
जीवादीनां पदार्थानां मत्स्यानामुदकं यथा ॥ ४ ॥

छायेव धर्मतप्तानामश्वादीनामिव क्षितिः।
द्रव्याणां पुद्गलादीनामधर्मः स्थितिकारणम् ॥ ५ ॥

लोकाकाशमभिव्याप्य स्थितावेतावनिष्क्रियौ।
नित्यावप्रेरकौ हेतू मूर्तिहीनावुभावपि ॥ ६ ॥

पुद्गलादिपदार्थानामवगाहैकलक्षण ।
लोकाकाशः स्मृतो व्यापी शुद्धाकाशो बहिस्ततः ॥ ७ ॥

धर्माधर्मैकजीवाः स्युरसंख्येयप्रदेशकाः।
व्योमानन्तप्रदेशंतु सर्वज्ञैः प्रतिपाद्यते ॥ ८ ॥

जीवादीनां पदार्थानां परिणामोपयोगत ।
वर्त्तनालक्षणः कालोऽनंशो नित्यश्च निश्चयात् ॥ २ ॥
कालो दिनकरादीनामुदयास्तक्रियात्मक ।
औपचारिक एवासौ मुख्यकालस्य सूचक
रूपगन्धरसस्पर्शशब्दवन्तश्च पुद्गलाः ।
द्विधा स्कन्धाणुभेदेन त्रैलोक्यारम्भहेतव ॥ ११ ॥
भूमितैलतमोगन्धकर्माणुप्रकृतिः क्रमात् ।
स्थूलास्थूलादिभेदाः स्युस्तेषां षोढा जिनागमे ॥ १२ ॥
कायाहारशरीराख्यप्राणापानादि सृतिमत् ।
यत्किञ्चिदस्ति तत्सर्वं स्थूलं सूक्ष्मं च पुद्गलम्

आस्रवः

शरीरवाङ्मनःकर्मयोग एवास्रवो मतः ।
शुभाशुभविकल्पोऽसौ पुण्यपापानुषङ्गत ॥ १४ ॥

बन्धः

सकषायतया दत्ते जीवोऽसंख्यप्रदेशगान् ।
पुद्गलान् कर्मणो योग्यान् बन्धः स इह कथ्यते ॥ १५
मिथ्यादृक् च प्रमादाश्च योगाश्चाविरतिस्तथा ।
कषायाश्चाभ्यमृता जन्तोः पञ्च बन्धस्य हेतवः ॥ १६ ॥

प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशानां विभेदतः ।
चतुर्विधः प्रणीतोऽसौ जैनागमविचक्षणैः ॥ १७ ॥
अष्टौ प्रकृतयः प्रोक्ता ज्ञानावृत्तिदृगावृती ।
वेद्यं च मोहनीयायुर्नामगोत्रन्तरायमुक ॥ १८ ॥

संवरः

आस्रवद्वाररोधेन शुभाशुभविशेषतः ।
कर्म संव्रियते येन संवरः स निगद्यते ॥ १९ ॥
आस्रवः संसृतेर्मूलं मोक्षमूलं तु सवरं:

मोक्षः

अभावाद्बन्धहेतूनां निर्जरायाश्च यो भवेत् ।
निःशेषकर्मनिर्मोक्षः स मोक्षः कथ्यते जिनै. ॥ २२ ॥
इतिसप्ततत्त्व निर्णय. धर्मशर्माभ्युदयकाव्ये एकविंशे सर्गे॥

स्तवन.

चोईसी, श्रीजीनाथमहाराज अरज मेरा मनकी,
तुम खेंचो हमारी डोर मूरत दर्शनकी ॥ एदेशी ॥

श्रीजिनराज महाराज चौवीसों जिनवरजी तुम रखो हमारी लाज
सुनो गणधरजी ॥ टेर ॥

श्री ऋषभ अजित संभव अभिनंदनस्वामी सुमति पद्म सुपार्श्व
नमो शिरनामी; श्री चंद्रप्रभ सुविधिनाथ शीतल गुणगाऊं,
श्री श्रेयांस वासुपूज्य महाराजकू शीश नमाऊं ॥ श्री० ॥ १॥

श्रीविमल अनंत धर्मनाथ शांति जिनदेवा, श्री कुंथुनाथ
अरनाथकी करतहू सेवा; श्री मल्लिनाथ मुनिसुव्रत व्रतमोय
दिजो, नमिनाथ नेम महाराज पार मोय कीजो ॥श्री०॥२॥

श्रीपार्श्वनाथ महावीर शरन रहूं तेरी, मैं छु चरनको दास
अरज सुनोमेरा; तुम चरनकी शरनविन काल अनंत गमाये,
अब जन्म भये मुज सफल चरन तुम पाये ॥ श्री० ॥ ३ ।

हुवो चउवीसों महाराजको शरनो हमारे, तुम विन नाथ अनाथ
कहो कुनतारे; प्रभु दीन दयाल कृपाल सुनों तन मनकी,
तुमखैंचो हमारी डोर सूरत दर्शनकी ॥ श्री० ॥ ४ ॥

तुम दर्शन विन महाराज काज मुज विघर्यो,
तुम दर्शन विन महाराज काल बहु भटक्यो;
मुनि रामकहे महाराज पूरन करो आशा,
मुज रखो चरनके पास नकरियो निराशा ॥ श्री० ॥ ५॥ इति ॥

२ श्री पार्श्वनाथजीरो स्तवन.

क्या ढूंढे नर मंदिर मशीद और मठमे, है प्रत्यक्ष पूरन
ब्रह्म सबी घट घटमे ॥ एदेशी ॥

पारश प्रभु जस जग वीच जोरावर छायो, अब तार जिनंद मैं शरन तिहारी आयो ॥ टेर ॥

जग नगर बनारसी अश्वसेन नृप सोहे, वामा अति लावण्य रूप करी मन मोहे; जस लीयो कूख अवतार पुण्य सम वोहे, अजी प्रभु समान इन सृष्टि उपर कोहे; अबि जोतां जग संसार नीठ प्रभु पाये, भलांभ० ॥अ०॥१॥

हिवे आवे माता संग उमंग मन धरके उ०, हांरे सरचा अज्ञानी कमठ इमी तप करके; तूं जाले लक्कड नाग कहूं तोय लरके, कहो क्या फल पागी मोय संग तूं अरके, इम सुनी वचन ते तपसी कोप भरायो भलांइ ॥अ०॥२॥

हे राज पुत्र कहाँ नाग मुझे दिखलावो, मु०, क्यों झूठी वातें करके जग डहकावो; क्या समजो जोग कीं वाते तत्त्व नहीं पावो, हठ जावो योगी राजकों मत संतावो तहाँ काष्ट फाड सब जगको नाग दिखरायो भलात ॥ अ० ॥ ३ ॥

प्रभु दीयो मंत्र नवकार सर्प मन धार्यो स०, धन्य पारश्व जिन अवतार नागकों तार्यो; ओ कमठ गयो मन

लाज प्रभुरें हार्यो, ओ असिआउसाय नूतन मंत्र उचार्यो, जब कमठ हुवो मेघमाली अवधि लगवायो भलांज अ.॥अ०॥४॥

अथ प्रभुभये अनगार ध्यान दृढ धरियो ध्या. ,जब कमठ विकुर्व्यो मेह जरा नहीं डरियो; तद देवीयूत धरणेंद्र आय नृत्य करियो, ओ देखी सहस्रफुन कमठ आय पगपरियो, कहै पूज्य प्रसन्नचद्र अपराध आय खमवायो भलांक०॥ अवतार जिनंद मैं शरन तिहारी आयो ॥ ५ ॥ इति

३ समकितको स्तवन.

॥ देशी पूर्व वत ॥

समकितका करलो उजियाला इस घटमें, तुम पडो- मति जग जाल तणी सट पटमें ॥टेर॥

तूं रुल्यो जगत चौराशी योनिमे भाई यो०,

तें समकित शुद्धि सुपनामें नहीं पाई; आ मिनखा देही नीट हाथ अब आई, जिणमांहे करो शुकृतकी कछु कमाई; नहीं भज्या कबी जिनराज मिथ्यातकी हटमें मि० ॥स०॥ १ ॥

ओ वडो जोरावर जबर मोह जगमांही, मो०, अजी इन सामान कोई जगमें दुसमन नाहीं; सब डूबा इसमे जोवो दृष्टि धर कांई, इस लीये छोडके सुरत संभालो सॉई: मत्‌जावो जीवाजी मिथ्यात रूपी मठमें ॥स॥ २० ॥

श्री सुगुरू संग जब होवे तब समकित आवे, जब होय जीव निरलेप मोक्षपद पावे: गणधरके तादृश हृदय शुद्ध होय जावे, मुनिराम प्रतापे पूज्य प्रसन्नचंद्रजी गावे; मिथ्यातको छोडयो तुरत गुरु संग झठमें॥ स० ॥ ३ ॥

४ जैनाचार्य पूज्यजी श्री रामचंद्रजी महाराजका गुणस्तव.

॥ हारे जीवा चउराशीमें तूं भम्यो एदेशी ॥

श्री राममुनि सुखकाररे, यांका पाय वंदो नरनाररे ॥ टेर ॥

सेवाकरो योग बन्योहे, काढोनी देहीको साररे ॥ श्री० ॥ १ ॥

बालपणामें संजम लिनो, किनो क्रिया उद्धाररे ॥ श्री० ॥ २ ॥

टिकासहित ए आगम वाचे, भिनभिन खोले अधिकाररे ॥ श्री० ॥ ३ ॥

पाखडी दरिया सब चाले, ए पाले शुद्ध आचाररे ॥ श्री० ॥ ४ ॥

भगवती सुत्र सुणो भविजीवां, सफल करो अवताररे ॥ श्री० ॥ ५ ॥

यशोधर चरित्र पवित्र कथा छे, नित वंचे सूत्रकी लाररे ॥ श्री ॥ ६ ॥

अमृतवाणी सुणे इक विरियां, नहीं भुले जनम मझाररे ॥ श्री० ॥ ७ ॥

मधुरी वाणी सुणो भव्यप्राणी, करो प्रश्नतणो निरधाररे ॥ श्री० ॥ ८ ॥

श्रीराममुनिश्वर जहां जहां विचरे, तिहां तिहां बहु उपकाररे ॥ श्री० ॥ ९ ॥

(पूज्य) प्रसन्नचंद्र कहे ऐसें मुनिवंदो, ज्यूं होवे निसताररे ॥ श्री० ॥ १० ॥

॥ ५ ॥

॥ तखत थांरी निरखणदो असवारी एदेशी ॥

राममुनि दर्शनकी बलिहारी, होजी थांरी छिनछिन वार हजारी ॥ टेर ॥

वाणी थांरी प्यारी लागे, जाणे जग संसारी;
आप शिवाय कलियुग माहे, नहीं देख्या बुधधारी ॥ रा० ॥ १ ॥

पांचो समिति सेंठी राखो, भाखो वचन विचारी;
पंचमहाव्रत दुर्धर पालो, टालो कर्मकी झारी ॥ रा० ॥ २ ॥

ज्यूं चातक घन मन नवि विसरे, भमरो फूल मझारी;
मुज मन वासियो तुम चरणामें, दिजो पार उतारी ॥ रा० ॥ ३ ॥

रत्नचिंतामणि सम गुरु भेट्या, मेट्या पाप अठारी;
तन मन सेती वंदगी करतां, पावे सुख अपारी ॥ रा० ॥ ४ ॥
समता धारी ममता मारी, आतमनें उजवारी;
मूरत थांरी मोहन गारी, दियो मिथ्यात विदारी ॥ रा० ॥ ५ ॥
साध्वी गुलाबां अरज करतहे, सांभळो ज्ञान भंडारी;
किरपा किजो दर्शन दिजो, चाहूं छूं मेहर तुमारी ॥ राममुनि
दर्शनकी बलिहारी, होजा थांरी छिनछिन वार हजारी
॥ ६ ॥ इति॥

॥ ६ ॥

॥ पारश प्रभु मुज प्राणके त्राता एदेशी ॥

राम मुनिश्वर जोति सवाई, जो० रा० ॥ टेर ॥
राम काम करता सिद्ध सारे, पावन जन्म कियो जग
आई ॥ रा० ॥ १ ॥
मन वंछित पावे तुम ध्यातां, मिलती हे सब जग
ठकुराई ॥ रा० ॥ २ ॥
पंडित ज्ञानी आतम ध्यानी, सेवा करे सब बाई भाई
॥ रा० ॥ ३ ॥
दुख हरता सुख करता सदाई, अमर चरण मस्तक धर
गाई ॥ रा० ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥

॥ ७ ॥

॥ देशी ख्यालकी ॥

राम मुनिश्वर दिपतासरे, गुण रतनारी खान;
पढिया विद्या प्रेमसू सरे, उत्तम महा गुणवान हो,
श्रीरामसुनिश्वर आप पधारो नागिने शहरमें ॥ १ ॥ टेर ॥

पंचमहाव्रत पालता सरे, दोष बयालीस टाल;
बावीस परिषह जितियासरे, अग्यिण कद कुदाल हो ॥ श्री २॥

दर्शन दर्शन हूं करू सरे, दर्शनकी बहू चाय;
दर्शन किना आपरासरे, भव भव पातक जाय हो ॥श्री३॥

प्रसन्नचंद्र शिष्य दिपता सरे, दिठां दुख हुवे दूर:
शितल पणो अगमें घणोसरे, विद्यामे भरपूर हो ॥ श्री ४ ॥

शहर नागिने पधारसोस कांई, किरपा लेसूं मान;
सेवा करसू पूज्यकी सरे, तिनको सुणू बखान हो ॥ श्री ५ ॥

सोवन कँवर की विनतिसरे, लिजो पाय लगाय:
कर जोड़ीनें विनवू सरे, हिवड़े हर्ष न माय हो ॥श्री ६ इति॥

८ ॥ उपदेशी ॥

॥ अगडदं अगडद बाजे दोगडा० ॥ एदेशा ॥

काम क्रोध मद लोभ मोहमें, डूब रहे नर अरु नारी;
धन धन जगमें इन कूं जिते, जिनकी जाऊ बलिहारी ।१।टेर।

वाम कटाक्ष बाण तनु लागे, भूल जात शुद्ध बुध सारी;
विषधर विष व्यापे जेसे, कोविद मूर्च्छा लहे भारी।का०।२।

कोटिपूर्व तप नष्ट करतहे, धूकत क्रोध उर अगारीः
मुक्ति जात रखे गुनिजनकों, वदन क्रांति करदे कारी। का० ।३।

मान समान जान इन युगमें, नहीं कोई आन प्राणधारी;
दश खंधरसे विगरे इनसें, जिनसें कहूं तजदो लारी; ॥का०॥४॥

लोभ अंत नहीं संत कहतह, समझोनी हिरदे धारी;
सूक्ष्म संपराय तक चडियो, मुडियो नहीं हट दुर्वारी ॥का०॥५॥

सुरतिरी आदी परे इनके वश. गुणजो पुरुष अने नारी ;
पूज्य प्रसन्नचंद कहे पंच तजेजे. हुवे शिवपुरके अधिकारी ॥
का० ॥ ६ ॥ इति ॥

---

९ श्रावक भावना.

॥ गरबेका देशी ॥

घर छोडी कबी संजमी मैंतो होवसूं, त्यागसूं तृणवत सरव
जगत जंजाल जो; कीच कमल के बीच सदा निर लेपजो,
तीम मैं तजसूं भोग रोगनो झालजो ॥ घर० ॥ १ ॥

सर्प कंचूकीमहित सदा विष जो, सिंह फासियो सांकळमां सहे दुःख प्रजो; मृग तृष्णाथी जल तृप्ति होवे नहीं, विषय थकी सब सुखतो जावे दूरजो ॥ घर० ॥ २ ॥

नाग पापमां फसियो जन दुःख बहू सहे, त्यक्त कियासूं सुख पावे सब गातजो; तिम संसारी सागी सपत जाणीये नारी प्यारी दुःख क्यारी करे घातजो, ॥ घर० ॥ ३ ॥

प्राणथकी अति वल्लभ पुत्र कहे सवी, जाणू अग्नितणो खगो अंगारजो; काया कळनो कोटडी नहीं ए माहरी, जिणरी निशदिन कर रह्यो अतही सारजो ॥ घर० ॥ ४ ॥

तीन मनोरथ नितप्रति चितमें ध्याइये, जिणसूं पावे अविचल पदनों स्थानजो; काम क्रोध मद लोभ निंदा अरु ईरषा, मोडी राखूं सकल पदारथ भानजो ॥ घर० ॥ ५ ॥

सूरिप्रभाकर श्रावक भावे भावना, जावे मुक्ति छोडीने माया जालजो; सोनई दाक्षिण विक्रम सतसठ सालजो, उगणीसोने वरषे जोडी ढाळजो ॥ घर० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ १० ॥

॥ सुगुरु मोने दरशण दिजोजी राज ए देशी ॥

श्रावक सेणा मत छोडिजो गुरुभाव श्रावक सेणा राखिजो
गुरु चाव ॥ टेर ॥

जिनधर्ममें गाढा रहो, नित किजो सम्यक्त शिरपाव;
पाखंडमें मती राचजो, मत दिजो हिणो दाव. ॥ आ० १ ॥

सामायिक करजो सदा, नित पोषधनो चितचाव;
स्वमुखसूं कहेजो मती, थे देई दान पोमाव. ॥ आ० २ ॥

मोटका अलिक न आखजो, तुमे खेवजो सत्यकी नाव;
आखे बोल कोउ आकरा, सुन करजो कछुक खटाव. ॥ आ० ३ ॥

क्षमासहित धर्म पालजो, सदा किजो ज्ञान गरकाव;
अज्ञानीरा कष्टमें, नहीं दूधां लावनसाव ॥ आ० ४ ॥

श्री जिनधर्मनी आशता, मत छाडजो लागा ताव;
प्रसन्नचंद्र मन दाटिए, नित मिथ्यामतनो घाव ॥ आ० ५ ॥ इति ॥

॥ ११ ॥

माच्छररी देशी.

सहियां ज्ञानी गुरुजीरे चालोहे, विनयसहित वाणी सुणी
गुरुचरणानें झालोहे ॥ स० ॥ टेर ॥

शुद्ध उपदेशक आदरो, ओर दूरे टालोहे;
गुरुविमुख होवे जेहतो, करो मुखडो कालोहे ॥ स० ॥ १ ॥

सुणियां ज्ञान गुरुदेवरो, हिये हुवे उजियालोहे;
प्रेम सहित नित रवि उगे, गुरु वदन निहालोहे ॥ स० ॥ २ ॥

धन्य जगत गुरु देवजी, जित्यो मन मतवालोहे;
पिंजर खीण कियो घणों, सहे ग्रीष्म ताप शियालोहे ॥स०॥३॥

सतगुरु दे उपदेश, अहोनिश कर तप तनको गालोहे;
पंच अणुव्रत चार शिक्षाव्रत, निर्मल पालोहे ॥स०॥४॥

दिजे प्रसन्नचंद्रनें सतगुरु, सुख अतही सु विशालोहे;
जनम मरण के दिजिये, हिवे श्री गुरु तालोहे ॥स०॥५॥इति॥

॥ १२ ॥

युगादिदेव स्तुति

श्रावक वाजे धोरीरे ए देशी.

कलिमल हरत जिनंदारे सोहे तेजदिणंदा ॥ क० टेर ॥
ऋषभ जिनंद चंद जिम निरमल, काटत भव भव फंदारे ॥क०१।
अशरन शरण परम गुणधारी, दुःख हरता सुख कंदारे ॥क०२॥
चौसठ इंद्र चरण प्रभु सेवे, नाचत सुरगण वृंदारे ॥क० ३॥
कनक करण द्युति सोहत तनकी. त्यक्त किया गृह धंदारे क०॥४॥
अत्यादर धरकर तुम आगल, नित निर्जर कोटि अमंदारे।क०५।
प्रसन्नचंद्र तुम कदमको चाकर, सेवत पद अरविंदारे क०॥६॥

१३ सती राजुलजीरो स्तवन.

॥ कुण मारी पिचकारीरे ए देशी ॥

नेमप्रभु किम छारीरे, ना लिवी शुद्ध हमारी, ॥ ने० टेर ॥

छपनक्रोड जादव मिल आए जा०,
मोनें नेमनी सूरत प्यारीरे;
बोले राजुल नारी ॥ ने० १ ॥

हिरा मोती कहो अब कुण पेरेहो अ०,
कलंक देवे ससारीरे;
रही अकन कवारी ॥ ने० २ ॥

जो पतियां नाथ हाथकी ल्यावेहो हा०
देऊं वधाई मन धारीरे;
जाऊ तसू बलिहारी ॥ ने० ३ ॥

संजमधार प्रभूपें जावे प्र०,
आवे वरषा भारीरे;
भिनीनवरंग सारी ॥ ने० ४ ॥

गिरिगव्हर रेह नेमीनें तार्‍यो रे०,
चडगई गड गिरनारीरे;
मखी सातसे लारी ॥ ने० ५ ॥

पूज्य प्रसन्नचंद्र आनंद्र धरवंदे आ०,
मनकी ममता मारी रे;
शिवनगरी पधारी ॥ न० ६ ॥ इति ॥

---

१४ वाणी की स्तुति.

॥ बांमडली, तथा चोकरी देशी ॥

मम गिरीश्वरी भवताद्भद चिदानंद घन पद शंकरी,
सम कूल करी व्यसन दरी गणनाथ प्रणत जगदिश्वरी ॥ टेर ॥

भवभय सागर तारण तरणि, भव्यांभोज निबोधन तरणी;
शिव नगर गमन निरुपम सरणि, ॥ मम० १ ॥

विजितामृत मधुरी ममद्वनिता, निश राजित विश्वाविश्व
जनिता; कृत निखिल जंतु विसरा वनिता ॥ मम० ॥ २ ॥

जिनचंद्र वदन कमलज भ्रमरी, कल कंवल केसरी नागदरी;
प्रत्यूह हरी जय विजय करी, ॥ मम० ॥ ३ ॥

स्याद्वाद विभूषित मुख कमला, पद नत जगदीश्वरता
कमला; रवि चंद्र किरण गण तर विमला, ॥ मम० ॥ ४ ॥

प्रकटी कृत लोकालोक गता, खिल वसुगुण पर्यंयता-
भिमता, निज शक्ति शक्ति दित कुमातिलता ॥ मम० ॥ ५ ॥

जगदंबा सकल भुवन विदिता, सम कर्ष वर्ग हरणे शुदिता;
गत सरण सरण वितरण मुदिता ॥ मम० ॥ ६ ॥

द्वादश परमाङ्ग रूप हरिणी, नवतत्त्व रूप नवनिधि धरणी;
स्फुट कपट कुटोत्पाटन करिणी, ॥ मम० ॥ ७ ॥

नयगम बहु भंग तरंगयिता, वसुगुण पर्याय सलिल चयिता;
कुलितामृत सुर सागर दायिता, ॥ मम० ॥ ८ ॥

बंदीकृत विविध कुमत वृंदा, नंदीकृत सखल सिद्ध चंदा;
भंदीकृत दुरित कलित मंदा, ॥ मम० ॥ ९ ॥

जगदुप कृति करण विगत तंद्रा, गांभीर्य तिरस्कृत जलधींद्रा;
स्वगुणोज्वलता जित शिवचद्रा ॥ मम० ॥ १० ॥ इतिश्री
जिनेंद्रोक्त द्वादशांगी श्रुतदेवी स्तव सम्पूर्णम्.

---

१५ जैनाचार्य पूज्यजी श्रीश्रीश्री १००८ श्रीश्री जयमल्लजी महाराजके गुणस्तव.

नाम जया श्रीना कोडो ॥ ए देशी ॥

पूज्य जयमल्लजी हुवा अवतारी, ज्यांरे नामतणी महिमा भारी :
कष्ट टले मिटे ताप तपो, पूज्य जयमल्लजीरो जाप जपो ॥ १ ॥
पूज्य नामे सब कष्ट टले, वली भूत प्रेत पिण नांही छले :
मिले न चोर रहे गप्पचपो ॥ पू० ॥ २ ॥

लक्ष्मी दिन दिन वेध जावे, वळी दुःख नेड़ा तो नहीं आवे;
व्यापारमें होवे बहुत नफा ॥ पू० । ३ ॥

अछ्यो काम तो हुय जावे, वळ बिगड़्यो कामतो बण जावे:
भूल चूक नहीं खाय दफा ॥ पू० ॥ ४ ॥

राज काजमें तेज रहे, वळी खमा खमा सब लोक कहे;
आछो जायगां जाय रुपो ॥ पू० ॥ ५ ॥

पूज्य तणो जां लियो ओठो, जांरे कदे नहीं आवे तोटो;
घर घर बारणे कांइ तपो ॥ पू० ॥ ६ ॥

एक माला नित नेम रखो, किण बात तणो नहीं होय धको:
खाली बिमाण और टळेजी सपो ॥ पू० ॥ ७ ॥

स्वगच्छतणी प्रतिपाल करे, मुनि राम सदा तुम ध्यान धरे:
कोई प्रत्यक्ष बात मती उथपो, पूज्य जयमल्लाजीरो जाप जपो॥

इति श्री जैनाचार्य गच्छाधिपति पूज्यजी
श्री श्री श्री १००८ श्री श्री जयमल्लजी
महाराजके गुणस्तव सम्पूर्णम्.

शिखामणरा बाल.

१ प्रभात ऊठ नवकारमंत्र आदि धर्म क्रिया करणी.

२ गांवमें साधु साध्वी हुवेतो व्याख्यान सुणणो तथा दर्शन करणा.

३ स्त्री तथा पुत्ररी कुवात कोई नें केणी नहीं.

४ मित्रसूं कोई बात गुप्त राखणी नहीं.

५ हर हमेश सत्य वचन बोलणो, असत्य भाषण करणो नहीं.

६ राजस्त्री, मित्रस्त्री, गुरुस्त्री, मेउस्त्री, पोतारीमाता. सासु, ए. ६ माता समान हे, इणांरा अवगुण देखणा नहीं, देखलेवेतो निंदा करणी नहीं.

७ खोटी साक्षी अगर खोटी सल्ला कोईने देवणी नहीं.

८ हिसाकर धर्म ग्रहणों नहीं.

९ साधुने व्यसन सेवणों नहीं.

१० घर आवणवालारो आदर करणों, पिण अनादर करणों नहीं.

११ राजा होकर कृपण होवे और पोते न्याय करे नहीं उणने धिक्कार.

१२ बस्तीमें साधु साध्वी आया हुवेतो वेहरायाविना जिमणों नहीं.

१३ देवाळो काढ लोकांरी रकम छते धन डुबोवे जिणनें धिक्कार.

१४ बेटीरा पैसो लेवे जिणनें धिक्कार.

१५ साधु साध्वी माथ आळ देवे तथा निंदा करे जिणनें धिकर.

१६ आपणी न्यातमाहे फूट करावे उणनें धिक्कार.

१७ आपरो धर्म दिपावे जिणनें धन्य.

१८ जैनपाठशाळा, जैनट्रेनिंग कॉलेज् आदि धर्म कार्यमें मदत देवे जिणनें धन्य.

१९ स्थानकमांहे, चूलाऊपर, धर्मकार्य करे जठे, चद्रवो राखे तो जीव बचे.

२० गुरुरो वचन श्रावण करणो, ओर गुरु केवे उण रीतसूं वर्ताव करणो.

२१ मार्गमांहे उप्पर देखनें चालणो नहीं, निचे देखनें चालणो जिवदया पळे.

२२ पराया माथे उपकार करणो, ओर करनें पोमावणो नहीं.

२३ आपरा गुण पोते करणा नहीं.

२४ लोक निंदा करे एसो काम करणो नही.

२५ अन्यायसूं लक्ष्मी उपार्जन करणी नहीं, करतो १६ वर्ष पछे रेवे नहीं.

२६ घणा मिनखानें शत्रुनें मान देवणो, अपमान करणो नहीं.

२७ चोखो काम करतां आळस करणो नहीं.

२८ दुःख आयां धैर्य राखणों.

२९ चित्योडो काम हुया विना कोईनें केवणों नहीं.

३० प्रभातका वेगो ऊठतो शरीर निरोग रहे.

३१ कलह हुवे उठे विचमें बोलणों नहीं तथा जावणों नहीं.

३२ मोटा साथे वैर करणो नहीं.

३३ लेवण देवणमें, विद्यामें, भोजनमें, वेदरे आगे, लाज करणी नहीं.

३४ घी, तेल, दही, दूध, मिष्टानआदि प्रवाही वस्तु उघाड़ी मेलणी नहीं.

३५ नीच आदमीसुं विवाद करणो नहीं.

३६ मूर्ख, अन्यायी, कायर, अभिमानी, दुष्ट, इणांरा आगे नौकरी करणी नहीं.

३७ परस्त्रीरी संगत करणी नहीं, परस्त्री माता समान जाणनी.

३८ एक अक्षर शिखावे उणनें पिण गुरु कर मानणो.

३९ पाणी छाण्यां तथा देखीयां विना पिवणो नहीं.

४० प्राण जावे तोभी झूठ बोलणो नहीं.

४१ उधार लायोडा पैसा मुदतरा पेली देवणो.

४२ चोरी हुई वस्तु कोई देवे तो पिण लेवणी नहीं.

४३ लियोडी तथा दियोडी रकम मांडणरो आळस करणो नहीं.

४४ दूसरे की बात कोईरा आगे केवणी नहीं.

४५ घरराा मांहे मांगलीक कार्य हुवेतो सगा संबंधीने भूलणा नहीं.

४६ उंदो तथा सूंदो सोवणो नहीं, डावे पसवाडे सोवणेंसूं निरोग रहे.

४७ उभां उभां पाणी पीवणो नहीं तथा लघुनीत करणी नहीं.

४८ शिख्योडी विद्या भूलणी नहीं याद राखणी.

४९ अणजाण्यां आदमीनें जिमावेतो हरकत नहीं, घरमें सोवण वास्ते जागा देणी नहीं.

५० तावडा मांहेसूं आयनें तूरत पाणी पिवणों नहीं.

५१ शरण आयांडा माथे दया करणी.

५२ आपरा छोकरा छोकरीनें जैन शाळा मांहे घालणा जिण वखत उंरां ऊमर ४ वर्ष, ४ महिना, ४ पक्ष, ४ प्रहर, ४ घडी, ओर ४ पळ इणतरे बरोबर उमरकी निगा राखनें घाल्यासूं टावर निश्चय कुलदीपक ओर विद्या पात्र हुवे.

५३ धर्म करतां लाजणो नहीं.

५४ अजाण्या कुलमें सगपण करणा नहीं.

५५ अजाण्या आदमीनें नोकरी राखणो नहीं.

५६ विजळी कडकाति हुवे जरां 'जिनचंद्रकमलसूरिभ्योनमः' केणांसूं आपरे माथे विजळी पडे नहीं.

५७ संध्याकाळ समयमें आहार, मैथुन, निद्रा, स्वाध्याय ए ४ नहीं करणा. आहर करणासू व्याधि, मैथून सेव-णासू कुलरो क्षय करणेवालो पुत्र हुवे, निद्रासूं धनरो नाश, स्वाध्याय करणासूं मृत्यु.

५८ दूसरेकी निंदा करे जीण ऊपर विश्वास राखणो नहीं.

५९ स्वप्न जादा आवेतो, १३ मां विमलनाथजी महाराजरी माळा फेरणी, स्वप्न आवे नहीं.

६० आपरे शत्रूरो तथा मित्ररो विनय करणो.

६१ दूसरे के घर एकलो जावणो नहीं.

६२ मारगमें चपलाईसूं चालणो नहीं.

६३ मेला वस्त्र वापरणासूं, वारंवार खाणेसूं कठोर वचन बोलणेसूं, सूर्योदय तथा अस्त समयमें सोवणासूं, लक्ष्मी निश्चय जावे; दारिद्र आवे.

६४ धर्मरा तथा और पुस्तक, वेठणके वेठकेमें बांधणा नहीं

६५ वणे जठेतांई वस्त्र शुद्ध राखणा.

६६ दूध खायानें, स्त्री संग करनें, स्नान करनें, घरकी स्त्रीसूं लडनें, परदेश गमन करेतो कुफायदो हुवे अच्छो नहीं.

६७ हाजार जामीन होणो नहीं.

६८ आपरा जातरा तथा पंचारो अपमान करणो नहीं.

६९ मांगने लायोडा गहणा तथा रकम हजम करणी नहीं.

७० राज सभामें विचार करनें बोलणों, झूठ नहीं बोलणो

७१ भाषण वैगेर सभाहुवे जठे जरूर जावणो.

७२ धर्म कार्यमें आडी देणी नहीं.

७३ धर्मरे स्थानकमें ठढी निरज राखणी, ओ पाप छोडनरो ठिकाणो हे.

७४ विद्यावान, गुणवानरी संगत करणी, निच आदमीरी संगत नहीं करणी.

७५ गुरु आयां ऊभो होवणों, आदर सन्मान देवणां, विनय करणों.

७६ विचार कर पछे बोलणों.

७७ छोटो हुयनें वडेरी देखा देखी करणी नहीं.

७८ कोईरी नकाल काढणी नहीं.

७९ बखाण वगैरेमें बणतां सुधी अत्यंत छोटा बालकनें साथे लावणो नहीं.

इतिश्री जैनाचार्य पूज्यजीश्री प्रभाकरसूरि उर्फ जैनाचार्य पूज्यजी श्री प्रसन्नचद्रजीसूरि निर्मित

जैन तत्त्वबोध

नामक ग्रथ समाप्तम् ॥

श्री प्रसन्नचंद्रसुरीप्रशास्तिः

भायाच्चेतु प्रसन्नचन्द्रकृतये वाहो अयं संयमी,
रात्रावेव तदा तमोहरतया लोकान्धकारं हरेत् ।
अस्मादन्हि हियात्मभाकरतये त्वाचिन्त्य चित्ते विधिर्यन्नाम-
द्वयमाधितोचिततया सोऽयं प्रसन्नो मुनिः ॥ १ ॥

गुरौकुर्वन् भक्तिं विदधदनुरक्तिं जिनमते,
दधन्नित्यं शान्तिं निजमनसि दान्तिं च नितराम् ।
धरन्धर्मध्यानं विजहदभिमानं सुमतिमान् ,
प्रसन्नेन्दुः सूरी रमयति हृदूरीकृततपाः ॥ २ ॥

श्रीमन् प्रसन्नचन्द्र ! प्रकुर्वताऽऽ त्वया गुरोर्भक्तिम् ।
आदर्शदर्शनेन हि गुरुभक्तिः शिक्षिता नृभ्यः ॥ ३ ॥

विधिर्गुणाढ्याय हि यादृशाय,
दत्ते गुणाढ्यं खलु तादृशं तम् ।
श्रीरामचन्द्रस्य महामुनेर्य
च्छिष्यः सुयोग्योऽस्ति प्रसन्नचन्द्रः ।४।

तीर्थङ्करानननिधूक्तिसुधाचकोरः
श्रीरामचन्द्रमुनिपादसरोजभृङ्गः ।
वादिद्विपोऽलनमश्चनवः स जैनाचार्यो भृशं जयति
पूज्यप्रसन्नचन्द्रः ॥ ५

अहमदनगरश्राद्धैः संप्रार्थितसत्कृतो बहुलम् ।
आशुकविः श्रीनित्यानन्दः शास्त्री व्यरचच्छ्लोकान् ॥ १ ॥

At the request of Shrawaks of Ahmednagar
Nityanand Shastri has praised

PUJYA PRASANCHANDRA SURI

IN VERSES.

Pujya Prasanchandra alias *Prabbakar Suri* may destroy the darkness in the form of ignorance in the minds of the people; as the moon destroys the dark by night or the sun does the same during the day, thinking the God Himself of this, He has given him two names.

Who had a great devotion towards his preceptor, and who set up his mind in the *Jain* Seet of religion, who is always calm and who is jolly of his profound knowledge and high thoughts. who practices, the third vow, in the form of

Dhrama Dhyan, who has forsaken pride and who is of exellent brain, with devotion mastered, with these qualifications Pujya *Prasanchandra Suri* may satisfy the souls.

Oh learned Prasanchandra, you have done unexceded devotion of your preceptor, you have set up a lesson in the world, how to devote one'self towards his preceptor, by advice or personal influence or behaviour God gives qualifications to a special spirit like you for such purposes.

The highly deserved, *Prasanchandra* is the disciple of the great *Muni Suree Ramchandra*, as *Amrit* is to *Chakor*, so is the advice of *Tirthenkar Maharaj* in the form of *Amrit* and the feet of *Ramchandra Muni* are a lotus and a bee who has himself in it and the elephant who is defendent in conquring him, the lion *Pujya Prasanhandra* Suri *Jainacharay* may conquer his respondent soon.

गुण स्तवन.

॥ तुमसुनियेरे लोको कक्का बत्तीसी हिरदे धारिये एदेशी ॥

तुम सुनियेरे लोको पूज्य परम पद सेविये ॥ टेर ॥

मारवाडमें हुवा आवणा, दक्षिण देश मझार;
चरण सरोज पूज्यरा फरसी, हर्ष्या सब नर नारहो ॥ तु०१॥
जात श्रावगी पूज्यनी सरे, गंगवाळ विख्यात;
पंडित ज्ञानी उत्तम वक्ता, पद् काया के नाथहो ॥ तु० २॥
ज्ञान ध्यानरो उद्यम भारी, शांति मुद्रा सोहे;
रूप संपदा तनपर नामी, देख्यां मनडो मोहे हो ॥ तु० ३॥
सूरि प्रभाकर प्रसन्नचंद्रजी, दोय नाम सुखकार;
शिष्य मंडळी दिपे अधिकी, धन धन तुम अवतारहो ॥ तु० ॥
क्षमा धर्म मुनिराजको भाख्यो, दस धर्मामें पेली;
सोई पूज्यजी तनपर धारी, हढकर ज्ञानकी शेलीहो ॥ तु०५॥
एकवार जो दर्शन करले, सो फिर दोड्यो आवे;
वैर किसीसे राखे नहीं, अद्भुत ज्ञान सुणावेहो ॥ तु० ६॥
टिका वाचक ऐसा विरला, देखणमें नहीं आवे;
सूत्र तणी पंचांगी श्री मुख, हढकर खूब लडावेहो ॥ तु० ७॥
शुद्धाचारी उग्रविहारी, ममता मारी सारी;
सबजनके हितकारी भारी, आतो नयन निहारीहो ॥ तु० ८॥

भांतभांतका प्रश्न जो आवे, उत्तर आपे सारा;
मेट अंधारो झटपट हिरदे, करदेवे उजियारा हो॥तू० ९॥

अनुकंपाने बहोत लडावे, विधविध रेस बतावे;
पुण्य धर्मरा मारग दोई, तत्क्षिण कही दरसावेहो॥तू० १०॥

शब्द बोध अति उत्तम किनों, व्याकरण पढिया भारी;
न्याय सहित समझावे सबने, आगम अर्थ उचारीहो॥तू० ११॥

छटादार व्याख्यान तणों रस, श्रोताने बहु आवे;
भूले नहीं उमर सारीमें, ऐसा भेद बतावेहो॥तू० १२॥

भद्रक भाव पूज्यना भारी, शत्रुनें हितकारी;
दे उपदेश शांत करदेवे, महिमा अगम अपारीहो॥तु० १३॥

देश देशका दर्शन करवा, श्रावक पूज्यपें आवे;
सुण उपदेश शांत मन होवे, गुण मुख अधिका गावेहो॥तु० १४॥

मुंबईसें नगर पधारे, इगतपुरी चोमास;
घोडनदी कर नगर तणो फिर, पुरी मनरी आशहो॥तु० १५॥

अहमदनगर चोमासो करनें, पूज्य धर्म दिपायो;
उगणीसे सत सठ वर्षे, हुवे हर्ष सवायो हो॥तु० १६॥

लिछमणराजजी उत्तमचंद्रजी, शिष्यतो वडा विनीत;
क्षमापात्र गुणवान घणांहे, उत्तम जिणकी रीतहो॥तु० १७॥

माणिक पूज्य चरण नित चावे, और दास नहीं आवे;
भरी सभामें हर्षित होके, पूज्यतणा गुण गावेहो
तुम सुनियेरे लोको पूज्य परम पद सेविये॥ १८ इति॥

२ वीरा मोरा गजथकी ऊतरो एदेशी ॥

पूज्यजी तारो हम भणी, हम तुम दर्शन प्यासीहो;
आप चरण नित सेवता, जावे सर्व उदासीहो ॥ पू० १ ॥
चंद्रचकोर चावे सदा, फूलतो भमरो ध्यावेहो;
तिम हम चितमें तुमवसो, मयूर तो मेघही चावेहो ॥ पू० २ ॥
केरी स्वाद कोकिल लहे, सोतो आंबेपें जावेहो;
तिण गुण जांणे पूज्यरा, वेतो दोडके आवेहो ॥ पू० ३ ॥
धर्म दीपक वड पूज्यजी, मेटो मिथ्या अंधारोहो;
ज्ञान ध्यानमें नित रहो, करते वहोत सुधारोहो ॥ पू० ४ ॥
माणिक अहमदनगरनो, अल्प बुद्धि गुण गावेहो;
कोटी जीभ गुण पूज्यरा, गातां पार न आवेहो ॥ पू० ५ इति ॥

माणकचद हुकुनचद मुथियान

अहमदनगर.

प्रश्नोत्तर रत्नमाला ॥

प्रणिपत्य वर्धमानं प्रश्नोत्तर रत्नमालिकां वक्ष्ये ।
नागनरामरवन्द्यं देवं देवाधिपं वीरम् ॥ १ ॥

कः खलु नालंक्रियते दृष्टादृष्टार्थसाधनपटीयान् ।
कण्ठस्थितया विमलप्रश्नोत्तररत्नमालिकया ॥ २ ॥

भगवन्किमुपादेयं गुरु वचनं हेयमपि च किमकार्यम् ।
को गुरुरधिगततत्त्वः सत्त्वहिताभ्युद्यतः सततम् ॥ ३ ॥

त्वरितं किं कर्तव्यं विदुषा संसारसंततिच्छेदः ।
कि मोक्षतरोर्बीजं सम्यग्ज्ञानं क्रियासहितम् ॥ ४ ॥

किं पथ्यदनं धर्मः कः शुचिरिह यस्य मानसं शुद्धम् ।
कः पण्डितो विवेकी किं विषमवधीरिता गुरवः ॥ ५ ॥

किं संसारे सारं वहुसोऽपि विचिन्त्यमानमिदमेव ।
मनुजेषु दृष्टतत्त्व स्वपरहितायोद्यत जन्म ॥ ६ ॥

मदिरेव मोहजनकः कः स्नेहः के च दस्यवो विषयाः ।
का भववल्ली तृष्णा को वैरी नन्वनुद्योगः ॥ ७ ॥

कस्माद्भयमिह मरणादन्धादपि को विशिष्यते रागी ।

कः शूरो यो ललनालोचनबाणैर्न च व्यथितः ॥ ८ ॥
पातु कर्णाञ्जलिभिः किममृतमिव बुध्यते सदुपदेशः ।
किं गुरुतायाः मूल यदेतदप्रार्थनं नाम ॥ ९ ॥

किं गहनं स्त्रीचरितं कश्चतुरो यो न खण्डितस्तेन ।
किं दारिद्र्यमसंतोप एव किं लाघवं याञ्चा ॥ १० ॥

किं जीवितमनवद्यं किं जाड्यं पाटवेऽप्यनभ्यासः ।
को जागर्ति विवेकी का निद्रा मूढता जन्तोः ॥ ११ ॥

नलिनीदलगतजललवतरलं किं यौवनं धनमथायुः ।
कं शशधरकरनिकरानुकारिणः सज्जना एव ॥ १२ ॥

को नरकः परवशता किं सौख्यं सर्वसङ्गविरतिर्या ।
किं सत्यं भूतहितं किं प्रेयः प्राणिनामसवः ॥ १३ ॥

किं दानमनाकाङ्क्षं किं मित्रं यन्निवर्तयति पापात् ।
कोऽलंकारः शीलं किं वाचां मण्डनं सत्यम् ॥ १४ ॥

किमनर्थफलं मानसमसंगत का सुखावहा मैत्री ।
सर्व व्यसनविनाशे को दक्षः सर्वथा त्यागः ॥ १५ ॥

कोऽन्धो योऽकार्यरतः को बधिरो यः शृणोति न हितानी ।
को मूको यः काले प्रियाणी वक्तुं न जानाति ॥ १६ ॥

किं मरणं मूर्खत्व किं चानर्घ्यं यदवसरे दत्तम् ।
आ मरणात्किं शल्यं प्रच्छन्नं यत्कृतमकार्यम् ॥ १७ ॥

कुत्र विधेयो यत्नो विद्याभ्यासे सदौषधे दाने ।
अवधिरणा क्व कार्या खलपरयोषित्परधनेषु ॥ १८ ॥

काहर्निशमनुचिन्त्या संसारासारता न च प्रमदा ।
का प्रेयसी विधेया करुणा दाक्षिण्यमपि मैत्री ॥ १९ ॥

कण्ठगतैरप्यसुभिः कस्यात्मा नो समर्प्यते जातु ।
मूर्खस्य विषादस्य च गर्वस्य तथा कृतघ्नस्य ॥ २० ॥

कः पूज्यः सद्वृत्तः कमधनमाचक्षते चलितवृत्तम् ।
केन जितं जगदेतत्सत्यतितिक्षावता पुंसा ॥ २१ ॥

कस्मै नमः सुरैरपि सुतरां क्रियते दयाप्रधानाय ।
कस्मादुद्विजितव्यं संसारारण्यतः सुधिया ॥ २२ ॥

कस्य वशे प्राणिगणः सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य ।
क्व स्थातव्यं न्याय्ये पथि दृष्टादृष्टलाभाय ॥ २३ ॥

विद्युद्विलसितचपलं किं दुर्जनसंगतं युवतयश्च ।
कुलशैलनिष्प्रकम्पाः के कलिकालेऽपि सत्पुरुषाः ॥ २४ ॥

किं शोच्यं कार्पण्यं सति विभवे किं प्रशस्यमौदार्यम् ।
तनुतरवित्तस्य तथा प्रभविष्णोर्यत्सहिष्णुत्वम् ॥ २५ ॥

चिन्तामणिरिव दुर्लभमिह किं कथयामि ननु चतुर्भद्रम् ।
किं तद्वदन्ति भूयो विधूततमसो विशेषेण ॥ २६ ॥

दानं प्रियवाक्सहितं ज्ञानमगर्वं क्षमान्वितं शौर्यम् ।
त्यागसहितं च वित्तं दुर्लभमेतच्चतुर्भद्रम् ॥ २७ ॥

इति कण्ठगता विमला प्रश्नोत्तररत्नमालिका येषाम् ।
ते मुक्ताभरणा अपि विभान्ति विद्वत्समाजेषु ॥ २८ ॥

रचिता सितपटगुरुणा विमला विमलेन रत्नमालेव ।
प्रश्नोत्तरमालेयं कण्ठगता कं न भूपयति ॥ २९ ॥

॥ इति श्रीविमलविरचिता प्रश्नोत्तररत्नमाला समाप्ता ॥

व्याख्यान ऊठीयां पछे बोलणेंको पद.

षड्द्रव्य जहामें कह्यो भिन भिन आगम सुणत वखाण.
पंचास्तिकाया नवपदारथ पंच भाख्या ज्ञान;
चारित्र तेरे(१) कह्या जिनवर ज्ञानदरशन परधान,
जो शास्त्र नित सुणो भवियण आण शुधमन ज्ञान ॥ १ ॥

चोवेसि तीर्थंकर लोकमांही तारण जाझ समान,
नव वासु नव प्रति वासु देवा बारे चक्रवर्ति जांण;
बलदेव नवसव हुवा त्रेसठ घणागुणारी खाँन ॥ जो० ॥ २

चार देशना दिवी जिनवर कीयो पर उपगार,
पंचअणुव्रत चारशिक्षा तीन गुणव्रत धार;
पचसंवर जीनेश भाख्या दया धर्म निधान ॥ जो० ॥ ३ ।

अवर कहाँलग करूं वर्णन तीनलोग प्रमान,
सुणत पाप पुलाय जावे थाय पद निरवान;
देवाविमाणिक मांही पदवी कही पच प्रधान,
जो शास्त्र नितसुणो भवियण आण शुध मन ज्ञान ॥ ४ ॥

इति षड्द्रव्य सम्पूर्णम् ॥

---

(१) पान्च समित, तीनगुप्ति, पाच चारित्र, एवं १३ चारित्र, तत्त्वार्थ सूत्रेष्व

पूज्यजी श्रीके पूर्वजोंका सच्चा नाम.

१ जैनाचार्य पूज्यजी श्री धर्मदासजी महाराज.
२ जैनाचार्य पूज्यजी श्री धन्नोजी महाराज.
३ जैनाचार्य पूज्यजी श्री बुधरजी महाराज.
४ जैनाचार्य पूज्यजी श्री जयमल्लजी महाराज.
५ जैनाचार्य पूज्यजी श्री रायचंद्रजी महाराज.
६ जैनाचार्य पूज्यजी श्री आशकरणजी महाराज.
७ जैनाचार्य पूज्यजी श्री शबलदासजी महाराज.
८ जैनाचार्य पूज्यजी श्री वृद्धिचंद्रजी महाराज.
९ जैनाचार्य पूज्यजी श्री रामचंद्रजी महाराज.
१० जैनाचार्य पूज्यजी श्री प्रभाकरसूरिजी महाराज.
उर्फ जैनाचार्य पूज्यजी श्री प्रसन्नचंद्रजी महाराज.

॥ श्रीः ॥

श्रीलक्ष्मीधरचरित्रका-

शुद्धिपत्र.

	अशुद्ध.	पृ	पं०	शुद्ध.
१	लब्बा	२	१२	लब्ध्वा
२	भवण-	४	१४	श्रवण-
३	अनाथलक्ष्मी,	४	१९	लक्ष्मीमनाथा,
४	मत्वैव	६	१३	गत्वैव
५	कन्दन्तीं	९	१८	क्रन्दन्ती
६	श्रयते	१०	२१	श्रूयते
७	गुगणराशि	१५	१५	गुणराशि,
८	चइऊणाओ	१७	१०	चइऊणायं
९	वारा	१८	२	वीरो
१०	कृतसत्क्रियः	१८	१८	कृतसत्क्रियः
११	गआ	२०	१०	गओ
१२	यया	२१	१६	मया
१३	क कहा	२२	१	का कहा
१४	तच्छुत्वा	२३	१०	तच्छ्रुत्वा
१५	णाइ	२७	१	णाइ
१६	संपेविस्वय	३२	२	संपेक्खिय,

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

अह लच्छीहरकेवलिचरियं ।

मङ्गलाचरणम् ।

सिरिजिणणाहं सुद्धं, भविकमलुल्लासभक्खरं देवं ।
पवयण—अमियपओयं, सुरऽसुरमणुयाइवंदियं वंदे॥१॥

रिद्धत्थिमियसमिद्धा, धम्मधुराणिच्चमंगलोवेया ।
समणोवासगनिइया, चंपाविउलाणुकंपाऽऽसि ॥ २ ॥
तत्थाऽऽसि य जिणवयणे, णिउणो णयणीइपारगो राया ।
कूणियणामा सव्वप्पाणिहिएसी जिणोवासी ॥ ३ ॥

छाया.

श्रीजिननाथं शुद्धं, भविकमलोल्लासभास्करं देवम् ।
प्रवचनामृतपयोदं, सुरासुरमनुजादिवन्दितं वन्दे ॥ १ ॥
ऋद्धस्तिमित-समृद्धा, धर्मधुरा नित्यमङ्गलोपेता ।
श्रमणोपासकानिचिता, चम्पा विपुलानुकम्पाऽऽसीत् ॥ २ ॥
तत्राऽऽसीच्च जिनवचने निपुणो नयनीतिपारगो राजा ।
कूणिकनामा सर्वप्राणिहितैषी जिनोपासी ॥ ३ ॥

---

१ धर्मस्य धू:—धर्म-धुरा, साऽस्त्यस्या इत्यर्श-आद्यजन्तमिदम् ।

आसि य धन्नो सेट्ठी, पयविं लहिऊण णयरसेट्ठस्स ।
तस्स वसुमई घरणी, लच्छि पासीअ सुमिणम्मि ॥ ४ ॥
चइऊण कोवि देवो, तयणु य सव्वट्ठसिद्धओ तीए ।
गब्भा जाओ लच्छी, पासा लच्छीहरो णामं ॥ ५ ॥
णच्चा जम्मणकालं, देवीकणगस्स वरिसणं काही ।
सव्वोउसुहसमिद्धं, भवणचयं तहसुवण्णड्ढं ॥ ६ ॥
मज्जण-मण्डण-कीलावणंऽक-खीराइधाइ–आईहि ।
तस्सिं परिवुड्ढो जह, चंपगरुक्खो गिरिगुहाए ॥ ७ ॥
लक्खण-वंजणपुण्णो, सयलकलो विमलरूवलावण्णो ।
परिणीसी सो समए, लच्छीवइआइ-अट्ठ कन्नाओ ॥ ८

छाया

आसीच्च धन्यः श्रेष्ठी, पदवीं लब्ध्वा नगरश्रेष्ठस्य ।
तस्य वसुमती गृहिणी, लक्ष्मीमपश्यत् स्वप्ने ॥ ४ ॥
च्युत्वा कोऽपि देवस्तदनु च सर्वार्थसिद्धतस्तस्याः ।
गर्भाज्जातो लक्ष्मीदर्शनाल्लक्ष्मीधरो नाम ॥ ५ ॥
ज्ञात्वा जन्मकालं, देवी कनकस्य वर्षणमकार्षीत् ।
सर्वर्त्तुसुखसमृद्धं, भवनचयं तथा सुवर्णाढ्यम् ॥ ६ ॥
मज्जन–मण्डन–क्रीडना-ऽङ्कक्षीरादि धात्र्यादिभिः।
तस्मिन् परिवृद्धो यथा चम्पकवृक्षो गिरिगुहायाम् ॥ ७ ॥
लक्षण-व्यञ्जन-पूर्णः सकलकलो विमलरूपलावण्यः ।
पर्यणैषीत्स समये, लक्ष्मीवत्याद्यष्टकन्याः ॥ ८ ॥

माणुसियदिव्वभोए, भवणे सययं च भुंजमाणस्स ।
जाइ सुहेण कालो, दोगुंदगदेव वा जस्स ॥ ९ ॥
चिन्तामणिव्व तस्स ण, पासे सोगाइयं सरइ जाउ ।
णिच्चं णव-णव-मंगल-गाण-महोच्छवमओ समओ ॥ १० ॥
सव्वरिऊसुहभवणे, रम्मवणे विविहपुप्फफलकिण्णे ।
कीलइ जहिच्छमणिसं, इंदो इव नंदणुज्जाणे ॥ ११ ॥
तस्स सिरीसंरक्खणमिसओ कुसलाइं वत्तुकामव्व ।
पुण्णाकिट्ठा देवी, निच्चं बारट्ठिया आसि ॥ १२ ॥
पंचवण्णरयणोवानिवद्धे, धूवधूमपडलंवुयकन्ते ।
चित्तरत्तमणिरोईसुविज्जु-ब्भाइए मिउ-मयंगणिणाए ॥ १३ ॥

छाया.

मानुषिकदिव्यभोगान् भवने सततं च भुञ्जानस्य ।
याति सुखेन कालो, दोगुन्दकदेववद्यस्य ॥ ९ ॥
चिन्तामणिवत्तस्य न पार्श्वे शोकादिकं सरति जातु ।
नित्यं नवनवमङ्गलगानमहोत्सवमयः समयः ॥ १० ॥
सर्व्वर्त्तुसुखभवने, रम्यवने विविधपुष्पफलकीर्णे ।
क्रीडति यथेच्छमनिशम् इन्द्र इव नन्दनोद्याने ॥ ११ ॥
तस्य श्रीसंरक्षणमिषतः कुशलानि वक्तुकामेव ।
पुण्याकृष्टा देवी, नित्यं द्वारस्थिताऽऽसीत् ॥ १२ ॥
पञ्चवर्णरत्नोपानिबद्धे, धूपधूमपटलाम्बुदकान्ते ।
चित्ररत्नमणिरोचिःसुविद्युद्भ्राजिते मृदुमृदङ्गनिनादे ॥ १३ ॥

मेहजाल-भम-णच्चियमोरे, हंत ! चित्तमयराजिय-हंसे ।
सुज्ज-चन्द-मणि-णिज्झरणीरे, पाउसेण्णभवणे बहुरूवे ॥१४॥
सत्तभूमसिहरासणधीरो, णच्चगीयसवणव्ववसाओ ।
सव्वया सुहमणा सुयवं सो, दारवालमुहओ पिउवुत्तं ॥ १५ ॥
सुकुमाल ! देवलोगं, अज्जगओ तुहपियात्ति सुणिऊण ।
सो भासीअ तओ किं, अज्जगओ चे सुवे पुणो एस्सइ॥१६॥
काऊणं मयकिच्चं, गयसोगे से कुडुंबलोगम्मि ।
मच्चा लच्छिमणाहं, इच्छइ घेत्तुं य कूणिओ राया ॥ १७ ॥
रायप्पेसियपरियण-मुहओ सुणिऊण सव्ववुत्तंतं ।
वारी आह घरं मे संतइरयणोवसोहियं अत्थि ॥ १८ ॥

छाया.

मेघजालभ्रमनर्तितमयूरे, हन्त चित्रमयराजितहंसे ।
सूर्यचन्द्रमणिनिर्झरनीरे, प्रावृषेण्यभवनेबहुरूपे ॥ १४ ॥
सप्तभूमशिखरासनधीरो, नृत्यगीतश्रवणव्यवसायः ।
सर्वदा सुखमनाः श्रुतवान् स द्वारपालमुखतः पितृवृत्तम् ॥१५॥
सुकुमार ! देवलोकमद्य गतस्तव पितेतिश्रुत्वा ।
सोऽभाषत ततः किम्? अद्य गतश्चेत् श्व एता ॥ १६ ॥
कृत्वा मृतकृत्यं गतशोके तस्य कुटुम्बलोके ।
मत्वा अनाथलक्ष्मीमिच्छति ग्रहीतुं च कूणिको राजा ॥१७॥
राजप्रेषितपरिजन-मुखतः श्रुत्वा सर्ववृत्तान्तम् ।
द्वारी आह घरं मे, सन्ततिरत्नोपशोभितमस्ति ॥ १८ ॥

संकासंकुलचित्तो, तं णाउं तत्थ आगओ राया ।
दिव्वाइं भवणाइं, दट्ठूणं विम्हिओ जाओ ॥ १९ ॥
अह सत्तभूमभवणं, पविसिय पढमेठिओ चगियचित्तो ।
णच्चा तं पसुठाणं, तउवरि-खंडं गओ राया ॥ २० ॥
तस्सापुव्वं सोहं, दट्ठूणं पुत्तलीव सो जाओ ।
दासीदासाइगिहं, तं मच्चा सो तओ चलिओ ॥ २१ ॥
तीयं खंडं णाणा,-रयणाईहिं अपुव्वसोहड्ढं ।
दट्ठूण कम्मचारग,-गिहंति ओगच्च पट्ठिओ उवरि ॥ २२ ॥
चोत्थे खंडे रुइरे, मणसावि अचिंतरिद्धिसम्पुण्णे ।
सिप्पकलाकमणिज्जे, अइरमणिज्जे पविट्ठो सो ॥ २३ ॥

छाया.

शङ्कासङ्कुलचित्तः, तज्ज्ञातुं तत्राऽऽगतो राजा ।
दिव्यानि भवनानि, दृष्ट्वा विस्मितो जातः ॥ १८ ॥
अथ सप्तभूमभवनं, प्रविश्य प्रथमे स्थितश्चकितचित्तः ।
ज्ञात्वा तत् पशुस्थानं, तदुपरि खण्डं गतो राजा ॥ २० ॥
तस्याऽपूर्वां शोभा, दृष्ट्वा पुत्तलीवत् स जातः ।
दासी-दासादि-गृहं, तन्मत्वा स ततश्चलितः ॥ २१ ॥
तृतीयं खण्डं नाना.-रत्नादिभिरपूर्वशोभाऽऽढ्यम् ।
दृष्ट्वा, कर्मचारकगृहमित्यवगत्य प्रस्थित उपरि ॥ २२ ॥
चतुर्थे खण्डे रुचिरे मनसाऽप्यचिन्त्यर्द्धिसम्पूर्णे ।
शिल्पकलाकमनीयेऽतिरमणीये प्रविष्टः सः ॥ २३ ॥

विविहाणं रयणाणं, दित्तीहिं तत्थ वाहिरंतरओ ।
गव्वेव चित्तिओ सो, ठाउं जाउं य असमत्थो ॥ २४ ॥
सम्पयमचिंतरूवं, विविहं विस्सम्मि दुल्लहं तं तं ।
पासं पासं चिन्तइ, सुविणो सग्गब्भमो वा मे ॥ २५ ॥
अहो ! विभूई रयणाणमेसा, अहो ! अपुव्वा भवणस्स सोहा
अहो अमुस्साहिवइस्स भग्गं, इहेव पुण्णस्स फलं णिएमि २
पुव्वभवे जइ पुण्णं, काहीतंकिंणमेऽत्थि गिहमेवं ।
अहवा पुण्णाकिट्ठो, एवेणं भवणमज्ज सम्पत्तो ॥ २७ ॥
धिरत्थु रज्जं अहवा पहुत्तणं, सिरिं वलं वुद्धि-जसे य सूरयं
नपत्तमेयं भवणं महब्भुयं, जइ प्पियं लोय-सुदुल्लहं मए ।२८।

छाया.

विविधानां रत्नानां दीप्तिभिस्तत्र बहिरन्तरतः ।
मत्वैवाचित्रितः स, स्थातुं यातुं चासमर्थः ॥ २४ ॥
सम्पदमचिन्त्यरूपां विविधां विश्वस्मिन् दुर्लभां तां ताम् ।
दर्शं दर्शं चिन्तयति स्वप्नः स्वर्गभ्रमो वा मे ॥ २५ ॥
अहो विभूतीरत्नानामेषा, अहो अपूर्वा भवनस्य शोभा ।
अहो अमुष्याधिपतेर्भाग्यम् इहैव पुण्यस्य फलं पश्यामि ॥ २६ ॥
पूर्वभवे यदि पुण्यमकार्षं तत्किं न मेऽस्ति गृहमेवम् ।
अथवा पुण्याकृष्ट एवेदं भवनमद्य सम्प्राप्तः ॥ २७ ॥
धिगस्तु राज्यमथवा प्रभुत्वं श्रियं (श्रीं) बलं बुद्धि-यशसी च शूरताम् ।
न प्राप्तमेतद्भवनं महाद्भुतं यदि प्रियं लोकसुदुर्लभं मया ॥ २८ ॥

आह य दूई गच्चा, भवणवइं तुरिय मेत्थ आणेसु।
सय-सय कज्जे लग्गा, नो तत्थ य कावि पडिसुणइ ॥ २९ ॥
तो कुद्धो सो राया, आहोडेए कसेण तं दासिं।
आहोडिया य दासी, रण्णा कुद्धेण रोयमाणी सा ॥ ३०॥
रुद्धावि पंचमं पुण, छट्ठं खंडं च सत्तमं पत्ता।
जाहे सो बहुथीहिं, देवंगणसंनिहाहि सह ठाइ ॥ ३१ ॥
मज्झे रायइ ललियं, जस्स मणोहारि सव्वओभद्दं।
वज्जमया नीमी तह, जत्थ रइट्ठो पइट्ठोवि ॥ ३२ ॥
वेरुलियाणं विविहा, माणिक्काण च चित्तिया खम्भा।
कुड्डाइं मसिणाइं, रयणाण हेमखइयाणं ॥ ३३ ॥

छाया

आह च दूतीं गत्वा भवनपतिं त्वरितमत्राऽऽनय।
स्वक स्वक-कार्ये लग्ना, नो तत्र च काऽपि प्रतिशृणोति ॥ २९ ॥
ततः क्रुद्धः स राजा, ताडयति कशेन तां दासीम्।
ताडिता च दासी, राज्ञा क्रुद्धेन रुदती सा ॥ ३० ॥
रुद्धापि पचमं पुनः षष्ठं खण्डं च सप्तमं प्राप्ता।
यत्र स बहुस्त्रीभिर्देवाङ्गनासंनिभाभिः सह तिष्ठति ॥ ३१ ॥
मध्ये राजते ललितं, यस्यमनोहारि सर्वतोभद्रम्।
वज्रमया नीवी तथा, यत्र रैष्टः[1] प्रतिष्ठोऽपि[2] ॥ ३२ ॥
वैडूर्याणां विविधा माणिक्यानां च चित्रिताः स्तम्भाः।
कुड्यानि मसृणानि, रत्नानां हेमखचितानाम् ॥ ३३ ॥

---

१ रिष्टरत्नमय. । २ 'प्रतिष्ठ' नीवके ऊपरके भाग [कुर्सी] को कहते हैं।

परिओ कुट्टिम देसा, सोहंते चन्दकंत-मणिरइया ।
जस्स पुणो विउलाइं, दाराइं हंसगब्भरयणाणं ॥ ३४ ॥
गोमेज्जमणिमयाइं, तहेव जत्थत्थि इन्दकीलाइं ।
एवं चोकट्ठाइं, जोयंते चारुलोहियक्खाणं ॥ ३५ ॥
मारगयाइं, वज्ज,-ग्गलललियाइं जहिं कवाडाइं ।
पञ्चण्हं रयणाणं, भुवणविचित्ताइ तोरणाइं च ॥ ३६ ॥
विम्हयकारी दित्ती, जोई-रयणीय-चन्दयाणं च ।
अंकाणं रयणाणं, सोवाण-परम्परावि वहुरूवा ॥ ३७ ॥
फलिहाणं रयणाणं, चित्तमई हंसमालिया जत्थ ।
हसइव्व जस्स सच्चे, गगणतलुड्डीयमाणहंसेवि ॥ ३८ ॥

छाया.

परितः कुट्टिमदेशाः, शोभन्ते चन्द्रकान्तमणिरचिताः ।
यस्य पुनर्विपुलानि, द्वाराणि हंसगर्भरत्नानाम् ॥ ३४ ॥
गोमेदमाणिमयानि तथैव यत्र सन्ति इन्द्रकीलानि ।
एवं चतुष्काष्ठानि, द्योतन्ते चारुलोहिताक्षाणाम् ॥ ३५ ॥
मारकतानि वज्रार्गल-ललितानि यत्र कपाटानि ।
पञ्चानां रत्नानां, भुवन-विचित्राणि तोरणानि च ॥ ३६ ॥
विस्मयकारी (रिणी) दीप्तिर्ज्योतीरत्नीयचन्द्रकाणां च ।
अङ्कानां रत्नानां, सोपानपरम्पराऽपि वहुरूपा ॥ ३७ ॥
स्फटिकानां रत्नानां चित्रमयी हंसमालिका नित्यम् ।
हसतीव यस्य सत्यान्, गगनतलोड्डीयमानहंसानपि ॥ ३८ ॥

---

१ [चोकट] इति भाषा ।

जम्बूणयमयसुत्त,-प्पोयुज्जलमोत्तियाइ झाड़ाओ ।
मन्दाणिलेरियाओ, सरन्ति छत्तीस रायराइणिया ॥ ३९ ॥
तत्थ सहावं गायग,-थीओ इन्दच्छरा व णच्चन्ति ।
गायंति मिउलरागे, सव्वा गंधव्विणीरूवा ॥ ४० ॥
एवं विविहविणोया, सवणमणोहारिणो ललियललिया ।
होंति, सुणइ तंसव्वं, सो सेट्ठी हंसतूलसयणत्थो ॥ ४१ ॥
तास्सिखणे तहिं तं, कन्दन्तिं पासिऊण अह दासिं ।
पुच्छइ अन्नं एसो,को रागो जो न सुन्दरं लगइ ? ॥ ४२ ॥
सुणिऊण सेट्ठिवयणं, म्हित्ता लच्छीवई तए वयइ ।
गायइ णेसा, रोयइ, कूणियराएण ताडिया दासी ॥ ४३ ॥

छाया.

जाम्बूनदमयसूत्र—प्रोतोज्ज्वलमौक्तिकादिझाटेभ्यः ।
मन्दानिलेरितेभ्यः सरन्ति षट्त्रिंशद्राग-रागिणिकाः ॥ ३९ ॥
तत्र सहावं गायकस्त्रिय इन्द्राप्सरस इव नृत्यन्ति ।
गायन्ति मृदुलरागान् सर्वा गन्धर्वीरूपाः ॥ ४० ॥
एवं विविधविनोदाः, श्रवणमनोहारिणो ललितलालिताः ।
भवन्ति, शृणोति तत्सर्वं स श्रेष्ठी हंसतूलशयनस्थः ॥ ४१ ॥
तस्मिन् क्षणे तत्र तां कन्दन्ती दृष्ट्वाऽथ दासीम् ।
पृच्छत्यन्यामेष को रागो यो न सुन्दरं लगति ॥ ४२ ॥
श्रुत्वा श्रेष्ठिवचनं स्मित्वा लक्ष्मीवती ततो वदति ।
गायति नैषा, रोदिति कूणिकराजेन ताडिता दासी ॥ ४३ ॥

सो अम्हाणं अहिवो, सव्वेसिं मङ्गलाणमिह मूलम् ।
पत्तो भग्गा, तम्हा, तं दट्ठुं आसुगमणिज्जं ॥ ४४ ॥
इय सुणिऊण तयाणिं, सपरियणो सो समुट्ठिओ सेट्ठी ।
उट्ठियमेत्ते तस्सिं, जयझुणिपरिऊरियं गगण ॥ ४५ ॥
अह नाणामणिवज्जग,-रयणालंकाररणियमहुराहिं ।
रुइराहिं अणवरय, ' खमा-खम '—त्तिपउत्तीहिं ॥ ४६ ॥
कामंगणोवमाहिं, ललणाहिं दारदेसपज्जंतं ।
अणुजाओ ओरयइ, सुकुमालगो दिसो पगासंतो ॥ ४७ ॥
चित्तज्झुणिं तमेयं, राया सुणिऊण तक्कणे लग्गो ।
कहमागासे सहसा, अब्भुयणाओ मह सुणिज्जइ मे ॥ ४८ ॥

छाया

सोऽस्माकमधिपः सर्वेषांमङ्गलानामिह मूलम् ।
प्राप्तो भाग्यात्तस्मात्तं द्रष्टुमाशु गमनीयम् ॥ ४४ ॥
इति श्रुत्वा तदानीं स-परिजनः स समुत्थितः श्रेष्ठी ।
उत्थितमात्रे तस्मिन्, जयध्वनिपरिपूरितं गगनम् ॥ ४५ ॥
अथ नानामणिवज्रकरत्नालङ्कार—रणितमधुराभिः ।
रुचिराभिरनवरतं क्षमा-क्षमेऽति प्रयोक्त्रीभि. ॥ ४६ ॥
कामाङ्गनोपमाभि, र्ललनाभिर्द्वारदेशपर्यन्तम् ।
अनुयातोऽवतरति, सुकुमाराङ्गो दिशः प्रकाशयन् ॥ ४७ ॥
चित्रध्वनिं तमेत, राजा श्रुत्वा तर्कणे लग्नः ।
कथमाकाशे सहसा, अद्भुतनादो महान् श्रयते मे ॥ ४८ ॥

किं देवाणं अहवा, गंधव्वाणं जयज्झुणी एसो ।
अस्सुयपुव्वो माणस,-वित्तिं जो मे बला हरइ ॥ ४९ ॥
एव कमेण तम्मि, दिट्ठिपहं आगए महासत्ते ।
विम्हयमत्तो राया, खणमप्पाणंपि विम्हरिउ ॥ ५० ॥
तक्कइ तओ किमेसो, दुमणी अहवा सुहागरो किंवा ?
जलणो परिगयधामा, सणियं सणियं समाजाइ ॥ ५१ ॥
इत्थं जाव विचिंतइ, ताव समीवट्ठियं महासेट्ठिं ।
दट्ठूण सिणेहाउल,-चित्तो जाओ जहोरसं पुत्तं ॥ ५२ ॥
सिवलंगस्स सरीरो,-वरि तस्स णियं करं तओ राया ।
परिवहइ अह सो तं, जाणइ सेट्ठी तुरंगकंकातियं ॥ ५३ ॥

छाया.

किं देवानामथवा, गन्धर्वाणां जयध्वनिरेषः ।
अश्रुतपूर्वो मानस,-वृत्तिं यो मे बलाद् हरति ॥ ४९ ॥
एवं क्रमेण तस्मिन्, दृष्टिपथमागते महासत्त्वे ।
विस्मयमाप्तो राजा, क्षणमात्मानमपि विस्मृत्य ॥ ५० ॥
तर्कयति ततः किमेष द्युमणिरथवा सुधाकरः, किं वा ।
ज्वलनः परिगतधामा, शनैःशनैः समायाति ॥ ५१ ॥
इत्थं यावद्विचिन्तयति, तावत्समीपस्थितं महाश्रेष्ठिनम् ।
दृष्ट्वा स्नेहाकुलचित्तो जातो यथौरसं पुत्रम् ॥ ५२ ॥
सृष्टा[illegible]स्य शरीरोपरि तस्य निजं करं ततो राजा ।
परि[illegible]त्यय[illegible] जानाति श्रेष्ठी तुरङ्गकङ्कातिकाम् ॥ ५३ ॥

१ राजन[illegible] ।

संचिन्तइ सस्सेओ, मिलाणगत्तो सरोयसुकुमालो ।
कोमहदेहं फासइ, रक्खो वग्घो त्रिगो वेसो ॥ ५४ ॥
तारिस-णट्टण-गायण,-सोक्खावसरे किमेयमावडियं ।
सच्चं-भोग-विलासो, संव्वो मिच्छात्ति जं पवयणुत्तं ॥ ५५ ॥
एसो आसी गव्वो, जं मह सरिसो णकोत्रि भुवि लोए ।
सो अज्ज संपणट्ठो, एयं दट्ठूण सासगं उवरि ॥ ५६ ॥
पुव्वे जम्मम्मि मए, सुहाकिरिया कावि णोत्तमायरिया ।
वप्परिणामो दीसइ, जं अम्हाणंपि सासगो राया ॥ ५७ ॥
तं भवभोगविलासं, धिरत्थु मिच्छा किलेसपरिणामं ।
एगस्सोवरि एगो, जस्सिं सामी, कहं सुहं तस्सिं ॥ ५८ ॥

छाया

सञ्चिन्तयति सस्वेदो, म्लानगात्रः सरोज-सुकुमारः ।
को मम देहं स्पृशति, रक्षो, व्याघ्रो, वृको, वैषः ॥ ५४ ॥
तादृशनर्त्तन-गायनसौख्यावसरे किमेतदापतितम्? ।
सत्यं भोगविलासः सर्वो मिथ्येति यत्प्रवचनोक्तम् ॥ ५५ ॥
एष आसीद्गर्वो यन्मम सदृशो न कोऽपि भुवि लोके ।
सोऽद्य सम्प्रणष्ट एतं दृष्ट्वा शासकमुपरि ॥ ५६ ॥
पूर्वस्मिन् जन्मनि मया, शुभाक्रिया काऽपि नोत्तमाऽऽचरिता ।
तत्परिणामो दृश्यते, यदस्माकमपि शासको राजा ॥ ५७ ॥
तद्भवभोगविलासं धिगस्तु मिथ्याक्लेश-परिणामम् ।
एकस्योपर्येको यस्मिन् स्वामी कथं सुखं तस्मिन् ॥ ५८ ॥

तत्थावि जम्म-जराइ,-प्पवलग्गाहाभिघत्थचित्ताणं ।
सुविणेवि ण सम्भव्वइ, जीदाणं सोक्खलेसोवि ॥ ५९ ॥
एवं सो झामाणो, आरोहंतो य भवण-सोवाणं ।
आरुहिय खवग-सेणिं, केवलणाणं उवादीय ॥ ६० ॥

इय वयधारि-घासीलालेण विरइए सिरि लच्छीहरचरिये पुव्वद्धं समत्तं ॥

——ൟ——

अह देवदुंदुहीणं, नाएहिं गगणमाउलं परिओ ।
णच्चा पच्चावट्टो, पुच्छइ राया किमेवंति ॥ ६१ ॥
ता, लच्छीहरसेट्ठी, केवललच्छिं उवत्तवं सज्जो ।
इय लद्धुत्तरमब्भुय-माजाओ वंदिउं तयासन्ने ॥ ६२ ॥

छाया

तत्रापि जन्म-जरादिप्रबलग्राहाभिग्रस्तचित्तानाम् ।
स्वप्नेऽपि न सम्भाव्यते जीवानां सौख्यलेशोऽपि ॥ ५९ ॥
एवं ध्यायन् आरोहंश्च भवनसोपानम् ।
आरुह्य क्षपकश्रेणिं केवलज्ञानमुदपद्यत ॥ ६० ॥

इति व्रतधारि-घासीलालेन विरचिते श्रीलक्ष्मीधरचरिते पूर्वार्द्धं समाप्तम् ।

——ൟ——

अथ देवदुन्दुभीनां, नादैर्गगनमाकुलं परितः ।
ज्ञात्वा प्रत्यावृत्तः, पृच्छति राजा किमेवमिति ॥ ६१ ॥
ततः लक्ष्मीधरश्रेष्ठी, केवललक्ष्मीमुपात्तवान् सद्यः ।
इति लब्धोत्तरमद्भुत-मायातो वन्दितुं तदासन्ने ॥ ६२ ॥

तउ देवप्पियमहिलं, सदोरमुहवत्तियाइ मुणिवेसं ।
धरिय दिसंतं निवई, तं केवलिणं पलोइअ ॥ ६३ ॥
दट्ठूण भावपुण्णो, विहिपुव्वं वंदिऊण सो तीसे ।
परिसाए मज्झत्थो, सच्छरियं धम्मदेसणं सुणइ ॥ ६४ ॥
तत्थ भव्वजणमोक्खयवाणिं, धम्मदेसणमयिं परिसुच्च ।
तद्दसं सुमरिऊण य पुव्वं, विम्हओदहिमुवेइ अपुव्वं ॥६५॥
दिव्वं जोइं कस्सवि, दुद्दरिसं सव्वओ चियं पेक्ख ।
पुच्छइ सविणयमेसो, तं केवलिणं किमेयंति ॥ ६६ ॥
एयं रण्णो पण्हं, सोच्चा सो केवली तया भणइ ।
राया ! कहेमि वुत्तं, पुव्वभवं तं समाहिओ सुणसु ॥ ६७॥

छाया

ततो देवार्पितमखिलं, सदोरमुखवस्त्रिकादिमुनिवेषम् ।
धृत्वा, दिशन्तं नृपतिस्तं केवलिन मालोकत ॥ ६३ ॥
दृष्ट्वा भावपूर्णो, विधिपूर्वं वन्दित्वा स तस्याः (स्या) ।
परिषदो (दि) मध्यस्थः साश्चर्यं धर्मदेशना शृणोति ॥ ६४ ॥
तत्र भव्यजनमोक्षदवाणीं, धर्मदेशनामयीं परिश्रुत्य ।
तद्दशां स्मृत्वा च पूर्वां, विस्मयोदधिमुपैत्यपूर्वम् ॥ ६५ ॥
दिव्यंज्योतिः कस्यापि, दुर्दर्शं सर्वतश्चितं प्रेक्ष्य ।
पृच्छति सविनयमेष तं केवलिनं किमेतादिति ॥ ६६ ॥
एतं राज्ञः प्रश्नं श्रुत्वा स केवली तदा भणति ।
राजन् ! कथयामि वृत्तं पूर्वभवं तत् समाहितः शृणु ॥ ६७ ॥

१ चितम्–व्यासम् ।

पुव्वविदेहे जंबू-दीवे जो पुक्खलावईविजओ।
तत्थऽत्थि परमरम्मं, कणगपुरं णाम दुज्जयं णयरं ॥ ६८ ॥
तम्मि मणोरमभूवो, देवो ललणाललामभूया य।
सीलवई गुणरासी, जिणकुसलो णाम तस्सुओ आसि ॥६९॥
संजायमेत्त एवे,-यम्मि तस्सस्स विस्सपालस्स।
रज्जे फास-मणीणं, विउलतमा पयाडिया खाणी ॥ ७० ॥
पत्ते जोव्वणसमए, अणुरूवाओ गुणोववन्नाओ।
परिणीदवं तुरूवा-पमुहाओ सो य पंचसयकन्ना ॥ ७१ ॥
अह संजवे वयमे, पियरे रज्जाहिसेगसंपन्नो।
वंसाणुगयं सीहा,-सणमारूढो विराएइ ॥ ७२ ॥

छाया

पूर्वविदेहे जम्बूद्वीपे यः पुष्कलावतीविजयः।
तत्रास्ति परमरम्यं, कनकपुरं नाम दुर्जय नगरम् ॥ ६८ ॥
तस्मिन् मनोरमभूपो,-देवी ललना-ललामभूता च।
शीलवती गुणराशि,-जिनकुशलो नाम तत्सुत आसीत् ॥ ६९॥
स जातमात्र एवास्मिन् तस्यास्य विश्वपालस्य।
राज्ये स्पर्शमणीनां विपुलतमा प्रकटिता खनिः ॥ ७० ॥
प्राप्ते यौवनसमये, अनुरूपा गुणोपपन्ना।
परिणीतवान् तुरूपा,-प्रमुखाः स च पञ्चशतकन्याः ॥ ७१ ॥
अथ समयोपगते, पितरि राज्याभिषेक-सम्पन्नः।
वंशानुगतं सिंहासनमारूढो विराजति ॥ ७२ ॥

तयणु कया पुप्फाणं, वुट्ठी वहुसो वि मित्तदेवेण ।
किच्चा दुंदुहिणायं, वदीअ–धन्नो सि जय राया! ॥७३॥
तुह महिमाणं वोत्तुं, ण कहंपि समत्थमाणसा अम्हे ।
जम्मारब्भेव्व जओ, पुण्णाणं ते परंपरा दिट्ठा ॥ ७४ ॥
अब्भुयरूवा दीसइ, अज्जवि एसा तहेव निव ! तुम्हि ।
रज्जाहिसेगमेत्ते, जाए जेणं महोच्छवे सज्जो ॥ ७५ ॥
सयपंचगसीसेहिं, सीसो सीमंधरस्स सुयकित्ती ।
पुप्फुज्जाणे विहरइ, तुहेव संजमविभावियस्सप्पा ॥ ७६ ॥
इय सुणिऊणेव तओ, सहपरिवारो तहिंगओ राया ॥
तं सगणं मुणिरायं, विहिपुव्वं वंदणं कुणइ ॥ ७७ ॥

छाया

तदनु कृता पुष्पाणां वृष्टिर्बहुशोऽपि मित्रदेवेन ।
कृत्वा दुन्दुभिनादमवदत्–धन्योऽसि जय राजन् ! ॥ ७३ ॥
तव महिमानं वक्तुं, न कथमपि समर्थमानसा वयम् ।
जन्माऽऽरभ्यैव यतः, पुण्यानां ते परम्परा दृष्टा ॥ ७४ ॥
अद्भुतरूपा दृश्यते, अद्याप्येषा तथैव नृप! त्वयि ।
राज्याभिषेकमात्रे, जाते येन महोत्सवे सद्यः ॥ ७५ ॥
शतपञ्चकशिष्यैः, शिष्यः सीमन्धरस्य श्रुतकीर्त्तिः ।
पुष्पोद्याने विहरति, तवैव संयमविभावितस्वात्मा ॥ ७६ ॥
इति श्रुत्वैव ततः, सहपरिवारस्तत्र गतो राजा ।
तं सगणं मुनिराजं, विधिपूर्वं वन्दनं करोति ॥ ७७ ॥

अह तम्हा मुणिराया, सुच्चा अमियोवएसमवणीसो ।
पडिवन्नपुण्णरासी, सुविणं संसारमेयमोबुज्झ ॥ ७८ ॥
पुत्तस्स रज्जभारं, समप्प दिक्खं गिहीयवं सवइ ।
तयणु सुवण्ण-कुमारय,-तायत्तीसग-सुरत्तणं लद्धा ॥ ७९ ।
एसो दीसइ अग्गे, जोई-रासी तुए य जो पुट्ठो ।
तस्सस्स पुण्णविसए, किं वत्तव्वं पगासमाणस्स ॥ ८० ॥
जं छम्मासे पुव्वं, देवजुई मंदभावमावेइ ।
तंवि तवं कडममुणा, पुव्वभवे चरमदेहिणा तिव्वं ॥ ८१ ॥
तेणेरिसं सुदिव्वं, जोई एयस्स सव्वओ भाइ ।
चइऊणाओ तीए, दियसे हियसेणसावगस्सऽस्स ॥ ८२ ॥

छाया

अथ तस्मान्मुनिराजात्, श्रुत्वाऽमृतोपदेशमवनीशः ।
प्रतिपन्नपुण्यराशिः, स्वप्नं संसारमेतमवबुध्य ॥ ७८ ॥
पुत्रस्य राज्यभारं समर्प्य दीक्षां गृहीतवान् सपदि ।
तदनु सुवर्णकुमारक-त्रायस्त्रिंशकसुरत्वं लब्ध्वा ॥ ७९ ॥
एष दृश्यतेऽग्रे, ज्योतीराशिस्त्वया च यः पृष्टः ।
तस्यास्य पुण्यविषये, किं वक्तव्यं प्रकाशमानस्य ॥ ८० ॥
यत् षण्मासान् पूर्वं, देवद्युतिर्मन्दभावमाप्नोति ।
तदपि तपः कृतममुना, पूर्वभवे चरम-देहिना तीव्रम् ॥ ८१ ॥
तेनेदृशं सुदिव्यं, ज्योतिस्तस्य सर्वतो भाति ।
च्युत्वाऽयं तृतीये दिवसे हितसेनश्रावकस्यास्य ॥ ८२ ॥

रत्तवईए थीए, समासइस्सइ इमो कुच्छिं ।
जणणा णवमे वरिसे, भयवं वीरा य दिक्खियं किच्चा ८३
अह सिक्खग्गहणट्ठं, कत्तासु गोयमस्स आयत्तं ।
एसो तयणुजहाविहि, पढमं पडिलेहणोचिते काले ॥ ८४ ॥
सह दोरगमुहवत्थिं, पडिलेक्ख तहा मुहे य बंधित्ता ।
कुणमाणो णिग्गंथ–पावयणकिरिया–पसंसाइ ॥ ८५ ॥
धण्णो कयसक्किरिओ, पडिपुन्नप्पा पसत्थझाणेणं ।
खविऊण घाइकम्मं, केवल–णाणं च संपत्ता ॥ ८६ ॥
तक्खणमहसो दुंदुहि,–णायं सुणिऊण कूणियापुट्ठो ।
तुज्झुज्जाणे वीरो, संपत्तो इय वईय तं भयवं ॥ ८७ ॥

छाया

रक्तवत्याः स्त्रियाः समाश्रयिष्यत्ययं कुक्षिम् ।
जननान्नवमे वर्षे, भगवान् वीरश्च दीक्षित कृत्वा ॥ ८३ ॥
अथ शिक्षाग्रहणार्थं कर्त्ताऽमु गौतमस्याऽऽयत्तम् ।
एष तदनु यथाविधि, प्रथमं प्रतिलेखनोचिते काले ॥ ८४ ॥
सह, दोरकमुखवस्त्रं, प्रतिलेख्य तथा मुखे च बध्द्वा ।
कुर्वन् निर्ग्रन्थप्रवचन–क्रियाप्रशंसादिम् ॥ ८५ ॥
धन्यः कृतसत्क्रियः प्रतिपूर्णात्मा प्रशस्त–ध्यानेन ।
क्षपयित्वा घातिकर्म केवलज्ञानं च सम्पत्ता ॥ ८६ ॥
तत्क्षणमथ स दुन्दुभिनादं श्रुत्वा कूणिकाऽऽपृष्टः ।
तवोद्याने वीरः, सम्प्राप्त, इत्यवदत्तं भगवान् ॥ ८७ ॥

हरिसुक्करिसुप्फुल्लो, सपरियणो सो तया सवइ राया ।
सिरिजिणणाह देवं, तओ गओ वंदिउं वीरं ॥ ८८ ॥
भत्तिरसप्पुयचित्तो, दिव्वं तद्धम्मदेसणं सुच्चा ।
लच्छीहरस्स पुव्व, चरियं पुच्छीय केवलिणो॥ ८९ ॥
पुव्वभवे किं दाणं, किं सीलं वा कउं व अन्नंपि ।
जिणराया जं णेणं, केवलणाणं सुहेण सपत्तं ॥ ९० ॥
अह वद्धमाणसामी, वदीय पुव्वे भवे अयं आसि ।
सब्भावरयणभासिय–सीलदयासच्चआइगुणसिंधू ॥ ९१ ॥
एयस्स पुव्वचरियं, सुयपि संसारसागरा भव्व ।
तारेइ आसु तम्हा, रुइरं पुट्ठं तुमं धन्नो ॥ ९२ ॥

छाया

हर्षोत्कर्षोत्फुल्लः, सपरिजनः स तदा सपदि राजा ।
श्रीजिननाथं देवं, ततो गतो वन्दितु वीरम् ॥ ८८ ॥
भक्तिरसाप्लुत–तच्चित्तो, दिव्यां तद्धर्मदेशना श्रुत्वा ।
लक्ष्मीधरस्य पूर्वं, चरितमपृच्छत् केवलिनः ॥ ८९ ॥
पूर्वभवे किं दानं किं शील वा कृतं चान्यदपि ? ।
जिनराज ! यदनेन केवलज्ञानं सुखेन सम्प्राप्तम् ॥ ९० ॥
अथ वर्द्धमानस्वामी, अवदत् पूर्वस्मिन् भवेऽयमासीत् ।
सद्भावरत्नभासित शीलदयासत्यादिगुणसिन्धुः ॥ ९१ ॥
एतस्य पूर्वचरितं, श्रुतमपि संसारसागराद्भव्यान् ।
तारयत्याशु तस्माद्, रुचिरं पृष्टं त्वं धन्यः ॥ ९२ ॥

अंगे विमला णयरी, सुरणयरिं जा हसेइ रिद्धीहिं ।
तीअ निवो धवलीसो, णीइविवेगंबुही धीरो ॥ ९३ ॥
निवकुलललामललणा,-गणललिया तस्स धारिणी देवी ।
सइवो य अयलवुद्धी, जहत्थनामा वितिण्णरिउपामा ॥९४॥
आसी ताए सेट्ठी, भद्दगणो तस्सुओ य जिणपालो ।
सुकुमाल-सुहगरूवो, कयावि णुव्वाहणिच्छए जाए ॥ ९५ ॥
आयरियधम्मघोसं,-तिगमागच्चोवएसमह सोच्चा ।
गिण्हीय तस्सगासा, पच्चक्खाणं परत्थीणं ॥ ९६ ॥
तयणु य पत्ते काले, तस्स विवाहुच्छवो समारद्धो ।
तत्थच्च-रायणियमा, सज्जीभूओ गओ निवं नमिउं ॥९७॥

छाया

अङ्गे विमला नगरी, सुर-नगरीं या हसति ऋद्धिभिः ।
तस्यां नृपो धवलेशो, नीतिविवेकाम्बुधिर्धीरः ॥ ९३ ॥
नृपकुलललामललना-गणललिता तस्य धारिणीदेवी ।
सचिवश्चाचलवुद्धिः, यथार्थनामा वितीर्णरिपुपामा ॥ ९४ ॥
आसीत्तस्यां श्रेष्ठी, भद्रगणस्तत्सुतश्चजिनपालः ।
सुकुमारसुभगरूपः, कदाचनोद्वाहनिश्चये जाते ॥ ९५ ॥
आचार्य-धर्मघोषान्तिकमागत्योपदेशमथ श्रुत्वा ।
अगृह्णात्तत्सकाशात्प्रत्याख्यानं परस्त्रीणाम् ॥ ९६ ॥
तदनु च प्राप्ते काले, तस्य विवाहोत्सवः समारब्धः ।
तत्रत्यराजनियमात्सज्जीभूतो गतो नृपं नन्तुम् ॥ ९७ ॥

तस्स समक्खं राया, णियवुत्तंतं कहेइ एगंते ।
अहमम्हि रायकन्ना, ताओ मम णिस्सुओ मओ तयणु ॥९८॥
जाया हं मायाइ य, पुत्तो जाओत्ति घोसिया परिओ ।
एवं कमेण लालिय,–पालियवेसा य जोव्वणं पत्ता ॥ ९९ ॥
इत्थीणंपि य जोगो, मए कडो पुरिसभावमक्खाउ ।
अज्जावि ण कोवि सरिसो, गुणओ लावण्णओ मए लद्धो१००
अहुणा तुमं समेओ, मम भग्गा एत्थ णाह ! मं दासिं ।
किच्चा, एयं रज्जं, कुण राया तुह, अहं च ते देवी ॥१०१॥
इय सुच्चा जिणपालो, खणमेत्तं विम्हयं गओ पच्छा ।
चिंतइ लद्धं अप्पं, अज्ज मए बंभचेरमेयस्स ॥ १०२ ॥

छाया

तस्य समक्षं राजा, निजवृत्तान्तं कथयत्येकान्ते ।
अहमस्मि राजकन्या, तातो मम निस्सुतो मृतस्ततदनु ॥ ९८ ॥
जाताऽहं, मात्रा च 'पुत्रोजातः' इति घोषिता परितः ।
एवं क्रमेण लालित–पालित–वेषा च यौवनं प्राप्ता ॥ ९९ ॥
स्त्रीणामपि च योगो मया कृतः पुरुषभावमाख्यातुम् ।
अद्यापि न कोऽपि सदृशो गुणतो लावण्यतो मया लब्धः ॥ १००॥
अधुना त्वं समेतो मम भाग्यादत्र नाथ ! मां दासीम् ।
कृत्वा, एतद्राज्यं कुरु, राजा त्वमहं च ते देवी ॥ १०१ ॥
इति श्रुत्वा जिनपालः, क्षणमात्रं विस्मयं गतः पश्चात् ।
चिन्तयति लब्धमल्पमद्य मया ब्रह्मचर्यम्, एतस्य ॥ १०२ ॥

हवइ फलं चे रज्जं, तयाऽहिलस्सस्स का कहा, तम्हा ।
न मए कयावि चज्जं, चिन्तामणिचारु बम्भचेर तु ॥ १०३ ॥
मियतिण्हाब्विव मिच्छा, रज्जसुहं जाउ मे ण रोयइ ।
इय चिंतिऊण एसो, कहिंपि संपट्ठिओ मिसओ ॥ १०४ ॥
भममाणो उज्जाणे, पुप्फक्खे आगओ तया रुइरे ।
तं चिट्ठंतं वणवो, वारइ–मा चिट्ठ एत्थ त्ति ॥ १०५ ॥
जिणपालेणं पुट्ठो, कहसु कहं णेत्थ मित्त ! णिवसामि ।
अह वणपालो णियवण, वुत्तंतं तं समक्खाइ ॥ १०६ ॥
उसहालीणं वुंदं, वाणिज्जारो समागओ घेत्तुं ।
तेसुं रिसहो एगो, रोगी एत्थेव संजाओ ॥ १०७ ॥

छाया

भवति फलं चेद्राज्यं, तदाऽखिलस्यास्यका कथा, तस्मात् ।
न मया कदापि त्याज्यं, चिन्तामणिचारु ब्रह्मचर्य तु ॥ १०३ ॥
मृगतृष्णेव मिथ्या, राज्यसुखं जातु मे न रोचते ।
इति चिन्तयित्वा एष, कुत्रापि संप्रस्थितो मिषतः ॥ १०४ ॥
भ्रमन् उद्याने, पुष्पाख्ये आगतस्तदा रुचिरे ।
तं तिष्ठन्तं वनपो; वारयति-'मा तिष्ठाऽत्रे'-ति ॥ १०५ ॥
जिनपालेन पृष्टः,–कथय कथं नात्र मित्र ! निवसामि ? ।
अथ वनपालो निजवनवृत्तान्तं तं समाख्याति ॥ १०६ ॥
वृषभालीनां वृन्दं, वाणिज्यारः समागतो गृहीत्वा ।
तेषु वृषभ एको रोगी अत्रैव संजातः ॥ १०७ ॥

तस्स रोगोवसमट्ठं, दव्वं दाऊण मे गओ पियरे ।
माप्पिउपमायमरिओ, जक्खो जाओ अणाणकट्ठत्तो ॥ १०८ ॥
एसो एव णिसीहे, उववणमेयं च भस्ससा कुणइ ।
इय सोच्चावि तहिं सो, कुणीअ वास विणिब्भीओ ॥१०९॥
अह रयणीए जक्खो, उज्जाणं भप्पसादक्कइ काउं ।
जिणपालसुद्धसील,-प्पहावओ हरियमेव जायं तु ॥ ११० ॥
अह वणपालो रण्णो, इके दुविट्ठुस्स वासुदेवस्स ।
सविहे सव्वसुयत्त, वद्धीय गच्चा जहावणं हरियं ॥ १११ ॥
तं सुणिऊण तयाणिं, सपरियणो तत्थ आगओ राया ।
तं अच्छरियं दट्ठु, विसीय तस्सिं णियुज्जाणे ॥ ११२ ॥

छाया

तस्य रोगोपशमार्थं, द्रव्यं दत्वा मे गतः पित्रे ।
मात्पितृ प्रमादमृतो यक्षो जातोऽज्ञानकष्टतः ॥ १०८ ॥
एष एव निशीथे, उपवनमेतच्च भस्मसात्करोति ।
इति श्रुत्वापि तत्र सोऽकरोद् वासं विनिर्भीकः ॥ १०९ ॥
अथ रजन्यां यक्ष उद्यानं भस्माऽऽरभते कर्तुम् ।
जिनपालशुद्धशीलप्रभावतो हरितमेव जातं तु ॥ ११० ॥
अथ वनपालो राज्ञो द्विविष्टपस्य वासुदेवस्य ।
सविधे सर्वमुदन्त, म दद् न वा यथा वनं हरितम् ॥ १११ ॥
तच्छ्रुत्वा तदानीं सपरिजनस्तत्रागतो राजा ।
तदाश्चर्यं दृष्ट्वा प्रविशत्तस्मिन् निजोद्याने ॥ ११२ ॥

हरियाइं पन्नाइं, रुक्खाणं पासगच्छिहारीइं ।
कइयालोयइ चइओ, पुप्फाइं ललियललियाइं ॥ ११३ ॥
गुंजब्भमरालीणं, सुणइ कइं महुरगाणलीलं सो ।
कइयह कूयक्कोइल–कुलकलणाये च विम्हयत्थिमिओ ॥११४
मोरालिकूइयाइं, तहा कइं सवणरंधरम्माइं ।
जिग्घइ कइं च जाई,–केयग-चंपाइपुप्फ–सोरब्भं ॥ ११५ ॥
को सो केरिसगुणवं, अम्हाणं भग्गओ इहोवेओ ।
जयणुग्गहाइणं मे, एरिसम्राभाइ उज्जाणं ॥ ११६ ॥
इय सोयंतो राया, तं जिणपालं णियं घरं णेसी ।
भासीअ च किं कंखसि, मित्तग ! हं तं तुहं दाहं ॥ ११७ ॥

छाया

हरितानि पर्णानि, वृक्षाणां दर्शकाक्षिहारीणि ।
क्वचिदालोकते चकितः पुष्पाणि ललितललितानि ॥ ११३ ॥
गुञ्जद्भ्रमरालीनां शृणोति क्वचिन्मधुरगानलीलां सः ।
क्वचिदथ कूजत्कोकिलकुलकलनादे च विस्मयस्तिमितः ॥ ११४ ॥
मयूरालि–कूजितानि तथा क्वचिच्छ्रवणरन्ध्ररम्याणि ।
जिघ्रति क्वचिच्च जाती-केतक-चम्पादि-पुष्पसौरभ्यम् ॥ ११५ ॥
कोऽसौ कीदृग्गुणवान्, अस्माकं भाग्यत इहोपेतः ।
यदनुग्रहादिदं मे ईदृशमाभाति उद्यानम् ॥ ११६ ॥
इति शोचन् राजा तं जिनपालं निजं गृहमनैषीत् ।
अभाषत च किं काङ्क्षसि मित्रक ? अहं तत्तुभ्यं दास्यामि ॥११७॥

सुर-तरु-तुल्लो धम्मो, पुण्णवला णिम्मलो मए लद्धो ।
ता नरवालग ! लोए, वत्थु समत्तं ममाहीणं ॥ ११८ ॥
इय भणिएणवि भूओ, संजलिबन्धेन पत्थिओ रन्ना ।
रसवइयासम्पेक्खण,-कज्जभरं तस्य गिण्हीअ ॥ ११९ ॥
रसवइयाए सेसं, अन्नं दाहं जहिच्छियं निच्चं ।
तम्मिण मे पडिबन्धो, हवउ कयावि-त्ति णियमेणं ॥१२०॥
अह सो सेसण्णेहिं पडिलाभंतो रसा सुपत्ताणं ।
साहम्मियपरिपोसण,-परायणो आसि जिणवालो ॥१२१॥
कुणमाणो सामाइय,-पोसहछक्कायपालणप्पभिइं ।
अणुकंपंतो पंगुं भिक्खुमणाहं तहा सयलमंधं ॥ १२२ ॥

छाया

सुरतरुतुल्यो धर्मः पुण्यबलान्निर्मलो मयालब्धः ।
ततो नरपालक ! लोके वस्तु समस्तं ममाधीनम् ॥ ११८ ॥
इति भणितेनापि भूय: साञ्जलिबन्धेन प्रार्थितो राज्ञा ।
रसवतिकासम्प्रेक्षणकार्यभारं तस्याऽगृह्णात् ॥ ११९ ॥
रसवत्याः शेषमन्नं, दास्यामि यथेष्टं नित्यम् ।
तस्मिन् न मे प्रतिबन्धो भवतु कदापीति नियमेन ॥ १२० ॥
अथ स शेषान्नैः प्रतिलाभयन् रसात्सुपात्राणाम् ।
साधर्म्मिकपरिपोषणपरायण आसीज्जिनपालः ॥ १२१ ॥
कुर्वन् सामायिक-पौषध षट्कायपालनप्रभृति ।
अनुकम्पयन् पङ्गुं, भिक्षुमनाथं तथा सकलमन्धम् ॥ १२२ ॥

१ सप्तम्यर्थसामान्ये षष्ठी

असरणसरणो कायर,–दीणावणतप्परो दयागारो ।
सव्वेसिं हियगारी, सुहगारी पत्थगारी य ॥ १२३ ॥
निम्मलभावा धम्मं,काऊणं सो विसुद्धमरणेणं ।
मच्चा तीए सग्गे, जाओ देवो महिड्ढिओ तयणु ॥ २४ ॥
चइऊणं ता सग्गा, कुसले णयेर सुकंतदेसम्मि ।
पुव्वविदेहे अक्खय,–णिवस्स देवीअ कुच्छिसंजाओ ॥ २५॥
तप्पियरो भवदेवं, किच्चा णामं महोच्छवा तस्स ।
पत्ते जोव्वण,-समए, पाणिग्गहणं कराविअ ॥ २६ ॥
अक्खयराये रज्जं चिच्चा पव्वज्ज मोक्खमावण्णे ।
भवदेवो णियरज्जे, सव्वत्थाऽमारिघोसणं कयवं ॥ १२७॥

छाया

अशरण–शरणः कातर-दीनावनतत्परो दयागारः ।
सर्वेषां हितकारी, सुखकारी पथ्यकारी च ॥ १२३ ॥
निर्म्मलभावाद्धर्मं, कृत्वा स विशुद्धमरणेन ।
मृत्वा तृतीये स्वर्गे, जातो देवो महर्द्धिकस्तदनु ॥ १२४ ॥
च्युत्वा तस्मात्स्वर्गात्, कुशले नगरे सुकान्तदेशे ।
पूर्वविदेहे अक्षय; नृपस्य देव्याः कुक्षिसंजातः ॥ १२५ ॥
तत्पिता भवदेवं, कृत्वा नाम महोत्सवात्तस्य ।
प्राप्ते यौवनसमये, पाणिग्रहणमकारयत् ॥ १२६ ॥
अक्षयराजे राज्यं त्यक्त्वा प्रव्रज्य मोक्षमापन्ने ।
भवदेवो निजराज्ये सर्वत्राऽमारिघोषणां कृतवान् ॥ १२७ ॥

णाइदयासंपन्ने, रज्जे पुत्तं च सव्वसोहड्ढे ।
महचंदं संठाविय, पव्वइओ तिव्वभावेणं ॥ १२८ ॥
सेवणया वीसाणं, ठाणाणं सोपुणो पुणो तयणु ।
ठाणगवासित्तणमा,–राहिय सव्वट्ठसिद्धगो जाओ ॥ १२९ ॥
तम्हा चइऊणेसो, हवीअ लच्छीहराभिहो सेट्ठी ।
जीवाण सति दाणा, अह सुहओ केवली जाओ ॥ १३० ॥
धणतेरसी-तिहीए, मईउ भावी दिणत्तिगं पुव्वं ।
सिद्धो बुद्धो मुत्तो, अक्खयसिवसोक्खरासिसंपन्नो ॥ १३१॥
इय सोच्चा सो राया, फुल्लमुहो हरिसगग्गरो नम्मो ।
बद्धंजली सविणओ, भगवंतं थुणिउमारभीअ तओ ॥ १३२ ॥

छाया

नीतिदयासम्पन्ने, राज्ये पुत्रं च सर्वशोभाढ्ये ।
महाचन्द्रं संस्थाप्य. प्रव्रजितस्तीव्रभावेन ॥ १२८ ॥
सेवनया विंशतेः स्थानानां स पुनः पुनस्तदनु ।
स्थानकवासित्वमाराध्य सर्वार्थसिद्धको जातः ॥ १२९ ॥
तस्माच्च्युत्वा एषोऽभवल्लक्ष्मीधराभिधः श्रेष्ठी ।
जीवानां शान्तिदानादथ सुखतः केवली जातः ॥ १३० ॥
धनत्रयोदशीतिथ्यां, मत्तो भावी दिनत्रिकं पूर्वम् ।
सिद्धो बुद्धो मुक्तोऽक्षयशिवसौख्यराशिसम्पन्न. ॥ १३१ ॥
इति श्रुत्वा स राजा, फुल्लमुखो हर्षगद्गदो नम्रः ।
बद्धाञ्जलिः सविनयो; भगवन्तं स्तोतुमारभत ततः ॥ १३२ ॥

भव्वा हवंति भवदुत्तिसुहारसन्नू,
नाणंवुही ! जणणकोडिसयाज्जियाणि ।
कम्माइं तक्खणमहो ! विणिद्धूय मुक्का,
सुज्जायवे लसइ कत्थ तमोवगासो ॥ १३३ ॥
रागी य पच्छिमरओ तवणो भमत्तो,
कत्थऽत्थवं दिणमणी य विकत्तणोऽत्थि ।
तत्ताव्विरुद्धगुणवं जिणराय ? कत्थ,
तुं भासि तब्भवभया रुइपुञ्ज ! रक्ख ॥ १३४ ॥
णेगंतवायमयमन्दरओ पमच्छ,
नाणंवुहिं परमतत्तसुहं च तम्हा ।

छाया

भव्या भवन्ति भवदुक्तिसुधारसज्ञा–,
ज्ञानाम्बुधे ! जननकोटिशतार्जितानि ।
कर्माणि तत्क्षणमहो ? विनिधूय मुक्ताः,
सूर्यातपे लसति [सति] कुत्र तमोऽवकाशः ॥ १३३
रागी च पश्चिमरतस्तपनो भ्रमार्त्तः,
कुत्रास्तवान् दिनमणिश्च विकर्त्तनोऽस्ति ।
तत्तद्विरुद्धगुणवान् जिनराज कुत्र,
त्वं भासि तद्भवभयाद् रुचिपुञ्ज ! रक्ष ॥ १३४ ॥
नैकान्तवादमयमन्दरतः प्रमथ्य,
ज्ञानाम्बुधिं परमतत्त्वसुधां च तस्मात् ।

घेत्तूण णाह ! भुवणे वियरीअ जं तं,
तेणाऽमरत्तमाहिला भविणो लहीअ ॥ १३५ ॥
तुं भाइणो मइमओ जिणणाह ! णिच्चं,
जोई-मयं भवभयापहमेगरूवं ।
नूणं जरामरण-घोर-पिसायकिन्ना,
संसारमोहरयणी विरइं पजाइ ॥ १३६ ॥
भामन्ति जे च्चिय भवे दढकम्मरज्जु-
बद्धा अवीह सययं भाविणो समन्ता ।
ते ते किवं समहिगच्च विमुक्कबन्धा,
चित्तं जवा अयलतामुवजान्ति देव! ॥ १३७ ॥

छाया

आदाय नाथ भुवने व्यतरो यतस्त्वं,
तेनाऽमरत्वमखिला भाविनोऽलभन्त ॥ १३५ ॥
त्वां ध्यायिनो मतिमतो जिननाथ नित्यं,
ज्योतिर्मयं भवभयापहमेकरूपम् ।
नूनं जरामरणघोरपिशाचकीर्णा,
संसारमोहरजनी विरतिं प्रयाति ॥ १३६ ॥
भ्राम्यन्ति ये किल भवे दृढकर्मरज्जु,-
बद्धा अपीह सततं भाविनः समन्तात् ।
ते, ते कृपां समधिगत्य विमुक्तबन्धा,
क्षिप्रं जवादचलतामुपयन्ति देव ॥ १३७ ॥

१ गम्यादीनामुपसंख्यान-णिनि-विकल्प-पक्षे, इति मत्वर्थान्त-योग द्वितीयाऽत्र

मिच्छत्तकद्दमणिमज्जणओ भवंतं,
जे णो सरन्ति किवणा इह दीणबंधुं ।
कप्पद्दुमं समवहाय करीरभाओ,
जाए भवप्पवयणे नहि ते वि सोच्चा ॥ १३८ ॥
जेनाणसप्पहपरिक्खलिया पडंति,
दीणा पहू ! विउल दुग्गइ गड्डमज्झे ।
जाणामि ते असरणे सहसुज्जिहीर्षु,
तं णाह ! धम्मरहसारहियं गओसि ॥ १३९ ॥

छाया

मिथ्यात्वकर्दमनिमज्जनतो भवन्तं,
ये नो स्मरन्ति कृपणा इह दीनबन्धुम् ।
कल्पद्रुमं समपहाय करीरभाजो,
जाते भवत्प्रवचने नहि तेऽपि शोच्याः ॥ १३८ ॥
ये ज्ञानसत्पथपरिस्खलिताः पतन्ति,
दीनाः प्रभो ! विपुल–दुर्गति–गर्त्तमध्ये ।
जानामि तानशरणान् सहसोज्जिहीर्षु-,
स्त्वं नाथ ! धर्मरथसारथितां गतोऽसि ॥ १३९ ॥

सम्मत्तमेच्च भयवं ! विमलालवालं,
सब्भावणा सलिलमप्पवलंदसोहि ।
तित्थंगरो तुह सि कप्पतरू समुत्थोः
धन्ना रसा जमुवएसफलं सयन्ते ॥ १४० ॥
एवं कूणियराओ, थुणिऊणं वद्धमाणजिणणाहं ।
वंदित्ता विहिपुव्वं, सपरियणो पट्टिओ भवणं ॥ १४१ ॥
लच्छीहरस्स चरियं, केवलिणो जो पढइ एयं सो ।
इह पावइ अहिलासियं, सग्ग-पवग्गं च परलोए ॥ १४२ ॥
पुज्ज-सिरिलाल-पट्टे, विराइयं लसियसव्वगुणरासिं ।
पुज्ज जवाहिरलालं, घासीलालेण सेवमाणेणं ॥ १४३ ॥

छाया

सम्यक्त्वमेत्य भगवन् विमलालवालं,
सद्भावना-सलिलमात्मकलम्बशोभि ।
तीर्थङ्करस्त्वमसि कल्पतरुः समुत्थो,-
धन्या रसाद् यदुपदेश-फलं स्वदन्ते ॥ १४० ॥
एवं कूणिकराजः, स्तुत्वा वर्द्धमानजिननाथम् ।
वन्दित्वा विधिपूर्वं, सपरिजनः प्रस्थितो भवनम् ॥ १४१ ॥
लक्ष्मीधरस्य चरितं, केवलिनो यः पठत्येतत् स. ।
इह प्राप्नोत्यभिलषितं, स्वर्गा-ऽपवर्गं च परलोके ॥ १४२ ॥
पूज्य श्रीलालपट्टे, विराजितं लसितसर्वगुणराशिम् ।
पूज्य-जवाहिरलालं, घासीलालेन सेवमानेन ॥ १४३ ॥

मिच्छत्तकद्दमणिमज्जणओ भवंतं,
जे णो सरन्ति किवणा इह दीणबंधुं ।
कप्पद्दुमं समवहाय करीरभाओ,
जाए भवप्पवयणे नहि ते वि सोच्चा ॥ १३८ ॥
जेनाणसप्पहपरिक्खलिया पडंति,
दीणा पहू ! विउल दुग्गइ गड्डमज्झे ।
जाणामि ते असरणे सहसुज्जिहीर्सु,
तं णाह ! धम्मरहसारहियं गओसि ॥ १३९ ॥

छाया

मिथ्यात्वकर्दमनिमज्जनतो भवन्तं,
ये नो स्मरन्ति कृपणा इह दीनबन्धुम् ।
कल्पद्रुमं समपहाय करीरभाजो,
जाते भवत्प्रवचने नहि तेऽपि शोच्याः ॥ १३८ ॥
ये ज्ञानसत्पथपरिस्खलिताः पतन्ति,
दीनाः प्रभो ! विपुल-दुर्गति-गर्त्तमध्ये ।
जानामि तानशरणान् सहसोज्जिहीर्षु-,
स्त्वं नाथ ! धर्म्मरथसारथितां गतोऽसि ॥ १३९ ॥

सम्मत्तमेच्च भयवं ! विमलालवालं,

सब्भावणा सलिलमप्पवलंदसोहि ।

तित्थंगरो तुह सि कप्पतरू समुथो;

धन्ना रसा जमुवएसफलं सयन्ते ॥ १४० ॥

एवं कूणियराओ, थुणिऊणं वद्धमाणजिणणाहं ।

वंदित्ता विहिपुव्वं, सपरियणो पट्ठिओ भवणं ॥ १४१ ॥

लच्छीहरस्स चरियं, केवलिणो जो पढइ एयं सो ।

इह पावइ अहिलासियं, सग्ग-पवग्गं च परलोए ॥ १४२ ॥

पुज्ज-सिरिलाल-पट्टे, विराइयं लसियसव्वगुणरासिं ।

पुज्ज जवाहिरलालं, घासीलालेण सेवमाणेणं ॥ १४३ ॥

छाया

सम्यक्त्वमेत्य भगवन् विमलालवालं,

सद्भावना-सलिलमात्मकलम्वशोभि ।

तीर्थङ्करस्त्वमसि कल्पतरुः समुत्थो,-

धन्या रसाद् यदुपदेश–फलं स्वदन्ते ॥ १४० ॥

एवं कूणिकराजः, स्तुत्वा वर्द्धमानजिननाथम् ।

वन्दित्वा विधिपूर्व, सपरिजनः प्रस्थितो भवनम् ॥ १४१ ॥

लक्ष्मीधरस्य चरितं, केवलिनो यः पठत्येतत् सः ।

इह प्राप्नोत्यभिलषितं, स्वर्गा–ऽपवर्गो च परलोके ॥ १४२ ॥

पूज्य श्रीलालपट्टे, विराजितं लसितसर्वगुणराशिम् ।

पूज्य–जवाहिरलालं, घासीलालेन सेवमानेन ॥ १४३ ॥

पिय-दढधम्मस्स उदय,पुर-सिरि-संघस्स साहुमग्गिस्स ।
भत्तिरसं संपेक्खिय,ममए रइयं इणं सुलच्छीयं ॥ १४४ ॥

इय वयधारि घासीलालेण विरइयं
सिरिलच्छीहर–चरियं समत्तं ॥

छाया

प्रिय–दृढधर्म्मस्य–उदयपुरश्रीसंघस्य साधुमार्गिणः ।
भक्तिरसं सम्प्रेक्ष्य, मया रचित मिदं सुलक्ष्मीदम् ॥ १४४ ॥

इति व्रतधारि-घासीलालेन विरचितं
श्रीलक्ष्मीधरचरितं समाप्तम् ।

ॐ

नमः सिद्धेभ्यः

गुर्वावली

और

मंगलाष्टक ।

जिनको

काशी निवासी बद्रीप्रसाद जैन ने

मैनेजर द्वीपचन्द्राचार्य्य द्वारा

काशी केशव प्रेस में छपाया.

वीर निर्वाण सम्वत् २४३६ ईस्वी सन् १९१०

प्रथम बार १०००] [न्योछावर तीन पैसे

ॐ

नमः सिद्धेभ्यः

अथ गुर्वावली लिख्यते ।

गैर ।

जैवंत दयावंत सुगुरु देव हमारे ।
संसार विषमखारसों जिनभक्त उधारे ॥ टेक ॥
जिनवीरके पीछैं यहां निर्वानके थानी ।
बासठ वरषमें तीन भये केवलज्ञानी ॥
फिर सौ वरषमें पांच श्रुतकेवली भये ।
सर्वांग द्वादशांगके उमंग रस लये ॥ जैवंत ॥ १ ॥
तिसबाद वर्ष एक शतक और तिरासी ।
इसमें हुये दशपूर्व ग्यार अंगके भाषी ॥
ग्यारै महामुनीश ज्ञानदानके दाता ।
गुरुदेव सोइ देंहिगे भविवृन्दको साता ॥ जैवंत ॥२॥
तिसबाद वर्ष दोय शतक बीसके माहीं ।
मुनि पंच ग्यार अंगके पाठी हुये यांहीं ॥
तिसबाद वरष एकसौ अठारमें जानी ।
मुनि चार हुये एक आचारांगके ज्ञानी ॥ जैवंत ॥३॥

तिसबाद हुये हैं जु सुगुर पूर्वके धारक ।
करुणानिधान भक्तको भवसिंधु उधारक ॥
करकंजतैं गुरु मेरे ऊपर छांह कीजिये ।
दुखद्वंदको निकंदके आनन्द दीजिये ॥ जैवंत ॥४॥
जिनवीरके पीछेसों वरष छहसौ तिरासी ।
तब तक रहे इक अंगके गुरु देव अभ्यासी ॥
तिसबाद कोइ फिर न हुये अंगके धारी ।
पर होते भये महा सुविद्वान उदारी ॥ जैवंत ॥५॥
जिनसौं रहा इस कालमें जिनधर्मका साका ।
रोपा है सात भंगका अभंग पताका ॥
गुरुदेव नयंधरको आदि दे बड़े नामी ।
निरग्रंथ जैनपंथके गुरुदेव जो स्वामी ॥ जैवंत ॥६॥
भाषों कहां लो नाम बड़ी बार लगैगा ।
परनाम करों जिस्से वेड़ा पार लगैगा ॥
जिसमेंसे कछुइक नाम सूत्रकारके कहों ।
जिन नामके प्रभावसे परभावको दहों ॥ जैवंत ॥७॥

तत्वार्थसूत्र नामि उमास्वामि किया है ।
गुरुदेवने संछेपसे क्या काम किया है ॥
जिसमें अपार अर्थने विश्राम किया है ।
बुधवृंद जिसे ओरसे परनाम किया है ॥ जैवंत ॥८॥
वह सूत्र है इस कालमें जिनपंथकी पूंजी ।
सम्यक्त्व ज्ञानभाव है जिस सूत्रकी कूंजी ॥
लड़ते हैं उसी सूत्रसों परबादके मूंजी ।
फिर हारके हट जाते हैं इक पक्षके लूंजी ॥ जैवंत ॥९॥
स्वामी समंतभद्र महाभाष्य रचा है ।
सर्वंग सात भंगका उमंग मचा है ॥
परबादियोंका सर्व गर्व जिस्से पचा है ।
निर्वान सदनका सोई सोपान जचा है॥जैवंत॥१०॥
अकलंक देव राजवारतीक बनाया ।
परमान नय निछेपसों सब बस्तु बताया ॥
इश्लोक वारतीक विद्यानंदजी मंडा ।
गुरुदेवने जड़मूलसों पाखंडको खंड़ा ॥ जैवंत ॥११॥

गुरु पूज्यपादजी हुये मरजादके धोरी ।
सर्वार्थसिद्धि सूत्रकी टीका जिन्हों जोरी ॥
जिसके लखेसों फिर न रहे चित्तमें भरम ।
भविजीवको भाषै है सुपरभावका मरम ॥ जैवंत ॥१२॥
धरसेन गुरूजी हरो भवि वृंदकी वीथा ।
अग्रायणीय पूर्वमें कुछ ज्ञान जिन्हें था ॥
तिनके हुये दो शिष्य पुष्पदंत भुजबली ।
धवलादिकोंका सूत्र किया जिस्से मग चली । जै०।१३
गुरु औरने उस सूत्रका सब अर्थ लहा है ।
तिन धवल महाधवल जयसुधवल कहा है ॥
गुरु नेमिचंद्रजी हुये धवलादिके पाठी ।
सिद्धांतके चक्रीशकी पदवी जिन्हों गांठी ॥ जै०॥१४॥
तिन तीनोंही सिद्धांतके अनुसारसों प्यारे ।
गोमट्टसार आदि सुसिद्धांत उचारे ॥
यह पहिले सुसिद्धांतका विरतंत कहा है ।
अब और सुनो भावसों जो भेद महा है ॥ जै० ॥१५॥

गुणधर मुनीशने पढ़ाथा तीजा पराभृत ।
ज्ञानप्रवाद पूर्वमें जो भेद है आश्रित ॥
गुरु हस्तिनागजीने सोई जिनसो लहा है ।
फिर तिनसों यतीनायकनें मूल गहा है ॥ जै०॥१६॥
तिन चूर्णिका स्वरूप तिस्से सूत्र बनाया ।
परमान छै हजार यों सिद्धांतमें गाया ॥
तिसका किया उद्धरण समुद्धरण जु टीका ।
बारह हजारके प्रमान ज्ञानकी टीका ॥ जै० ॥१७॥
तिसहीमे रचा कुंदकुंदजीने सुशासन ।
जो आत्मीक पर्म धर्मका है प्रकाशन ॥
पंचास्तिकाय समयसार सारप्रवचन ।
इत्यादि सुसिद्धांत स्यादवादका रचन ॥ जै० ॥१८॥
सम्यक्त्वज्ञान दर्श सुचारित्र अनूपा ।
गुरुदेवने अध्यात्मीक धर्म निरूपा ॥
गुरदेव अमीइंदुने तिनकी करी टीका ॥
झरता है निजानंद अमीवृंद सरीका ॥ जै०॥ १९॥
चरनानुवेदभेदके निवेदके करता ।

गुरुदेव जे भये हैं पापतापके हरता ॥
श्रीबट्टकेर देवजी वसुनंदजी चक्री।
निरग्रंथ ग्रंथ पंथके निरग्रंथके शक्री ॥ जैवंत ॥२०॥
योगींद्रदेवने रचा परमात्मा प्रकाश।
शुभचंद्रने किया है ज्ञानआरणौ विकाश ॥
की पद्मनंदजीने पद्मनंदिपचीसी।
शिवकोटिने आराधनासुसार रचीसी ॥ जैवंत ॥२१॥
दोसंध तीनसंध चारसंध पांचसंध।
षटसंध सातसंधलो गुरू रचा प्रबंध ॥
गुरु देवनंदिने किया जिनेंद्रव्याकरन।
जिस्से हुआ परवादियोंके मानका हरन ॥जैवंत॥२२॥
गुरुदेवने रची है रुचिर जैनसंहिता।
वरनाश्रमादिकी क्रिया कहैं है संहिता ॥
वसुनंदि वीरनंदि यशोनंदि संहिता।
इत्यादि बनी हैं दशों परकार संहिता ॥ २३ ॥
परमेयकमलमारतंडके हुये कर्ता।
माणिक्यनंदि देव नयप्रमाणके भर्ता ॥

जैवंत सिद्धसेंन सुगुरु देव दिवाकर ।
जै वादिसिंह देवसिंह जैति यशोधर ॥ जैवंत ॥२४॥
श्रीदत्त काण भिक्षु और पात्रकेसरी ।
श्रीवज्रसूर महासेन श्रीप्रभाकरी ॥
श्रीजटाचार बीरसेन महासेन हैं ।
जै सेंन शिरीपाल मुझे कामधेन हैं ॥ जैवंत ॥२५॥
इन एक एक गुरुने जो ग्रंथ बनाया ।
कहि कौन सके नाम कोइ पार न पाया ॥
जिनसेंन गुरूने महापुराण रचा है ।
मरजाद क्रियाकांडका सब भेद खचा है ॥ २६ ॥
गुणभद्र गुरूने रचा उत्तर पुराणको ।
सो देव सुगुरु देवजी कल्यानथानको ॥
रविसेंन गुरूजीने रचा रामका पुरान ।
जो मोह तिमर भाननेको भानुके समान ॥ जै० ॥२७॥
पुन्नाटगणविषैं हुये जिनसेंन दूसरे[1] ।
हरिवंशको बनाके दास आसको भरे ॥

१ येदुसरे जिनसेन नहीं है किंतु आदिपुराणके कर्ता ही है ।

इत्यादि जे वसुवीस सुगुण मूलके धारी ।
निर्ग्रंथ हुये हैं गुरू जिनग्रंथके कारी ॥ जैवंत ॥२८॥
वंदौ तिन्हें मुनि जे हुये कवि काव्य करैया ।
वंदामि गमक साधु जो टीकाके धरैया ॥
वादी नमो मुनिवादमें परवाद हरैया ।
गुरु वागमीकको नमो उपदेशभरैया ॥ जैवंत ॥२९॥
ये नाम सुगुरु देवका कल्याण करै है ।
भवि वृंदका ततकालही दुखद्वंद हरै है ॥
धनधान्य ऋद्धि सिद्धि नवो निद्धि भरै है ।
आनंदकंद देहि सबी विघ्न टरै है ॥ जैवंत ॥ ३० ॥
इह कंठमें धारै जो सुगुरु नामकी माला ।
परतीतिसों उरप्रीतिसों ध्यावै जु त्रिकाला ॥
यह लोकका सुख भोग सो सुर लोकमें जावै ।
नरलोकमें फिर आयके निरवानको पावै ॥ ३१ ॥
जैवंत दयावंत सुगुरु देव हमारे ।
संसार विषम खारसों जिन भक्त उधारे ॥
❀ इति श्रीगुरुपरिपाटी समाप्त ❀

अथ मंगलाष्टक लिख्यते ।

कवित्त ३१ मात्रा ।

संघसहित श्रीकुंदकुंद गुरु, वंदन हेत गए गिरनार ।
वाद परो तहँ संशयमतिसों, साक्षी वदी अंबिकाकार ॥
सत्य पंथ निरग्रंथ दिगम्बर, कही सुरी तहँ प्रघट पुकार ।
सो गुरुदेव वसो उर मेरे, विघ्न हरण मंगल करतार ॥ १ ॥
श्रीअकलंक देव मुनिवरसों, वाद रच्यो जहँ बौद्ध विचार ।
तारा देवी घटमें थापी, पटके ओट करत उच्चार ॥
जीत्योस्यादवाद बलमुनिवर, बौद्धवेधितारामदटार । सो.॥२॥
स्वामि संमतभद्र मुनिवरसों, शिवकोटी हठ कियो अपार ।
वंदन करो शंभुपिंडीको, तब गुरु रच्यो स्वयंभू भार ॥
वंदन करत पिंडिका फाटी, प्रघटभये जिनचंद्र उदार । सो. ॥३॥
श्रीमंत मानतुंग मुनिवरपर, भूप कोप जब कियो गँवार ।
बंद कियो तालेमें तबहीं, भक्तामर गुरु रच्यो उदार ॥
चक्रेश्वरी प्रघट तबह्वैके, बंधन काट कियो जयकार । सो.॥४॥
श्रीमतवादिराज मुनिवरसों, कह्यो कुष्ट भूपति जिहँवार ।

श्रावक सेठ कह्यो तिहँ अवसर, मेरे गुरु कंचनतन धार ॥
तवहीं एकी भावरच्यो गुरु, तन सुवर्णदुति भयो अपार। सो.।५।
श्रीमत कुमुदचंद्र मुनिवरसों, वादपरो जहँ सभामझार।
तवही श्रीकल्यानधाम थुति, श्रीगुरु रचनारची अपार॥
तव प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथकी, प्रघट भई त्रिभुवन जयकार। सो.।६।
श्रीमत विद्यानंदि जवै, श्रीदेवागम थुति सुनी सुधार।
अर्थहेत पहुंचो जिनमंदिर, मिलो अर्थ तिहँ सुखदातार॥
तवव्रत परम दिगम्बरको धर, परमतको कीनो परिहार। सो.।७
श्रीमत अभयचंद्र गुरुसों जब, दिल्लीपति इमिकही पुकार।
कै तुम मोहि दिखावहु अतिशय, कै पकरो मेरोमतसार॥
तव गुरु प्रघट अलौकिक अतिशय, तुरत हरो ताकोमदभार
सो गुरुदेव वसो उर मेरे, विघ्न हरण मंगल करतार॥ ८॥

दोहा।

विघन हरण मंगल करण, वांछित फल दातार।
वृंदावन अष्टक रच्यो, करो कंठ सुखकार॥

इति मंगलाष्टक समाप्त।